कार्यवाही विवरण

मेसर्स एन.टी.पी.सी. लिमिटेड, ग्राम–सीपत, तहसील–सीपत, जिला–बिलासपुर (छ.ग.) में प्रस्तावित Ultra Super Critical Technology Project (Stage-III) –1x800 MW के पर्यावरणीय स्वीकृति बाबत् दिनांक 11/12/2023 को दोपहर 12:00 बजे स्थल–ग्राम–सीपत स्थित शासकीय मदनलाल शुक्ल महाविद्यालय, के खेल मैदान, तहसील–सीपत, जिला–बिलासपुर (छ.ग.) में आयोजित लोक सुनवाई का कार्यवाही विवरण :–

भारत शासन, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली की, ई.आई.ए. नोटिफिकेशन 14.09.2006 (यथा संशोधित) के तहत् सर्वसंबंधित को सूचित किया जाता है कि **मेसर्स एन.टी.पी.सी. लिमिटेड, ग्राम–सीपत, तहसील–सीपत जिला–बिलासपुर (छ.ग.) में प्रस्तावित Ultra Super Critical Technology Project (Stage-III) –1x800 MW** के पर्यावरणीय स्वीकृति हेतु लोक सुनवाई बाबत् छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल में आवेदन किया गया है। उक्त प्रस्तावित परियोजना के लिए दिनांक 27/09/2023 को नियत लोक सुनवाई अपरिहार्य कारणों से स्थगित की गई थी जो पुनः दिनांक 11/12/2023 को दोपहर 12:00 बजे स्थल– ग्राम–सीपत स्थित शासकीय मदनलाल शुक्ल महाविद्यालय, के खेल मैदान, तहसील–सीपत, जिला–बिलासपुर (छ.ग.) में नियत है। लोक सुनवाई हेतु उद्योग के आवेदन के परिपेक्ष्य में स्थानीय समाचार पत्र हरिभूमि, बिलासपुर में दिनांक 25/11/2023 तथा राष्ट्रीय समाचार पत्र हिन्दुस्तान टाईम्स, नई दिल्ली के मुख्य संस्करण में दिनांक 25/11/2023 को लोक सुनवाई संबंधी सूचना प्रकाशित करवाई गई थी। तद्नुसार लोक सुनवाई दिनांक 11/12/2023 को दोपहर 12:00 बजे स्थल– ग्राम–सीपत स्थित शासकीय मदनलाल शुक्ल महाविद्यालय, के खेल मैदान, तहसील–सीपत, जिला–बिलासपुर (छ.ग.) में आयोजित की गई। ई.आई.ए. अधिसूचना 14/09/2006 (यथा संशोधित) के प्रावधानों के अनुसार ड्राफ्ट ई.आई.ए. रिपोर्ट, कार्यपालक सार की प्रति (हिन्दी व अंग्रेजी) एवं इसकी सी.डी. (साफ्ट कापी) जन सामान्य के अवलोकन/पठन हेतु **कार्यालय कलेक्टर बिलासपुर, जिला–बिलासपुर, मुख्य कार्यपालन अधिकारी, कार्यालय जिला पंचायत बिलासपुर, जिला–बिलासपुर, अनुविभागीय अधिकारी (रा0), कार्यालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.) मस्तूरी/बिल्हा, जिला–बिलासपुर, महाप्रबंधक, कार्यालय जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र बिलासपुर, जिला–बिलासपुर**, क्षेत्रीय कार्यालय, क्षेत्रीय अधिकारी, छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल, व्यापार विहार पं. दीनदयाल उपाध्याय पार्क के पास, बिलासपुर, **सरपंच/सचिव, कार्यालय ग्राम**

पंचायत–एरमसाही,कछार, कर्माडीह, कर्रा, कसौंदी, जुहली (जुहली एवं कारीछापर ग्राम), कौंडिया, कौंवाताल, खजरी, खांडा (खांडा एवं उसलापुर ग्राम), गतौरा, गुडी, जांजी, झलमला, ठरकपुर, डगनिया, तेंदूआ, दर्राभाठा (दर्राभाठा एवं दवनडीह ग्राम), देवरी, धनिया, नरगोड़ा, नवागांव, पंधी, परसदा, परसाही, पोड़ी, बम्हनीकला, बरेली, भिलाई, मचखंडा, मुडपार, रलिया, रांक, लुतरा, सीपत, सुखरीपाली, हरदाडीह, हिण्डाडीह, जनपद पंचायत मस्तूरी, तहसील–मस्तूरी, सरपंच/सचिव, कार्यालय ग्राम पंचायत–उरतुम, निपनिया, फरहदा, बम्हनीखुर्द, बैमा, भिलमी, मटियारी, मोहरा, रामपुर, सेलर, जनपद पंचायत बिल्हा, तहसील–बिल्हा, जिला–बिलासपुर (छ.ग.), डायरेक्टर, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन, मंत्रालय, भारत सरकार, इंदिरा पर्यावरण भवन, वायु विंग, जोरबाग रोड़, नई दिल्ली, मुख्य वन संरक्षक, एकीकृत क्षेत्रीय कार्यालय, भारत सरकार, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, अरण्य भवन, नार्थ ब्लॉक, सेक्टर–19, नवा रायपुर अटल नगर, रायपुर (छ.ग.) एवं मुख्यालय, छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल, पर्यावास भवन, नॉर्थ ब्लॉक, सेक्टर – 19, नवा रायपुर अटल नगर, रायपुर (छ.ग.) में रखी गई है। परियोजना के संबंध में सुझाव, विचार, टीका–टिप्पणियां एवं आपत्तियां सूचना प्रकाशन जारी होने के दिनांक से 15 दिन के अंदर क्षेत्रीय कार्यालय, छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल, बिलासपुर में मौखिक अथवा लिखित रूप से कार्यालयीन समय में प्रस्तुत करने हेतु आमंत्रित किया गया। इस दौरान लोक सुनवाई के संबंध में सुझाव, विचार, टीका–टिप्पणियां/आपत्तियों के संबंध में इस कार्यालय को कोई भी आवेदन पत्र प्राप्त नहीं हुआ हैं।

लोक सुनवाई हेतु निर्धारित **तिथि 11/12/2023 को दोपहर 12:00 बजे स्थल–ग्राम–सीपत स्थित शासकीय मदनलाल शुक्ल महाविद्यालय, के खेल मैदान, तहसील–सीपत, जिला–बिलासपुर (छ.ग.)** में आयोजित की गई। लोक सुनवाई की कार्यवाही आरंभ की गई।

सर्वप्रथम श्री आर. एस. कुरूवंशी अतिरिक्त कलेक्टर, कार्याल कलेक्टर, जिला–बिलासपुर द्वारा लोक सुनवाई की कार्यवाही आरंभ करने की अनुमति के साथ श्रीमती रश्मि श्रीवास्तव, क्षेत्रीय अधिकारी, क्षेत्रीय कार्यालय, छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल, बिलासपुर द्वारा भारत शासन, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा जारी ई.आई.ए. नोटिफिकेशन 14.09.2006 (यथा संशोधित) के परिपेक्ष्य में लोक सुनवाई के महत्व एवं प्रक्रिया के संबंध में विस्तृत जानकारी जनसामान्य को दी गई।

तत्पश्चात् परियोजना प्रस्तावक की ओर से उद्योग प्रतिनिधि **श्री पंकज शर्मा,** के द्वारा **मेसर्स एन.टी.पी.सी. लिमिटेड, ग्राम–सीपत, तहसील–सीपत, जिला–बिलासपुर (छ.ग.) में प्रस्तावित Ultra Super Critical Technology Project (Stage-III) –1x800 MW** के परियोजना के संबंध में संक्षिप्त जानकारी जनसामान्य को अवगत कराया गया।

अतिरिक्त कलेक्टर, कार्यालय कलेक्टर, जिला–बिलासपुर द्वारा उपस्थित जनसमुदाय को जनसुनवाई संबंधी विषय पर अपने सुझाव, आपत्ति, विचार, टीका–टिप्पणी मौखिक अथवा लिखित रूप से प्रस्तुत करने हेतु आमंत्रित किया गया।

तत्पश्चात् उपस्थित लोगों ने मौखिक रूप से सुझाव, विचार, टीका–टिप्पणियां दर्ज कराया गया। जिसका विवरण निम्नानुसार है :–

1. **श्री जे.के. राठौर, ग्राम–मोपका** :– एनटीपीसी के अधिकारी के द्वारा यह बताया गया। एनटीपीसी भारत सरकार द्वारा जो यूनिट 3 स्टेज 800 मेगावॉट का प्रस्तावित है। उसके संदर्भ में आज जन सुनवाई का आयोजन किया गया है। मैं वर्ष 2008 से लगातार एनटीपीसी में कार्यरत हूँ और ठेका श्रमिक संघ का महासचिव हूँ, यहां पर लगभग 3000 से 3500 हजार ठेका श्रमिक आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से यहां पर कार्यरत है। हम उनके माध्यम से उनके सुख–दुख में भागीदारी होते हुए ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा समय–समय पर किया करते है। उनके सुख–दुख में भागीदारी होते है। उन्ही के माध्यम से उनका जो भी कष्ट है, उनका जो भी समस्या है। एनटीपीसी के प्रबंधन के द्वारा उस समस्या का समाधान करने का पूरा–पूरा प्रयास करते है। स्टेज 1, स्टेज 2 यहां पर इकाई कार्यरत है। देश की आवश्यकता को देखते हुए एनटीपीसी भारत सरकार द्वारा 3 स्टेज 800 मेगावॉट यूनिट लगाने की यहां प्रस्तावित है। छत्तीसगढ़ राज्य के अलावा देश अन्य क्षेत्रों में उत्पादन की गई विद्युत है। उसका सप्लाई किया जाता है। देश के उन्नति के लिए लगातार छत्तीसगढ के अन्य राज्यों को भी विद्युत आपूर्ति किया करता है। स्टेज–3 के बारे में एनटीपीसी के द्वारा पता चला है कि उनको भूमि की जरूरत नहीं है। वो अपने बाउण्ड्रीवॉल के अंदर ही जितना उनके पास में भूमि है। उन्हीं से वो अपना 3 स्टेज लगायेंगे। अभी तक के आसपास के जो पांचों यूनिट चल रहा है उनके माध्यम से आसपास के क्षेत्रों में गांवों में जाते है। उनको श्रमिक वर्ग के भाई है उनको परिवार को चलाने के लिए ज्यादा से ज्यादा लोगों के लिए यहां पर काम की आवश्यकता है। चूंकि 3000, 3500–4000 आदमी यहां पर काम करते है। जहां तक मैं समझता हूँ कि 800 मेगावॉट का हमारा नया यूनिट है और श्रमिकों की जरूवत पडेगी और हमारे आसपास के जो भाई लोग है वो उनको भी काम यहां पर मिलेगा। उनका जीवन–यापन करने का मौका जरूर मिलेगा। एनटीपीसी को ये रिकवेस्ट करना चाहूंगा कि वो कोशिश करें, यहां का जो काम है बाहरी व्यक्ति न आये। वो हमारे जो आसपास के जो प्रभावित है, इस परियोजना से वही के लोग है, वही के नवजवान है। जो कार्य करने वाले है चाहे वो महिला हो या पुरूष हो, उनके द्वारा ही कार्य करने का प्रयास करें। ये निश्चित तौर पर यहां पर इनके लिए बहुत ही

अच्छा होगा। अभी तक एनटीपीसी में जो स्टेज 1, स्टेज 2 जो यूनिट चल रही है। हम जानते है ये भारत सरकार की महारत्न कंपनी है, महारत्न कंपनी होने के नाते एनटीपीसी के द्वारा विभिन्न सामाजिक उत्तरदायित्व, सीएसआर के माध्यम से किया जाता है। यहां पर जो शिक्षा के अंतर्गत् विद्यालयो में हमने देखा है डिजीटल क्लास रूम व बालिका शक्तिकरण यहां पर एक योजना चलाई जाती है। जिसके माध्यम से आसपास के बच्चों को शिक्षित करने का मौका मिलता है। एनटीपीसी उन बच्चो को 12 वीं तक, कॉलेज तक, जो भी पढना चाहता है, चाहती है, उसको एनटीपीसी द्वारा शिक्षा ग्रहण कराती है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में जैसे हेल्थ क्लीनिक, गांव–गांव एनटीपीसी भेजती है। हमने देखा है किसी गांव का आदमी अगर बीमार है, एनटीपीसी हॉस्पिटल में लाता है। उसको चार्ज में लेकर एनटीपीसी की जो चिकित्सा सुविधाएँ है, उनको सुविधाएँ दी जाती है, ऐसा हमने देखा है, और लोगों से सुना है। स्वच्छता के क्षेत्र में टॉयलेट एनटीपीसी के द्वारा बनाया गया है। खासकर स्कूलों में टॉयलेट का निर्माण, स्कूलों में कराया गया है, कराया जाता है। खेलकूद के क्षेत्र में आसपास में जो प्रभावित बच्चे है, जो पढते है, उनको एनटीपीसी यहां पर खेलकूल कराती है, ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चो को खेलकूद कराती है।,साथ ही साथ कौशल विकास के क्षेत्र में हमारे एनटीपीसी के द्वारा आसपास के बच्चों को विभिन्न प्रकार की ट्रेनिंग दी जाती है। पुराने स्टेज 1, एवं स्टेज 2 एनटीपीसी के द्वारा आसपास के क्षेत्र में कार्य किया जाता है, तो आने वाले 800 मेगावॉट की, जो यूनिट आ रही है। हम एनटीपीसी प्रबंधन से ये निवेदन करना चाहेंगे। जो योजनाएं वो चला रही है, बढ–चढ के, वो योजनाएं चलाये। जिससे आसपास गांव के लोगों को उनका लाभ मिल सके।

2. **श्री देवसिंह सोनवानी, उपसरंपच ग्राम–दर्राभाटा** :– आज विगत् वर्ष से एनटीपीसी का स्थापना हुआ है। लेकिन सबसे बडी समस्या की बात है हमारे दर्राभाटा की एनटीपीसी के द्वारा नाला का निर्माण किया गया है, उस समय ग्राम–दर्राभाटा में तीन पुल निर्माण था। जिसको एनटीपीसी के द्वारा तोडा गया। नाला निर्माण भी हुआ। आज तक दो पुल, तीसरा पुल का निर्माण क्यों नहीं किया गया, एनटीपीसी के द्वारा? जबकि हम लोग बार–बार आवेदन दिया है। आज हमारे दर्राभाटा से परसाही से आने–जाने में इतना परेशानी हो रही है। इसका जवाबदारी कौन लेगा। एनटीपीसी आश्वासन देते है, आज बनेगा, कल बनेगा, अगले साल बनेगा। पैसा नहीं आया है, फंड नही आया है, एनटीपीसी बनाने का क्या महत्व है, इन लोग का। तीसरी समस्या है किसानों की समस्या आता है। बार–बार हमने आवेदन किये है कि नहर के पानी पलोने के नाम से, आज किसान इतना बडा परेशानी है,

एनटीपीसी के द्वारा नहर बना दिया गया है कि दर्राभाटा, मुड़पार, तेंदुआ, नवागांव में आज तक पानी पुरा नहीं हो पा रहा है। जिससे कितना समस्या बढ़ रहा है किसानों को आज किसानों को इनका मुआवजा कौन देगा। एनटीपीसी देगा क्या मुआवजा। पानी रोक के रखा गया है, इन लोग को आज 5 साल हो गया है, आवेदन देते–देते। एनटीपीसी ध्यान नहीं दे रहा है, किस कारण ध्यान नहीं दे रहा है, इनका जवाबदारी एनटीपीसी का है और जवाब दे? आज ये जनसमूह के समक्ष है। इनके सामने इनको बोलना चाहिए हमने क्या गलती किया है, तीसरी समस्या है कि दर्राभाटा में बाजार चौक से लीलागर नदी तक रोड का निर्माण किया। लेकिन तीन महीना रोड चला था। आज जाकर देखिये स्थिति इतना बत्तर हो गया है कि इनका रोड बनाये हुये। आज यहां नाला निर्माण किया गया है, आज लीलागर नदी का पानी को प्रदूषित कर दिया गया है। वहां क्यो साफ–सफाई का मशीन निर्माण नहीं किया गया? हम लोग गुजर रहे है। एनटीपीसी क्या बनाही। इस जवाब दे एनटीपीसी वाले। इस तरह के समस्या है। आज जन सुनवाई का जरूवत पडा है। 17–18 गांव के जमीन प्रभावित हुये है। एनटीपीसी वाले के लिए रेल लाईन के लिए। 8 गांव मा समस्या है सर। लेकिन एनटीपीसी वाले ध्यान नहीं दे रहे है, सिर्फ आवेदन लेके ढकोसला का काम करथे। कब बनही, ऐखर जवाब दे एनटीपीसी। मोर दर्राभाटा के नाला के निर्माण कब होही, और पुल के निर्माण कब होही। जेला –तोड के पूरा खराब कर दीस, आज हमर आये जाये मा परेशानी होवत हे। तत्काल निर्माण कराया जाये। तब ये जनसुनवाई होही। ऐखर जल्दी से जल्दी निराकरण होये। ये नाली जो किसान के हे ऐला बरोबर पानी फसल पलना चाहिए। हमन आंदोलन करबो। आप जवाबदार हो।

3. **श्री सुरेश कुमार राठौर, सरपंच ग्राम–गतौरा** :– मैं निवेदन करने आया हूॅ। एनटीपीसी में 2 स्टेज का निर्माण पहले हो चुका है, 3 स्टेज का जन सुनवाई हो रहा है, जिसका निर्माण हो चुका है। तीन राखड डेम बन चुका है जो 5–5 स्टेज में बन चुका है। तीन राखड डेम गतौरा, रलिया, भिलाई, हरदाडीह, सुखरीपाली, कौडिया, देवरी, राक से इतना प्रभावित है कि पूर्व से पूरा राखड बस्ती मा जावत हे। उत्तर के हवा दक्षिण मा जाथे। छोटे–छोटे बच्चे है, तीन–चार दिन तक खाना नहीं बनाते महतारी मन। एनटीपीसी खोले से कोई दिक्कत नहीं। राखड ला प्रबंधन बेहतर रूप से करें। गाडी मन ओव्हर लोड चलत हे, जिससे आये दिन दुर्घटना होवत हे। ओला कंट्रोल करें। मोर यही निवेदन है। राखड के व्यवस्था ला संतुष्ट कर दे। पर्यावरण से संबंधित राखड है। आज जो लोक सुनवाई होवत हे न आज पूरा प्रोडक्शन एनटीपीसी का पूरा राखड हमर तीनों डेम मा जाकर भरत हे। आज

पूरा 2–3 दिन हो गये महतारी मन खाना नहीं बनावत हे, मैं सरपंच हव पूरा देखे हव। पूरा आंखी से देखे हव सुखरीपाली बस्ती मा। वो अलमारी मा दिखाये हे। अलमारी मा कपडा मा धूल डस्ट जम जावत हे। अलमारी मा धूल डस्ट जमत हे, तो आदमी के जन जीवन कैसना होही। नाक के सांस मुह के सांस पेट मा तो जाहे करही। बीमारी आबे करही। ऐखर चुस्त से दरूस्त प्रबंधन करें। आप मन अधिकारी मन पर्यावरण विभाग भी मॉनिटरिंग करो, इस दिन आ रहे हो तो हम साथ में रहेंगे। गर्मी में दिन में थोडा भी हवा चलता है। बहुत ज्यादा परेशानी होती है सर। मेरा बार–बार निवेदन है इसका गंभीरता से लेकर निराकरण करो। एनटीपीसी अपना प्रोजेक्ट तैयार करें। हमें कोई आपत्ति नहीं है।

4. **श्री धनीराम खरे, ग्राम–रॉक** :– 1 एकड जमीन हमारा एनटीपीसी अधिग्रहण किया गया है, आज तक एनटीपीसी हम लोग को गुमराह करते आ रहा है। आज हमारा भूखमरी इसलिए छा गया है कि एनटीपीसी आने के बाद। एनटीपीसी जाते है तो एनटीपीसी सिर्फ गुमराह करते है। हम लोग विरोध भी किये है, भूख हडताल भी किये है। एनटीपीसी हमारा पेशी भी कराया है। एनटीपीसी जब–जब जाते है तो नौकरी देंगे, नौकरी देंगे। अभी तक नहीं दिये है। हमारी स्थिति ऐसी है कि हम लोग रोड में आ गये है। हमारा 1 एकड ही जमीन था, जो एनटीपीसी ले लिया है।2 डिसमिल, 4 डिसमिल, 4 डिसमिल वाले नौकरी कर रहे है। कितने लोग नौकरी कर रहा है। क्या दलाल के माध्यम से नौकरी कर रहा है। मेरा 1 एकड जमीन है, एनटीपीसी रिस्क नहीं लेता है, तो हमारे मौत का एनटीपीसी, शासन प्रशासन ही जवाबदार रहेगा। हमारे पास जमीन नहीं है। कहां से खाये, न चोरी कर सकते, न लूटमार कर सकते। हमारा 1 एकड़ पुरखौती जमीन था। जो एनटीपीसी अधिग्रहण कर लिया। हम भूख हड़ताल भी किये है। नौकरी के नाम लेकर, हर चीज किये है। लेकिन एनटीपीसी से हमको कोई लाभ नहीं मिला है, मिला है तो बाहर के आदमी को लाभ मिला है। जो 30,000 व 25,000 रूपया परमानेंट कमा रहे है। हमको 1 रूपया भी एनटीपीसी से नहीं मिल रहा है। धूल–धक्कड पूरा गांव में छा जाता है, धूल। एनटीपीसी का धूल को खा रहे है। विकास के नाम पर एनटीपीसी क्या किया है गांव में। खाली दलालों के माध्यम से काम हो रहा है एनटीपीसी, हमारा बात को टाल देता है। आवेदन देते है उसको फाड के कूडा में डाल देता है एनटीपीसी। मैं निवेदन करता हूँ गंभीरता से लिया जाये और उचित काम किया जाये।

5. **श्रीमती चौहान** :– भूस्वामी हूॅ मैं, 2004 से मेरा जमीन गया है। रेल लाईन बिछी है। मेरा 8–10 ठोक खेत में से पेड को कांट भी दिया गया। भूमिगत पाईप लाईन भी बिछी है। आज तक एनटीपीसी बोलती है आपको रोजगार दिया जायेगा। हमने कोशिश किया 2010 में हमको एक छोटा सा दुकान दिया गया है, जो काम्पलेक्स में है मल्टीसर्विस, मैं 5 साल से हाईकोर्ट भुगतने के बाद मैं दुकान खोल कर रखी गई हूॅ। एक रूपये पैसा वहां से मिला नहीं है। खाते को भी चेक किया जा सकता है बोलते है कि बस स्वरोजगार दिया जायेगा। आपके बेटे को नौकरी दिया जायेगा, देते कुछ नहीं है। मैं चाहती हूॅ कि यहां पर किसी भी प्रकार के लोगों को यहां पर परेशान न करें। क्योंकि ये हमारी जन्मभूमि है। एनटीपीसी शासन करती है और ग्रामीण जनता को गुमराह करती है। मेरा अनुरोध है ग्रामीण जनता को गुमराह न करें। उनको उनका हक मिले, उनका उनका अधिकार मिले। यहां पर जो पढे–लिखे है जो भाई–बहन है उनको रोजगार मिले। उनको ठेकेदारी क्यों न मिल उनको, बहुत से ऐसे लोग है, बहुत से ऐसी महिलाएं है। जिनका खेती किसानी निकल चुका है। उनको वहां रोजगार नहीं दिया जाता है। यही कहना चाहती हूॅ, क्योंकि मैं भी बहू हूॅ, यहां कि, मेरे को अभी तक इसका न्याय नहीं मिला है। 4 साल मेरा दुकान बंद था बिना वजह। मैंने बहुत झेला है, बहुत भुगता है। कैसे करके उस मैं उस दुकान को बचाई हूॅ, वो मैं ही जानती हूॅ। मैं चाहती हूॅ मेरे बेटे को रोजगार मिले। मैं चाहती हूॅ कि यहां पर ग्रामीण जनता है वो भी आकर अपनी आवाज उठाये। आज मुझे मौका मिला है, इसलिए मैं बोल रही हूॅ।

6. **श्री प्रमोद जायसवाल, पूर्व सरपंच ग्राम–धनिया** :– एनटीपीसी के द्वारा जो स्थापित किया जा रहा है, वो हमारे हिसाब से गलत है पूरा। 1 डिसमिल वाले को भी नौकरी देना पडेगा, 1 डिसमिल वाले को नौकरी देना पडेगा, तो हम लोग समर्थन में है नहीं देगा तो हम लोग विरोध करते है। दूसरी बात हमारे क्षेत्र के इतने सारे भू स्थापित है और क्षेत्र के लोग बेरोजगार है। बाहर से झारखण्ड से, बिहार से अन्य राज्यों से लाकर के यहां काम दिया जा रहा है। जब तक क्षेत्रीय आदमी को काम नहीं मिलेगा। छत्तीसगढ के लोगों को काम नहीं मिलेगा। हम लोग के क्षेत्र के लोगों को काम नहीं मिलेगा। तब तक हम लोग इसका विरोध करते है। हमको हमारे क्षेत्रों के बेरोजगारो लोगों को रोजगार चाहिए। बाहर के लोगों को नही। किसान की हित का बात इन लोग करते है किसान की हित कभी भी नहीं कर रहे है। इनके राखड से प्रत्येक गांव से आम जनता से बहुत बीमारी बढ रहा है। इनका राखड जो उड़ रहा है। उससे 20 किलोमीटर क्या, 30 किलोमीटर क्या, 40 किलोमीटर तक आम लोगों को बीमारी फैल रहा है। अस्पताल में लाईन लगना पड

रहा है, मिलने जाओगे तो वहां गेट में इतना सारा हम लोगों को जो किसान है हम लोग जमीन दिये है। उनको मिलने के लिए उनके पास समय नहीं है। हम लोग विरोध में आये है। सीधा–सीधा क्षेत्र के लोगों को काम देगा, क्षेत्र के लोगों को पूरा–पूरा रोजगार देगा। तब हम लोग समर्थन करेंगे। नही ंतो हम लोग विरोध में है। हमारा तम्बू भी लगेगा, टेंट लगेगा जब तक हमारे क्षेत्र के लोगों को काम नहीं देंगे, हमारा टेंट लगा रहेगा हम विरोध करते है।

7. **श्री आकाश सोनी** :– मैं 2017–2018 से आवेदन डाल कर रखा हूॅ। अभी तक नौकरी नहीं लगा है। उसका कारण है दो लाईन का सभी का समस्या नौकरी और रोजगार। अभी जैसे कागजी कार्यवाही की बात होती है, तो नौकरी कहां पर अटका कहां पर है। जैसे 692 पद होता है, उसमें एसटी का आरक्षण लगा कर रखे है। 154 आरक्षण लगाये है। अब 692 पद में 154 पद में आरक्षण लगा हुआ है। जिस हिसाब से नियम है, उस हिसाब से एनटीपीसी में 692 में एसटी है ही नही ंतो आयेंगे कहां से। कहां से आयेगा बताईये, बोला जाता है कि आप लोग क्या कर रहे है, क्या कर रहे है। यहां से वहां जाकर क्या करेंगे। अभी यहां 66 पद लोको पायलेट के लिए था। उसको बोला गया था कि 19/03/2020 के मंथन सभा के त्रिपक्षीय सभा में बोला गया था। उस 66 पद को समझौता कर अन्य पदो पर किया जाये। लोको पायलट का ऐसा है, कि जैसे भू स्थापित वो और साथ में लोको पायलेट का रिटायरमेंट हो, तो कहां से भू स्थापित लोगों का एनटीपीसी के साथ अधिग्रहण हो 60–65 साल रिटायरमेंट लेने के बाद ऐसा पॉलिसी एनटीपीसी बनाकर रखी है। मैं उसका सीधा–सीधा विरोध करता हूॅ। मैं इसके बारे में एनटीपीसी के प्रबंधक से 2019, 2020 में हम लोग सब जगह गये है, सारे ग्रुप के मेम्बर एक लाईन से खडे हुये है, विधायक महोदय के पास गये, हडताल करने के लिए मांग करने गये। ये जो पॉलीसी एनटीपीसी बनाकर रखी है, इसका हम लोग आज तक कुछ बिगाड नहीं सके। जो हम लोग गरीब परिवार के है। हम लोग का जमीन गया है, उसके बाद हम लोग कुछ नहीं कर सकते, सिर्फ धूल–खाओ, और बैठे रहो। आप लोग का ध्यानाकषर्ण करना चाहूंगा। एक छोटी सी समस्या है। एसटी का आरक्षण लगा हुआ है 154 पद पर और 66 पद जो कलेक्टर महोदय लिख के दे चुके है, इसको अन्य पदो पर समायोजन किया जाये। अभी तक 2 साल हो गया। कुछ नहीं कर रहे है, उसका निराकरण अभी नहीं हुआ है। ऐसा चाह रहे है हम लोग के बच्चे लोग नौकरी के लिए चिल्ला रहे है, अभी तक कुल 200 से ज्यादा लोग रोजगार पा जाते सर। ये एनटीपीसी की पॉलीसी नहीं होती तब। दो लाईन का लिखा करते हुये। इनमें लागू करते है। उसके कारण अटका

हुआ है। हाथ जोड निवेदन है कि ये जो पॉलीसी है इसको खत्म करके बाकी जो बचा हुआ पद है। 692 पद को कम्पलीट किया जाये।

8. **श्री लोकेश पटेल मरार, ग्राम–रलिया** :–सभी लोगों ने नौकरी के विषय में बात किया है और आरक्षण की बात चली। छोटा सा बात ये कहना चाह रहा हूँ, जो जमीन आपने अधिग्रहण किया। उसमें ओबीसी का था, एसटी का था, एससी का भी था, सामान्य का भी था। जैसा–जैसा जमीन आपने लिया वैसा नौकरी आपको देना चाहिए था। 267 नौकरी देना था उसे तत्काल दिजिए। उसके पहले मैं दलदल किसानों से हूँ। 2009 में टावर में चढने की बात रखा। आपने सिस्टम में नहीं सुना। एनटीपीसी में दोष नहीं है। एनटीपीसी सिस्टम स्थापित करने वाला हमारा बिलासपुर है। ये लोग के पास हमने कई आवेदन दिया है। हमारा 2023 में मुआवजा देने के लिए प्रावधान था। 2009 में हम लोगों ने समझौता किया था, जो हर साल नवम्बर, दिसम्बर में देने की बात कही थी। कभी इन लोगों ने नहीं दिया, नवम्बर–दिसम्बर में सिर्फ 2009 में दिया और 2011 में दिया उसके बाद नहीं दिया। और आप एनटीपीसी की स्थापना बढाना चाहते है। इतनी धूल उडती है गांव में आपने खोल दिया है। गांव में ये कौन होता है नाली खोदने वाला, रलिया में देखिये। 18–20 लाख देकर नाली बनाया है। नाली क्या दुर्गती है। गांव के लोग रेग नहीं, चल नहीं सक रहे है। ऐसी स्थिति है और आप लोग समर्थन कर रहे है। एनटीपीसी बढाने के लिए एनटीपीसी हमारा दलदल खेतो का 8 गांव में दलदल जो 453 किसान है। 523 एकड जमीन है रलिया, भिलाई, गतौरा के किसान 2007 से क्या 2002 ये परेशान है। एनटीपीसी अधिकारी बोलते है कि जमीन सूख गया है आप जाकर देखो आपने कागजी पढा है फिल्ड में जाकर देखो। किसान कैसे नहीं बो सकता, वो बोता नहीं इसलिए खेत सुखा पढा है। सरकार के अनुसार भाव में था। जो भाव देने का तय हुआ है। उस आधार में हमें नवम्बर–दिसम्बर में नहीं जाना चाहिए था। अभी तक बिलासपुर सिस्टम सर्वे नहीं किया कराया गया। इससे साफ होता है कि मैं 62 वर्षीय बुड्ढा साफ कहता हूँ। इनको कमीशन का खेल है। दुख लगता है ये सब सुनकर के। क्या चीज का जन सुनवाई कराते है साहब। मेरे जैसे बुड्ढा परेशान हो गया, तो मेरे बच्चे का क्या होगा। बच्चे को पढा नहीं सका। 2009 में हडताल हुआ, हडताल बंद करो 3 साल तक मुझे 5–5 हजार देने की बात कर रहे थे। मेरे लडको को नौकरी देने की बात कर रहे थे। ये हडताल मत करो। ये दलदल खेतों को किसी को देना नहीं पडेगा। हडताल मत करो। आपके लडको को नौकरी दिया जायेगा। हम दलदल के किसान सब परेशान हो रहे है। धूल उडती है साहब। मस्तूरी तक धूल उडती है। मेरा बहुत दुख है मैं कह नहीं सकता।

भटक–भटक कर मर रहे है सभी किसान, 10–10 आवेदन दे रहे है। हडताल की बात सुनते है मुआवजा भरवाते है। एनटीपीसी रोड़ा नहीं है, हमारा सिस्टम रोड़ा है।

9. **श्री हेमंत कुमार शर्मा, ग्राम–रॉक** :– हमने 10 साल अंदोलन किया है, एनटीपीसी को बाध्य होकर त्रिपक्षीय वार्ता करना पढा था और 692 लोगों को नौकरी देने की उन्होंने सहमति प्रदान की। कोई प्रोजेक्ट लगता है, तो उसमें यह भी देखा जाता है। इसमें सहायक प्रोजेक्ट कितना रहेगा। इसमें लोहे का कारखाना लगता है तो इसमें सहायक प्रोजेक्ट कई लग जाते है, मोटर गाडी कार का कारखाना, मोटर फटफटी का कारखाना यदि लगता है तो उसमें सहायक परियोजना आसपास में बहुत ज्यादा, जैसे भिलाई में सहायक परियोजना की भरमार हो गई है। जहां भी गाडी, मोटर साईकिल की दुकान लगती है वहां पर सहायक परियोजना लग जाती है। आपने सीधे–साधे क्षेत्र में जो छत्तीसगढ का सबसे ज्यादा जो संवेदनशील क्षेत्र है। सीपत क्षेत्र है यहां पे करीब–करीब लगभग 4000 एकड जमीन लेकर एनटीपीसी परियोजना प्रारंभ की आपने उस समय हमें यह आश्वासन दिया कि 300 मीटर चिमनी होने के कारण प्रदूषण नहीं होगा। हमारे आसपास के गांव में आपके राखड यह हो रहा है कि हर गांव में हर बोरिंग में, हर कुंए में, हर तालाब में पानी का रिसाव हो रहा है पानी गंदा हो रहा है। आप बोलते है सर मैं परसो आपका विज्ञापन देखा। झूठ का पुलिंदा है आपका विज्ञापन, आप लिखे है विज्ञापन में हम 100 प्रतिशत राखड का उपयोग करते है। यदि आप 100 प्रतिशत राखड का उपयोग करते, तो वो जगह खाली नहीं हो जाता है तीन–तीन स्टेज राखड डेम को क्यों बनाते। वो जगह खाली नहीं हो जाता। आपका राखड बच रहा है। इसलिए आप अपने राखड डेम को उंचा कर रहे है, और झूठ पे झूठ बोल रहे है कि हम राखड का 100 प्रतिशत उपयोग कर रहे है। बिल्कुल नहीं होता, लोग देखे है कि गर्मी में व ठंड में जब हवा चलती है तो राख रलिया, भिलाई, कौडिया यहां सबसे ज्यादा प्रदूषण होता है। लोगो का जीना दुर्भर हो गया है, कई प्रकार के बीमारी अस्थमा, टी.बी. अन्य ये सब हो रहा है, आने वाले टाईम में लोगों का फेफडा काम करना बंद हो जायेगा। ये सब दिखाना बंद कर दिजीए। लोगों को वास्तविकता बताईये। आप बोलते है डाक्टरी सहायता करेंगे। गांव में एक ही दिन आता है और 2–4 ठोक दवाई रखे सर्दी, खांसी, बुखार का उसको देकर आ जाते है, ये क्या तमाशा है भाई आपका 8 गांव सबसे ज्यादा प्रभावित है, आप 40 गांव को इसलिए जोडे है कि 8 गांव सबसे ज्यादा प्रभावित है। उनका मुंह बंद किया जाये। इसलिए आसपास के सब गांव को बुलाये है। 8 गांव सीपत, जांजी, राक, कौडिया, देवरी, भिलाई, पंधी इनका मुंह बंद हो जाये। यहां पर बोले दूसरे जगह के लोग खोलिये,

खोलिये। हमारा जमीन है, हमारा अधिकार है, प्रदूषण बहुत हो रहा है। इसका आप जांच करवाईये। हम राष्ट्र के लिए समर्पित है। देश के लिए भी। आपको जनता के लिए समपर्ण है। जनता आप लोग तकलीफ में है। जनता आपके हित के लिए बात करें। आप नहीं सुनते है, तो ये दो धारी तलवार है। मेरा कहना ये है कि आपके राष्ट्रीय हित में यदि नया प्रोजेक्ट प्रारंभ कर रहे है, वो स्थान में जाईये, जहां पे जरूवत है, जहां पर कोयला मिलता है, जहां पर राखड मिलता है। यहां पर खुद ऐसे है कि प्रदूषण की भरमार हो रही है। यहां पर किसी भी हालत में हम नहीं खुलने देगें। आप ज्यादा जिद करेंगे तो हम पानी बंद कर देंगे, सडक बंद कर देंगे, रेल बंद देंगे। यहां पर अगला प्रोजेक्ट नहीं लगाने देगें। लोगों को अधिकार है, अपनी सुरक्षा के बारे में सोचे। अपने स्वास्थ्य के बारे में सोचिये, अपने परिवार के बारे में सोचिये। गांव के बारे में सोंचे।

10. **श्रीमती देव कुमारी, ग्राम–रॉक** :–एनटीपीसी के आने से यहां गांव में बहुत सारे बेरोजगार को रोजगार मिला है। आसपास में भी पर्यावरण का भी, एनटीपीसी के आने से बहुत सारी डेवलपमेंट हुआ है, यहां के बच्चों को पढाई–लिखाई नहीं हो रहा है, स्टेज 3 यहां एनटीपीसी में आना चाहिए, न तो यहां पानी, न तो यहां कोयला, न तो अलग से जमीन ले रहे है। इसलिए स्टेज 3 आना चाहिए। एनटीपीसी के आने सब कुछ अच्छा हो रहा है।

11. **श्री गिरधर कुमार, ग्राम–एरमशाही** :– हम लोग को धमकी देता रहता है कि तुम्हारा गेट पास छीन लेंगे, तुमको भगा देंगे, अगर थोडा सा प्रॉबलम हो जायेगा, तो हम लोग को निकाल देंगे। कई महीने से बैठा हूँ घर में, थोडा सा प्रॉबलम होता है तो निकाल देते है। मैं कहां जाउंगा, 15–16 साल हो गया काम करते हुये। थोड सा प्रॉबलम होता है तो तुम्हारा गेट पास देकर भगा देंगे, नौकरी से। मैं घर में बैठा हूँ। जो काम मैं नहीं करता हूँ उसके कारण मेरे को बैठाया गया है। सीएमओ के पास जाओ। मैं किसके यहां जाऊ। मेरा बाल–बच्चा, छोटा–छोटा पढाई कर रहा है। मेरे लिए नहीं, मेरे साथ 200 आदमी बैठा है। एनटीपीसी में ऐसा रूल है, क्या निकाल दिया जाये। एनटीपीसी प्रबंधन से निवेदन करता हूँ क्या ऐसा रूल है क्या? किसी को काम से निकाल दिया जाये। आज ये लडका यहां नहीं आये, तुम्हारा गेट पास बन जायेगा बोला है, मैं इसमें बता सकता हूँ, मोबाईल में मेरे को 2 महीने से घूमा रहा है। इतना दिन हो गया है। एनटीपीसी आंख बंद कर सोये हुए। आज तक नहीं बना हुआ है, 20–25 साल हो गये एनटीपीसी खुले क्यों नहीं बना है। सिर्फ अपने क्षेत्र में बनाओं। कॉलोनी में हर साल डमरीकरण होता है। क्योंकि उन लोग

के परिवार को थोडा सा भी धक्का न हो, गड्डा नहीं मिले। क्या हम लोग का परिवार नहीं है। हम लोग का बाल–बच्चा, बीबी नहीं है क्या। ये नहीं कर सकता है तो हम नहीं खोलने देंगे एनटीपीसी। पहले एनटीपीसी नहीं बना था तो नहीं जी सक रहे थे क्या। हमारे मॉ–बाप, हमारा पढाई–लिखाई नहीं किये है क्या? एनटीपीसी नहीं था तो भी किये है। हम लोग इसका विरोध करते है। किसी को निकालने का अधिकार है, तो बताईये हम लोग क्यू निकालते है, क्या 15–20 साल ऐसे ही दे दिये एनटीपीसी को। आज इसी के कारण प्रॉबलम हुआ है। हमको जवाब चाहिए। हम सब लोग के लेकर हडताल कर देंगे।

12. **श्रीमती पुनाबाई, ग्राम–जांजी** :– लडके को नौकरी नहीं दे रहे है मैं शियान आदमी मर रहा हूॅ, मेरा गौसईया खत्म हो गया, मेरे को एनटीपीसी नौकरी नहीं दे रहा है कह कर। मेरे को जहर दे दिया जाये, एनटीपीसी वाला। कौन होता है खेत लेने वाला, गरीब आदमी मर रहा है कौन पालेगा हमको। हमारा खेत तो चला गया है, ले लिया है। एनटीपीसी वाला जहर दो, जल्दी। 22–25 साल हो गया, कौन पोसेगा हमको, आज देंगे कल देंगे, शियान आदमी मर रहा है, जहर देकर खत्म कर दो। एनटीपीसी काहे के लिए खुला है, मरने के लिए खुला है, बाहर–बाहर के आदमी को नौकरी दिया है। गांव वाले को नौकरी नहीं दे रहा है। जहर देके मारो, तब मानूंगा। हमको जहर खिला रहे हो क्या। शियान आदमी कौन पोसही हमर बच्चा नान–नान है, आज देहे, कल देहे, 25 साल हो गये। उसका नुकसान कौन देगा।

13. **श्री धनसिंह मधुकर, ग्राम–जांजी** :– वर्ष 2000 जब से एनटीपीसी का शिलान्यास हुआ है। तब से मैं पढाई पूरा कर लिया और स्टेट गवर्नमेंट में जॉब के लिए इतना भटका हूॅ। आज तक मेरे को सरकारी नौकरी नहीं मिली। जब से एनटीपीसी हमारे सीपत में स्थापित हुआ है, तो मैं आज अच्छे ढंग से ठेका मजदूर के रूप में काम करते आ रहा हूॅ, मुझे कोई तकलीफ नहीं है, एनटीपीसी आने के बाद और मैं स्वागत करता हूॅ, तीसरा यूनिट का तत्काल आना चाहिए, एनटीपीसी का। मैं अपने बच्चे लोग लडका स्कूल, शिक्षा एनटीपीसी में काम करके बदौलत बच्चे को अच्छा शिक्षा ग्रहण दिया हूॅ और आज अच्छे मकान में रह रहा हूॅ। अच्छे गाडी घोडा में रह रहा हूॅ। पेट भर भोजन खा रहा हूॅ, अच्छे भोजन कर रहा हूॅ। मेरे को एनटीपीसी से किसी भी प्रकार की कोई दिक्कत नहीं है। मैं बताना चाह रहा हूॅ कि मेरे ग्राम जांजी में 95 प्रतिशत महिलाये भी काम कर रही प्लांट में, पुरूष भी काम कर रहे है प्लांट में, मेरे नवजवान साथी भी काम कर रहे है प्लांट में। क्योंकि स्टेट गवर्नमेंट में किसी भी प्रकार की कोई नौकरी नहीं है। कोई काम धाम नहीं है। मैं एनटीपीसी

का तहेदिल से शुक्र अदा करता हूॅ। एनटीपीसी से कोई आपत्ति नहीं है। आने वाले समय में अच्छे स्कूल, अच्छे हॉस्पिटल, अच्छे सड़क, अच्छे दुकानदारी होना है। एनटीपीसी की किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है।

14. **श्री रेवा शंकर साहू ग्राम–सुखरीपाली गतौरा** :– मैं 2017 में भूख हडताल किया था। एनटीपीसी वाले अधिकारी है कि उसके कर्मचारी है, मैं तो नहीं जानता। मेरे ऊपर ऐसे इल्जाम लगाये है कि 1 करोडों रूपये दिये है। पूरा रलिया, राक, कौडिया बस्ती वाली मेरे को फेमस कर दिये है। मैं उनको ये बोलना चाहता हूॅ कि एनटीपीसी के अधिकारी बताये कि मेरे को बदनाम करके जीना नहीं चाहता और उसी समय आंदोलन चल रहा था, भूख हड़ताल में बैठा था। मेरे साथियों लोग से बोला गया था कि आप लोग आ जाओ। मैं तुरंत आप लोग को नौकरी दूंगा बोला था। आज तक उन लोग को न नौकरी दिया है। न कभी रखेगा। झूठा भरोसा लगा कर रखे हुये है। दूसरा चीज राखड इतना उडता है कि 3–4 गांव में खाने के समय हम लोगों को खाने मिलता है हम लोगों को, छोटे–बच्चे रहते है उनके मुंह में जाता है। उनके लिए क्या समस्या का समाधान करते है एनटीपीसी 3100 किसानो का भू स्थापित जमीन का अधिग्रहण किया गया है। उसमें अभी तक 400 दिया है। उसी का 350 बचा हुआ है। एसटी/एससी कहां से आ गया भैया आप ही बताओ। एसटी/एससी शासन था तो भी था। किसानो का लिया है कहां से आरक्षण आ गया है। जिसका जमीन है उसको फायदा मिलना चाहिए, और बाकी बचा जो 2800 किसान, उन किसानों के लिए जगह बनाये है। उसका फायदा किसानों को मिलना चाहिए। किसान जिसका जमीन गया है, जिसका जमीन गया है 1–1 डिसमिल वो तो चला गया है। स्वास्थ्य है जो 150 बेड का यहां हॉस्पिटल बनाया जाये, जो दलदल का जमीन गया है, सही समय में आज तक उनको मुआवजा नहीं मिलता उनको, उनका मुआवजा सही समय में दिया जाये।

15. **श्री रामाधार डहरिया, ग्राम–जांजी** :– समर्थन में दो शब्द बोलना चाहता हूॅ। ये सही है कि किसी भी देश में जब प्लांट लगता है तो विकास होता है। चाहे स्थाई लोग हो। प्लांट लगता है तो रोजी–रोजगार मिलता है। यहां देख रहे थे कि प्लांट पहले नहीं था तो लोग बाहर जाया करते थे, जीने खाने के लिए जाते थे, अन्य देशो में, आज वो पलायन का संख्या कम हो गया है, बंद हो गया है ये कह नहीं सकते। यहां के लोगों का काम पढ रहा है, यहां पर बढोतरी देखा गया है और पहले जैसे अब भूखमरी यहां पर नहीं है। गांव में अधिकतर लोग काम करने आते हैं। उससे क्रय शक्ति बढ गये है लोगों का बढोतरी उपर आया है। कई लोगों को प्रत्यक्ष–

अप्रत्यक्ष तरह का लाभ मिल रहा है, कोई दुकान खोला है, तो कोई दूध का दुकान, तो किराये का मकान चला रहा है, इस तरह से उसका किसी न किसी प्रकार से उसका लाभ मिले। तो बढोतरी हुआ है। इसलिए मैं यह कहना चाहता हूॅ जब कोई गृहणी घर में चुल्हा फूक के खाना बनाती है, तो तब भिढना पढता है तो तब जाकर अपने परिवार को भोजन खिला सकती है। इसलिए मैं संयंत्र विस्तार के पक्ष में समर्थन करता हूॅ।

16. **श्री प्रंगत तिवारी, ग्राम–बिटकुला** :– अभी तक कोई सेवा करने का मौका नहीं मिला है, हमें सेवा करने का मौका दे।

17. **श्रीमती दशमत, ग्राम–दर्रीपारा** :–दर्रीपारा में बहुत समस्या है, क्या है दलदल हे, राखड हे, हमन ला कुछ नहीं मिलय, आन–आन मन गांव के आकर बुता करथे, दर्रीपारावाला मन ला लगथे। हमन ला नहीं लेवत हे। क्या खाबो के, कैसे जिये। हमन ला बुता मा नहीं ले जाते और आन–आन मन आये हे डेम मा बुता करथे। हमन अपन बाल बच्चा ला काहे मा पोसबो। हमरो समस्या ला देख ले।

18. **श्री शत्रुघन बंजारे, ग्राम–रॉक** :–मेरा 1.52 डिसमिल मेरा जमीन गया है। आज 10 साल से एनटीपीसी घूमा रहा है, बोलता है वो बचा है वो दलदल हैं। नौकरी कब तक मिलेगा, एनटीपीसी से पूछना चाह रहा हॅू, 1 एकड 52 डिसमिल जमीन गया है 50 डिसमिल दलदल है। विरोध में हॅू।

19. **श्री राजेन्द्र धीवर, सरपंच, अध्यक्ष ग्राम पंचायत सीपत, ग्राम–सीपत** :– अभी कुल मिला के बात आईस हे रोजगार। आज ओखर फायदा हमला मिलत हे, अभी जो तीसरा स्टेज के जन सुनवाई होवत हे, सब के अपेक्षा हे, काम के बात हो, या, किसान भाई के बात हो, रोजगार के बात हो, हमर गांव के काम के बात हो, जब–जब प्लांट आथे तो हमन भी पहले पक्ष मा प्लांट के बात रखे, प्लांट के सब साथी मन भी बात रखे। गांव के विकास तो होय। जो रोजगार रहीस हे, अभी बहुत सारा पद है। हर बात ला रखे गये हे, रोजगार होवय 692 पद के भर्ती होवय, और जो बाकी भू–स्थापित है। ओला रोजगार चाहे ठेके पद्वति से हो, जो भाई आईटीआई करे हे, आईटीआई से करे, ओखर रोजगार के बात होवय। जेकर जमीन रही से ओला भी भेजते और जेखर जमीन नहीं रहते ओला भी भेजते। ऐखर व्यवसाय ला भू अनुमोदन झेलत हे। बहुत सारा व्यापार भी आये हैं। लोक सुनवाई भी होवत हे एनटीपीसी करत हे। बहुत सारा विकास एनटीपीसी द्वारा करत जावत

हे। हमर रोजगार के बात हे, विकास होवत हे। सरकार द्वारा भी बहुत विकास होवत हे। प्राथमिकता है पहली प्राथमिकता है रोजगार। तीसरा स्टेज भी बहुत सारा काम करही, लोकल आदमी मन काम करही, ऐखर मै समर्थन करत हव।

20. **श्री किशोर भार्गव, सरपंच ग्राम–रलिया** :– 2000 सन् में एनटीपीसी भू अधिग्रहण कर रही थी, तो हमारे ग्रामीणों को एक ऐसा सपना लगा कि चलो हमारे बच्चो का भविष्य बनने वाला है। जिस हिसाब से इन लोगों ने एनटीपीसी का समर्थन भी किया, इन लोगों ने, हम लोगों ने ऐसा सोचा कि लोग का उज्जवल भविष्य आ गया है, लेकिन स्थिति और परिस्थिति को देखते हुए बताया कि ये सब समस्या है, तो मैं एनटीपीसी अधिकारी प्रशासन से निवेदन करूंगा। जो पूर्व में जमीन अधिग्रहित की गई थी, उन किसानो को, जो बचा हुआ है, सबसे पहले 261 पद को भरा जाये। हमारे यहां के नवयुवक जो पढे–लिखे है, वो बेरोजगार घूम रहे है, उन्हे रोजगार दिया जाये। जो विकास है हमारे ग्राम के लिए 8 गांव के आसपास हमारे ग्राम भी है। जो विकास के लिए तरस रहे है, इस चीज पर नजर डाले, एनटीपीसी को समझाईस देवे। उन पर विचार करके उनको तुरंत नियुक्त किया जाये। ग्राम के विकास के लिए जो दिया गया है मात्रा में बहुत छोटा है। जैसे हम चाहते है हमारा गांव जैसे आपका एनटीपीसी सीपत में स्थापित किया गया है शहर के लिए डेव्हलप हो गया है, तो हमारा गांव को भी शहर बना दिया जाय। जिससे हमारी जनता खुश हो जाये, हमको सिर्फ मूल–भूत सुविधाएं की आवश्यकता है। हमारी परेशानी सबसे प्रथम हमारा ग्राम पंचायत रलिया, कौडिया, राक, सीपत, गतौरा ये तीन चार ऐसे है जो राखड डेम 24 घंटा राखड खा ही रहे है, चलते है और चला भी रहे है। ये समस्या को सबसे पहले ध्यान दे। ताकि सारी जनता खुश होवें, हमको इस चीज में हा बोलने और हामी भरने में दिक्कत नहीं होगी। ये सब सारी समस्या तत्काल दूर करानी जानी चाहिए। हमारे ग्राम में गेल इंडिया द्वारा गैस पाईप लाईन का विस्तार किया जा रहा है। इसमें 20 मीटर की भूमि अधिग्रहित की जा रही है। जिसमें 1 डिसमिल में 3000 हजार प्रति डिसमिल दिया जा रहा है। उनको किसी भी प्रकार से उक्त भूमि में फायदा नहीं होने वाला है। उक्त भूमि को उनके द्वारा पूर्ण रूप से अधिग्रहित कर लिया गया है, जिससे जनताओं उक्त जमीन छोडने के लिए तैयार है। उक्त भूमि हेतु विचार करें, अपनी कार्यवाही की ओर प्रेषित करें। मैं इस एनटीपीसी के इस नये प्रोजक्ट जो 800 मेगावॉट संचालित होने वाले है उसके समर्थन में हूॅ। मैं अपने भाईयों से भी निवेदन करूंगा कि वो अपनी समस्याएं रखे। जरूर निदान किया जायेगा। एनटीपीसी प्रशासन से मेरा हार्दिक निवेदन भी है।

21. **श्री प्रदीप कुमार अधिवक्ता, ग्राम–जांजी** :– 8 गांवो से, मैं नहीं समझता हूँ कि किसको–किसको क्या–क्या समस्या है। लेकिन एक समस्या है यहां पर एसईसीएल का अधिवक्ता का 46 डिसमिल से लेके 92 डिसमिल का मैं नौकरी मैं सलेक्ट करा लिया। लेकिन यहां 92–93 डिसमिल का बाकी फंसा हुआ है। उनके लिए आप कुछ तो करें।

22. **श्री चित्रकांत श्रीवास, ग्राम–देवरी** :– जब शुरू मा हुईस तो सब ला दुनिया भर के लालच दिस, एक ठीक प्रॉब्लम नहीं आये, एक ठीक समस्या नहीं आये। स्वास्थ्य बर ध्यान दिया जाये, शिक्षा बर ध्यान दिया जाये। होवत हे सिर्फ खाना पूर्ति। मैं बोलना चाहत हव, ये जो खाना पूर्ति होवत हे, ऐला थोडा तरीका से करा। 8 गांव के लईका मन के भविष्य बने, स्वास्थ्य सुविधा के साथ खिलवाड मत करहा। आज तुलना करही हमर 8 गांव के प्रभावित करहा महोदय आज अस्थमा के रोगी हमर हर गांव में है। राखड डेम के समुचित व्यवस्था आप मन करहा नहीं करहा। रोड के हाल देख लो। हमर गांव कौडिया जाहा तो अधिकारी मनके टाउनशीप रोड चकाचक है। रात के 8 बजे अधिकारी मन जाहे तो गड्डा मा हपट के मर जाही। सिर्फ से सिर्फ हमर जमीन, हमर पानी, हमर मिट्टी सिर्फ सीएसआर मद के फायदा देवत हे रायपुर वाले मन ला। 8 गांव के सीएसआर के पैसा ला समुचित 8 गांव मा दिया जाये। जितका रेलवे से प्रभावित गांव है ओहू ला दिया जाना चाहिए। ठेकेदार के बात आथे तो आदमी दुनिया भर के बाहर के आ जात हे, वहां के आ जाथे, दुनिया भर के आ जाथे। आने के आदमी यहां नौकरी करत हे 14,000 तनखा मा और जांजी के आदमी साईकल में मजदूरी करे, जावत हे, यहां 8 गांवो के प्रभावित जितका रेल्वे एरिया मा प्रभावित हे किसान के बच्चा मन ला, नौकरी दिया जाना चाहिए। बाहरी मन ला छटनी करके बिल्कुल निकाला जाये, धमकी देवत हे तोला ऐसे करबे, फलाना करबे, ढेकाना करबे, डराये चमकाये वाला राजनीति नहीं चले। काम होये, हमला विरोध नहीं है। हमर गांव पर निर्भर है, बनना चाहिए। बहुत अच्छा चीज है। बने लेकिन गांव के स्वास्थय, सुरक्षा के देख के बनना चाहिए। गांव के लईका मन के भविष्य के देखते हुए बने। क्रीटीकल बार पिछले साल 2 पहले 4 जीबी हो गये रहीस हे। सबसे पहली ये समुचित व्यवस्था ला पर्यावरण के नुकसान ला देखव। गांव–गांव में पेड लगाओ, जमीन ला घेर ताकि तापमान कम होवय। हमन समुचित रूप से किसान मन प्रभावित रहथन, सृष्टि के तहत समय समय पर पानी नहीं गिरे। समुचित व्यवस्था ला पेड–पौधा ला लगाना चाहिए। स्वास्थ की सुविधा भी मिलही, पानी की भी सुविधा मिलही। बने हमन समर्थन करत हन। आदमी मन ला विश्वास मा लेके करये।

23. **श्री अरविंद लहरिया ग्राम–मस्तूरी** :– एनटीपीसी ला बोलना चाहत हव। जो हमर क्षेत्र के जो प्रमुख गांव है, विधानसभा हमर सीपत क्षेत्र के जनता हित मा कार्य करें और मैं चाहत हव की पर्यावरण को ध्यान मा रखते हुए। एनटीपीसी कार्य करें। जेकर जमीन निकले हवय एनटीपीसी मा जेकर अभी तक नौकरी नहीं लगे हुये है। जो दर–दर भटकत हवय। ओखर व्यवस्था बनाया जाना चाहिए। बहुत ज्यादा शिकायत है, ये राखड के द्वारा गांव मा, ओखर घर मा जब खाना खाये लईका मन बैठते तो ओखर भोजन मा राखड ही मिलथे। जिसके कारण हमर परिवार अच्छा से भोजन नहीं ले पाये। भोजन मा राखड आवत हे, ओखर अच्छा से व्यवस्था बनाया जाये और बहुत ज्यादा आम जनता के हित मा ध्यान रखते हुये कार्य करे, ऐखर हमर एनटीपीसी द्वारा आप मन जो निर्माण करे, चाहत हव हमर विधानसभा के जनता के हित मा कार्य होवे। अगर कार्य नहीं होही तो गलत बात है। हमर ऐखर विरोध करबो। आप मन जनता के हित मा कार्य करा। हमर जनता हमर जन प्रतिनिधि पूरा साथ देही। जेकर नौकरी नहीं लगे है दर–दर भटकत थे। आप मन विशेष करके एनटीपीसी ला अवगत कराना चाहत हव। आप मन जनता के हित मा कार्य करके बहुत ज्यादा जनता परेशान हे, बहुत ज्यादा नौकरी नहीं लगे हे, दर–दर भटकत हे क्षेत्र के मन, हमर ग्रामीण मन भाई मन दीदी मन जेकर द्वारा हमन ला बहुत तकलीफ होवत हे। हमन क्षेत्र के जनता का समर्थन करते हुय ओखर हित मा ये बात रखत हन।

24. **श्री उमेश कश्यप कुर्मी, ग्राम–दर्राभाठा** :– मोर 7 मांग हवय एनटीपीसी से। मैं सबसे पहले पूछना चाहत हव एनटीपीसी साहब मन से एनटीपीसी मा जो अंदर मा रोड बनते, नाली–नाला वो एकदम क्वालिटी मा रहते। 3 महीना 6 महीना मा काम उखडथे। सीपत से बिलासपुर तक के स्ट्रीट लाईट काबर नई लगे है, ये नई लग सके क्या। एनटीपीसी महारत्न है, एनटीपीसी कब काम आही, एनटीपीसी के नाम होही, एनटीपीसी के साहब मन आप मन घोटाला के काम करथस, ये काम नहीं हो सकय क्या, हमन पूरा शुरू से एनटीपीसी के लडाई लडत आवत हन। लडबो हमर लडाई जारी रही। ये क्षेत्र मा ये नये यूनिट आवत हे ऐखर स्वागत है, 1 यूनिट क्या 10 यूनिट लग जाये। बशर्ते पूरा क्षेत्र ला, गांव गली ला, पूरा सब ला, चकाचक करे ला, पढही। अभी ध्यान है तो जाके देखा गांव वाला गाडी के तीर कभी गये हवा तुमन अंधेरा मा रस मलाई खावत हव, दोसा–ईटली। मजाक बना के रखे हवय क्या। एनटीपीसी हमर है, सीपत हमर है, क्षेत्र हमर है, पूरा छत्तीसगढ मा तुम्हर लईका ही पढे–लिखे हवय क्या एनटीपीसी मा हमर लईका नहीं पढे–लिखे हवय

क्या, हमर लईका मन हमर भाई–बहनी काहे बर नहीं लगे नौकरी खाली एनटीपीसी के साहब मन के लईम मन लगही नौकरी यही नियम बने है क्या तुमन बना देथा फाईल ला भेज देथा दिल्ली ओमा 100 मा 100 परसेंट करके। यहां जीरो परसेंट 5 परसेंट नहीं रहते। पूरा पूछ लो, जनता मन से, झूठ बोलत हव क्या। 1 यूनिट नही 10 यूनिट लग जाये प्रभावित गांव मा जितना बेरोजगार है ओला रोज रोजगार दिया जाये। दूसरा है छत्तीसगढ बिलासपुर जिले के लोगों को दर्जा दिया जाये। तीसरा मांग है आसपास के गांव मा नाली–नाला, पानी, ये काम ला आप मन काम ला कर सकत हव महोदय ये भी काम नहीं होवय। वो तालाब मा नहात, हा गंदा पानी मा और शंकर भगवान मा चढावत हा। ऐसा काम तुमन करथा क्या। बतावा न गा, जवाब देवा। छोटे–मोटे काम ला कर सकत हव भैया। ध्यान रखा नाम तुमर होही एनटीपीसी साहब मन के, एनटीपीसी के मजदूर मन ला 60 साल में निकलनाा। ओला रखा, ओला कुछ पेंशनवेंशन देवा, चाहे वोखर बेटा ला नौकरी देवा। वहां के मोर संविदा कर्मचारी मन के आसपास के ओ मन ला पूरा रखा जाये। राखड के जो दशा है ओला तुमन जानत हा। तुमन नहीं हमन जानत हा। छोटे–मोटे काम ला करके ध्यान देवा महोदय करना चाहिए आप मन ला और मैं कबतक बोलव हमन लडाई लडे थक गये है। ये बात ला बता देवा नई कर सकत तो फिर कोई कदम ला उठाबो, फिर आंदोलन करबो, मजबूर हो, जाबो देखथव।

25. **श्री धर्मेन्द श्रीवास्तव, ग्राम–कौडिया** :– एनटीपीसी सीपत में पहला प्लांट आया था। तब ये बात की गई थी, कि स्थानीय बेरोजगार है। उस समय भी हम लोग ये मांग की थी। हम लोगों को जीएम का पोस्ट नहीं चाहिए, अधिकारी का पोस्ट नहीं चाहिए। जैसी हमारी योग्यता है वैसी हमारे को काम दिया जाये। लेकिन उस काम में हल नहीं हो रहा है। आपके माध्यम से मैं एनटीपीसी को ध्यान आकृष्ट कराना चाहता हॅू। जैसे हमारे क्षेत्र के लोगों को योग्यता है वैसे हमको रोजगार दिया जाये। क्षेत्र का सर्वागीर्ण विकास एनटीपीसी के द्वारा किया जाना चाहिए। जो कि अभी आधा अधूरा है, उसको तीव्रगति से बना दिया जाये। हमेशा समस्या है हमेशा आश्वासन देता है कि एनटीपीसी से ये समस्या आपको सामने नहीं करना पडेगा। केवल आश्वासन ही स्थापित हुआ है अभी तक निजात नहीं मिली है। इस माध्यम से ध्यान आकृष्ट करना चाहता हॅू कि इसका त्वरित निराकरण किया जाये। सबसे बडा प्रमुख मांग है साहब हमारे एनटीपीसी में काम करने वाले बच्चे है। बिलासपुर जिले के बाहर के अधिकांश लोग काम कर रहे है, हमारे प्रभावित ग्राम में काम करने वाले बच्चे मौजूद है उनको नहीं रखा जा रहा है। उनको रोजगार दिया जाये। निश्चित रूप से मैं ये नहीं कहता हॅू कि एनटीपीसी के आने से क्षेत्र का

विकास हुआ है। ये मैं स्वीकार करता हूॅ। ये व्यक्तिगत मैं स्वीकार करता हूॅ कि एनटीपीसी के आने से क्षेत्र का विकास हुआ है। लेकिन जितना विकास हम सोचे थे, अन्य जगहो में देखे थे उतना विकास नहीं हो पाया है। आज इस मंच के माध्यम से उन विकास की ओर त्वरित कार्यवाही की जाये। मैं एनटीपीसी की तीसरी यूनिट का मैं समर्थन करता हूॅ।

26. **श्री अजय केंवट, ग्राम–मोपका** :– प्लांट में 4–5 साल से काम कर रहा हूॅ । जैसा कि 800 मेगावॉट आ रहा है, मैं इसका समर्थन करते है। क्योंकि मैं कुछ चीज बताना चाहता हूॅ कि हम लोग 2 साल पहले जाते है 2020–2021 का तो करोना महामारी सभी को अवगत होगा। उस दौरान हमारे जितने भी कर्मचारी भाई को एनटीपीसी सबको सहमत दिया था कि इस बार पैसा नहीं काटा गया था। जैसे महामारी के लास्ट समय में पैंमेंट दिया जा रहा था साथ–साथ में हम लोगों को राशन पानी भी दिया जाता है। इस सब को देखते हुये भविष्य के लिए मैं ये शासन से निवेदन करता हूॅ कि ये तीसरा यूनिट आ रहा है उसका मैं समर्थन करता हूॅ।

27. **श्री युगल किशोर राठौर, ग्राम–कौडिया** :– मैं एनटीपीसी में कार्यरत् हूॅ। एनटीपीसी से रोजगार का अवसर प्राप्त हुआ है। यहां रोजगार का अवसर मिला है एनटीपीसी के आने से अभी 2980 मेगावॉट चल रही है। स्टेज 3 का इसका भी मैं समर्थन करता हूॅ। क्योंकि इसके आने से क्षेत्र का विकास होगा। लोगों को रोजगार मिलेगा।

28. **श्री राजेन्द्र पाटले, ग्राम–जांजी** :– सीपत एनटीपीसी के आने से, कोला फायदा नहीं होये है, बोलत हे। जेखर पास मोटर साईकल नहीं रहीस वो कार मा चढत हे। मोर जमीन भी गये हे, मैं एनटीपीसी में काम भी करथव। 2001 के बाद मैं आज तक काम करत हव। प्रभावित गांव के मन अब पलायन भी नहीं जावत हे। मैं अभी प्लांट मा काम करथव। गाडी मोटर सब हे, कोई आपत्ति नहीं है। तीसरा यूनिट आना चाहिए और चौथा यूनिट का तैयारी भी करो। ऐखर समर्थन हे।

29. **श्रीमती गंगा बाई, ग्राम–दर्रीपारा** :– सातो गांव से ज्यादा है, हम लोग ही दलदल में फंसे है, बाहर के आदमी ठेका लेकर काम करत हे, छोकरी–छोकरी ला काम मा ले जावत हे। हमर मुंह पेट हे, हमर छोटे–छोटे बच्चा है हमन काला खाबो। बाहर के आदमी ला भगाना चाहिए काम से, हमन ला डोकरी कह के लौटा देथे। छोटे–छोटे बाल–बच्चा है क्या खाही। एक झन ला एनटीपीसी मा जरूर ले। लेवये

तो ठीक है नही ंतो एनटीपीसी बंद, चाहे जो भी हो जाये। एनटीपीसी नहीं खोलने देंगे। एक घर के एक झन ला काम मा ले। हमर राख गांव फंसे है। सबसे ज्यादा हमर खेत निकले हे। क्या खाबो हमन। बाहर के आदमी आत हे। जवान टुरी ला फोन करके बुलात हे। काम देना चाहिए रोजगार के लाईक ला रोजगार, नौकरी के लाईक ला नौकरी देना चाहिए। नई देहा तो सोच लेहा। एनटीपीसी नहीं खुलने देंगे। बाहर के आदमी कमावत हे, हमन घर मा बैठे–बैठे मुटुर–मुटुर देखत हन। कमाये नहीं हमन गरीब आदमी। बाहर के आदमी मौज करत हे। काम चाहिए, काम चाहिए। एनटीपीसी बंद।

30. **उपस्थित जनसमुदाय में से किसी व्यक्ति ने कहा** :– मैं दो बात रखना चाहती हूॅ अपना। आज से 20 वर्ष पहले बात करे, तो हम क्या थे, और अभी क्या हो गये है। हमारे भाई बंधु हम लोग अपने छोटे–छोटे बच्चे को लेकर अदर स्टेट जाकर काम करते थे। उनको कितना स्ट्रगल करना पडता था, उनको कितना परेशानी झेलनी पडती थी। हमें पता चला कि बिलासपुर सीपत में पॉवर प्लांट खुलने वाला है। उस बात से कितनी खुशी मिली होगी। हमको अदर स्टेट में जाकर काम नहीं करना पडेगा। अपने परिवार के साथ यहां पर रह करके काम में आ जा सकते है, और अपने परिवार का अच्छे से देखभाल कर सकते है, सोचिये उन लोगों को कितना परेशानी झेलना पढता था, और आज के डेट में कितना समस्या का समाधान नहीं हो रहा है, हम पढाई भी करते है तो रिजल्ट आने के लिए 1 साल लग जाता है। सभी का समस्या तुरंत समाधान तो नहीं हो सकता है, सब लोगो का धीरे–धीरे होगा। पॉवर प्लांट के आने से सूर्य के डूब जाने से हम बाहर जाने से भी डरते थे। कितना अंधेरा रहता है। कोई दुकान नहीं जाते थे। कोई कहीं पर भी नहीं जाते थे। प्लांट के आने से बाद हमें उम्मीद मिली है एक रोशनी मिली है। बिना रोशनी के आप क्या कर सकते हो। आज भी अगर पॉवर प्लांट बंद कर दोगे। बिना बिजली के आप के बच्चे लोग पढाई कैसे करेंगे। बिजली से चल रही है, स्कूल, कॉलेज, हास्पिटल बिजली से ही चल रही है। क्या सुविधा भी हमारे आसपास में कितना दूर–दूर से आकर हम लोग को काम करना पढता था। एनटीपीसी हम गरीबो की जान है।

31. **श्री भास्कर कुमार, ग्राम–बनियाडीह** :– मैं एक बेरोजागर युवा हूॅ। मेरे पिताजी गंगा राम के नाम से 1 एकड 3 डिसमिल जमीन एनटीपीसी द्वारा अधिग्रहित किया गया हैं जिस समय मैं बताना चाहूंगा मेरे पास बैग में मेरे पास लेटर है। हर साल प्रबंधक बदलता है उम्मीद की किरण जिस समय मैं पढाई कर रहा था 9वीं कक्षा में

तो ये बताईये उस समय मैं क्या नौकरी करता। उस समय मेरे को नौकरी नहीं मिला। उस समय के बाद हर बार प्रबंधक बदलता है तो मैं 3 बार प्रबंधक बदले है मैं तीनों का लेटर रखा हूॅ अभी उसमें बुलावा जाता है तो यहां पर आते है आवेदन जमा करते है। ये बोलते है भैया आपका आवेदन पहले से जमा है। पोस्ट खाली नहीं है, पोस्ट खाली होगा, तो सूचित करेंगे। मैं जानना चाहूंगा कि सर पोस्ट कब खाली होगा। स्टेज 3 आने वाला है, अभी तक बेरोजगारो को नौकरी नही मिला है। मेरा कुल 1.03 डिसमिल मेरा जमीन अधिग्रहित हुआ है। बनियाडीह से मेरे पास लेटर है। आईटीआई पास हूॅ एनटीपीसी बोलता है जो आप कोनी से मान्यता प्राप्त आईटीआई करे, हो कोनी सरकारी आईटीआई है उसका हम क्यू आईटीआई करेंगे। ये तो सरासर गलत है सर। हम शासन की योजना से पढ रहे है। उसके बाद भी हमें नौकरी नहीं दिया जा रहा है। ये गलत है स्टेज 3 नहीं आना चाहिए। क्योंकि हमारा विकास भी नहीं हो रहा है, अभी बताना चाहूॅगा सर अभी फिर से लेटर गया था, तो मुझे खुशी हुई ऐसा लग रहा था कि मेरा नौकरी लगने वाला है। मैं 31 साल का हो गया हूॅ। मेरा उम्र नहीं था जब से एनटीपीसी जा रहा हूॅ मेरा चप्पल घीस गया है। लास्ट टाईम लेटर गया, तो मुझे ये लगा इस बार मेरा नौकरी लग जायेगा। नया प्रबंधन आया है। नाम लेना नहीं चाहूॅगा मैं वहां बताया है कि हम आपको लेटर इसलिए दिये है। क्योंकि हम लोग देखना चाहते है कि आप लोग जी रहे हो कि मर गया है। वो लेटर जाता है यहां से वो इसलिए जाता है, हम लोग जी रहे है कि मर गये है उसका जानकारी लेना चाहता है एनटीपीसी। इस विषय को गंभीरता पूर्वक ले। स्टेज 3 लाये है अच्छी बात है उसके लाने से पहले उनको वरियता सूची मे नाम है उसको तो नौकरी दिया जाये। वरियता सूची में मेरा नाम है। उसके बाद भी मैं नौकरी के लिए दर–दर भटक रहा हूॅ और बोलते है कि आप कॉलेज कर लिये, आईटीआई कर लिये। वो मायने नहीं रखता, पहले भी भाई 2 घंटा से बोलते है और उंची पढाई करनी पडेगी। कितना उंची पढाई करे भैया हम गरीब आदमी। 2008 में मेरे पिताजी का देहांत हो गया। उसी बीच में दशग्रात्र में मेरे गांव के सरपंच राजकुमार बघेल जी लेटर लेकर गये। एनटीपीसी से लेटर आया है उस दिन मैं नाबालिक था। क्या नौकरी करता मैं आज लेटर आया है तो बोलता है पोस्ट खाली नहीं है, पोस्ट खाली नहीं है। मेरे को बतलायेंगे कि कब पोस्ट खाली होगा। ये जानना चाहूंगा। स्टेज 3 के आने के पहले हम बेरोजगारो को नौकरी दे। भूमिहीन को नौकरी दे।

32. **श्रीमती राजेश्वरी, ग्राम–कौडिया** :– जब ले एनटीपीसी आये हे तब से हमला बढिया काम मिले हे। हमन कमाथन। भाईमन ला बढिया काम मिलही, नौकरी मिलही और उहू मन बढिया कमाही।

33. **श्रीमती राजकुमार यादव, ग्राम–जांजी** :– एनटीपीसी खुले हे, तब से कमा–खात हे। बच्चे मनला पढाई लिखाई करवात हन।

34. **श्रीमती सतबाई गोस्वामी, ग्राम–रॉक** :– मोर मोहल्ला में दोनों मुडा राखड उडथे। गांव मा कीचड है, मोर गांव मा 1000 आदमी घूम रहा है, एनटीपीसी आया है उन लोग को काम चाहिए। लोगों को काम नहीं दे रहा है। एनटीपीसी आया है तो पूरा गंदगी हो गया है। हमको काम चाहिए, हमको रोजी चाहिए, महिला को काम दो पुरूष को काम दो। जनता को जहर पीला दो तब ठीक रहेगा। हम लोग जहर नहीं पियेंगे तो क्या करेंगे। हम लोग को उल्लू बना दिया है, जनता को सरकार उल्लू बना दिया है, आज इतना नहीं बनाता तो इतना काम जनता का होता। आज यहां जनता काहे को जुडता, काहे जुडता। आज जनता लडके लोग किधर रहे है हमारे गांव में 1000 जनता घूमता है हमारे गांव में कितना कीचड है। हम राखड खाकर जियेंगे की मरेंगे। उसको कौन देखेगा। 8 गांव को गोदनामा लिया है 8 गांव को काम काहे नहीं दे रहा है, बोल रहा है तो चिल्ला रहा है, बोल रहा है।

35. **श्री जितेन्द्र कुमार साहू, ग्राम–पोडी** :– मैं तो एनटीपीसी का समर्थन करता हूॅ, एक यूनिट और आना चाहिए, हमारे आदमी को रोजगार मिलेगा, हम लोग काम मांगने या नौकरी मांगने जाते है, तो कोई नौकरी नहीं देने वाला, एनटीपीसी में तीसरा यूनिट आये, मेरा समर्थन है।

36. **श्री गंगा प्रसाद कश्यप** :– यहां एनटीपीसी आना चाहिए, गरीबी हट जाय, हमारा गांव ऐसा गांव था बनियाडीह वहां काम बुता कुछ नही था, वहां बहुत गरीबी था, एनटीपीसी सीपत में आये है, तब से बहुत बेरोजगार को रोजगार मिल रहा है। हम लोग इतना अच्छा काम कर रहे है। अपने परिवार को पाल रहे है, बच्चे लोग को अच्छे से शिक्षा दे रहे है। केवल एनटीपीसी के चलते, तीसरा यूनिट को आने दे।

37. **श्री किसन यादव, ग्राम–मचखण्डा** :–जब से हमारे क्षेत्र में एनटीपीसी स्थापित हुआ है, हमारे क्षेत्र का विकास तेजी गति से हो रहा है, जिनको खाने को नहीं मिल रहा था, आज उनको खाने को मिल रहा है, सीपत का नाम रोशन हो रहा है, दुनिया में। ये जो किसान का मांग है, उनका समस्या का हल होना चाहिए, गरीब मजदूर

क्षेत्र वालो को मिलना चाहिए, जो समस्या है किसान का सुनवाई करे। 3 यूनिट आये इसका मैं समर्थन करता हूॅ। जिससे हमारे सीपत का आगे गति से बढेगा, सीपत का बात बोलना चाहता हूॅ। कि पहले यहां के लोग सोचते थे, कही से भी हो जाये विकास, जब से सीपत में एनटीपीसी में खुशियों का फूल खिला है हो जाये विकास ही विकास। सीपत की इस पावन धरती को मैं प्रणाम करता हूॅ, जिसके आचल में इतना बडा एनटीपीसी स्थापित हुआ है। अगर तीसरा यूनिट होगा तो हमारे क्षेत्र के लोगों को विकास और रोजगार मिलेगा। किसान का समस्या का हल होगा। छत्तीसगढ के वनों में हमेशा रहे हरियाली छत्तीसगढ को ध्यान में रखकर काम करोगे, तो हमेशा रहेगा हरियाली। ईमानदारी से मेहनत करोगे तो शान है कोई कह न सकेगा। सिर्फ एनटीपीसी शान है हमारे छत्तीसगढ का।

38. **श्री महेन्द्र कुमार साहू, ग्राम–सीपत** :– 2 एकड जमीन निकले है। अभी तक मोला काम नहीं मिलत हे। छत्तीसगढ वाला काम नहीं देवत हे बाहर–बाहर वाला ला बुला–बुला के काम देवत हे। झारखण्ड वाले के परिवार हे छत्तीसगढ के परिवार नहीं हवय। हमला काम नहीं देवत हे। मैं चाहत हव छत्तीसगढ वाले ला काम दे और गांव वाला ला काम दे। यही मोर बिनती है।

39. **श्री धर्म भार्गव, ग्राम–मोहतरा मस्तूरी** :– एनटीपीसी खुले हे, बहुत खुशी के बात है, आज तीसरा पॉवर प्लांट लगत हे, 800 मेगावॉट के मगर क्षेत्र के जनता मन के दुर्भाग्य है, दिया तले अंधेरा, बिजली तो हमर यहां बनत हे, हमला बिजली मिलत हे, मगर हमला फोकट मा राखड मिलत हे, देखर आये दिन रोड मा बडे–बडे वाहन से परिवहन होवत हे। ऐखर जिम्मेदार कौन हे एनटीपीसी हे, शासन–प्रशासन है। एक्सीडेंट होवत हे राखड से। आम जनता के जान जावत हे। ऐखर जिम्मेदारी कौन लेही। एनटीपीसी लेही कि शासन लेही कि हम जनता मन लेबो। ऐला माननीय महोदय संक्षिप्त मा बताही। बिल्कुल पॉवर प्लांट नहीं खुलना चाहिए। पर्यावरण के विशेष ध्यान दे, जो खुलत हे पहली के तीसरा के मांग होवत हे, मगर राखड ला देखत हव आये दिन उडत हे, ऐखर पहले उचित व्यवस्था कर ले, जनता संतुष्ट होही तो तीसरा क्या चौथा पॉवर प्लांट लगावा, तब सहमति देबो, नही ंतो विरोध है।

40. **श्री संतोष कुमार राठौर, ग्राम–कौडिया** :– आज तक के एनटीपीसी में कोई चीज का विकास नहीं हुआ है, किसान के हित के लिए कोई काम नहीं अभी नहर में पानी नहीं गया, पूरा खेती मर गया और नौकरी दे रहा हूॅ, नौकरी दे रहा हूॅ। कई बार आवेदन डाला हूॅ। आज तक मेरा कोई भी आवेदन का पता नहीं मिला, इसका

क्या आशय रहेगा, जितने भी है पूरा राखड में व्यस्त है। गांव से जो जमीन प्रभावित है। उसको रोजगार कुछ नहीं मिला है। इसके लिए आज तक के लिए न कोई पानी, बिजली चीज का व्यवस्था नहीं किया गया। गरीब को जीने का रास्ता दिखाईये। हमारा 95 डिसमिल जमीन निकला हुआ है। मेरे पिता जी है, आज तक मैं कई बार एनटीपीसी से लगाया हूॅ मेरा सुनवाई नहीं हुआ। अभी भी मैं पूरा कागजात रखा हूॅ। आपके सामने में। मैं कई बार मांग किया हो जायेगा, हो जायेगा। कब तक होगा, ये मेरे को बताईंगे सर। कब मेरा जगह खाली होगा। नहर भी पूरा खराब पढा है। हमारे गांव में रोड भी पूरा जस के तस पढा हुआ है। नहीं चल सकता आदमी रोड इतना खराब है। इसमें विशेष कर आप ध्यान दे। 8 गांवो का जमीन गया है सब बेराजगार, को नौकरी दिया जाना चाहिए। बेरोजगारी को दूर किया जाये। उनको सबको काम दिया जाये। यही हमारा बिनती है महोदय जी आपसे प्लांट बैठाये। हम विरोध नहीं करेंगे। लेकिन हमारे गांव का जो जमीन जितना गया है। उतना आदमी को रोजी रोजगार आपको देना पडेगा। बाहर–बाहर का आदमी आकर के यहां काम कर रहा है, हम नौकरी के लिए जाते है तो हटो यहां से लाओ यहां 20,000 व 40,000 पैसा लाओ। तब आपका काम होगा। ऐसा बोला जाता है।

41. **श्री जीवन लाल सूर्यवंशी, ग्राम–देवरी** :– मोर लडका आईटीआई कर चुके है, इलेक्ट्रिशियन के, 9 महिना में चल गया 2 बार आफिस में कंपनी से ऑर्डर आयेगा लेने का तो बतायेंगे, इतने करके मोला भेज देथे, मोर लडका एम.ए.बी..ए, इलेक्ट्रिशियन पास है, जल्दी से जल्दी 8 गांव के बेरोजगार लडका लडकी सबका नौकरी दे, रोजगार दे, नियम कानून के आधार पर।

42. **श्री डेविड कुमार, ग्राम–जांजी** :– मेरे पिता के नाम से 88 डिसमिल, मेरे दादा के नाम से 67 डिसमिल और मेरे दादी के नाम से 95 डिसमिल एनटीपीसी अधिग्रहण किया गया है। मैं ये पूछना चाहता हूॅ कि एनटीपीसी नहीं आया होता क्या मेरा दादा–दादी का जमीन है, मेरे माता के नाम नहीं आते क्या। वो तो मेरा पीढी का जमीन था वो तो मेरे नाम से आते। मेरे को साफ कह दिया है आप का 1 एकड़ से कम है, मैं ये सवाल पूछना चाहता हूॅ। यहां बिजली बोल रहे हो बिजली तो सीएसपीडीसीएल के द्वारा दिया जाता है। कौन सा यहां बिजली फ्री है। मैं पूछना चाहता हूॅ कि ये यूनिट का फैसला किस बेस पर होगा। जांजी रोड देख लो हॉल रोज 2 ठोक एक्सीडेंट हो जा रहा है, मैं पूछना चाहता हूॅ आपसे, मुझे अभी जवाब चाहिए, मेरे जमीन का क्यो नहीं जुड पाया।

43. **श्री सुभाष कुमार सिदार, सरपंच ग्राम–जांजी** :– एनटीपीसी आने के बाद विकास हुआ, गांव भी ठीक है अभी हमारे यहां रोजगार के लिए 8 गांव प्रभावित हुये है, जितने गांव प्रभावित हुये है सभी को नौकरी दिया जाये। 264 पद बचा हुआ है, जैसे जमीन दिया उस समय ये नहीं बोला गया था कि आप पढोगे तो नौकरी देंगे। उस हिसाब से से आज जो है। उनकी योग्यता के हिसाब से उनको नौकरी दिया जाये, दूसरा ये है हमारा क्षेत्र बहुत बडा है, हमारे सीपत में कोई हॉस्पिटल नहीं है, एनटीपीसी के द्वारा भी नहीं है, और गव्हमेंट के द्वारा उपस्वास्थ केन्द्र बस है, इसके लिए पहले सबसे पहले हॉस्पिटल का व्यवस्था किया जाना चाहिए, जैसे एनटीपीसी में हॉस्पिटल अच्छा से व्यवस्थित है। स्वास्थय के लिए ध्यान दिया जा रहा है। यहां एक भी हॉस्पिटल नहीं है हॉस्पिटल की उचित व्यवस्था करना चाहिए। जिससे हमारे क्षेत्र में पहले व्यवस्था हो। स्वास्थय का ध्यान रखते हुए। तीसरा यूनिट के लिए मैं समर्थन करता हूॅ।

44. **श्री श्याम लाल पटेल, सरपंच ग्राम–भिलाई** :– एनटीपीसी से जो बिजली उत्पन्न होती है, उसकी आवश्यकता तो सबको होती है, छत्तीसगढ़ को भी पूरा भारत को भी यहां अभी आगे का सबको सुनते आ रहा हूॅ, बोल रहे है हमारे गांव में ऐसा नहीं हुआ है, हमारे गांव में ऐसा नहीं हुआ है, केवल 8 गांव को ही प्रभावित कर रहा है एनटीपीसी, उसके अगल बगल गांव वाले को प्रभावित नहीं कर रहा है क्या। 8 गांव वालो को ही नौकरी देना है क्या। आसपास को नहीं देना है क्या। मेरे कहने का मतलब ये है जैसे कि हमारा ग्राम–भेलाई है, वहां डेम क्रमांक–3 रलिया के पास बना हुआ है, तो उसमें मार्च से जून तक बहुत परेशानी होती है, कि मैं माननीय महोदय से अनुरोध करूंगा, जो परेशानी है उसको दूर करने के लिए उपाय किया जाये, ये तो संभव नहीं कि बिजली को बंद कर दे या बिजली बनवाने को रूकवा दे। जो मूलभूत आवश्यकता है जो सभी को चाहिए, लेकिन मूलभूत आवश्यकता को देखते हुए साथ ही साथ जो परेशानी है, उसको दूर करना बहुत जरूरी है, जो हमारे पढे लिखे बंधु है जो भू स्थापित सूची में नाम है कृपया करके तत्काल कार्यवाही करने की कार्यवाही करेंगे।

45. **श्री निरंज सिंह क्षत्री, ग्राम–जांजी** :– एनटीपीसी में जो लोग कार्यरत है, ऐसे लोगों को संभवतः उनके अंडर में काम करते है, मुझे नहीं लगता कि उनका भी विचार लिया जाना चाहिए, वे उनके पक्ष में बोल ही नहीं सकते है, आज निश्चित रूप से हमारी बात होनी चाहिए, गांव में हमारी उपस्थित मूलभूत सुविधाये के लिए,

एनटीपीसी का खुला वाला विरोध नहीं था, वो तीसरा, चौथा, पांचवा, छठवा, पचासवा, सौव्वा, इसमें कोई प्रकार का दिक्कत नही, लेकिन हमारी आवश्यकताओं को ध्यान दिया जाये, मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति की जाये, जैसे एनटीपीसी में बिजली बनता है, कहते है दिया तले अंधेरा, पुरानी बात है। हमारे लिए लागू हो जाती है। तो निश्चित रूप से प्रभावित ग्रामों में एनटीपीसी द्वारा पानी, बिजली की व्यवस्था की जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त यूनिट खोलते है तो हमें कोई समस्या नहीं। कुछ–कुछ छोटी समस्याएं हो जाती है, जिसके द्वारा एनटीपीसी उनके द्वारा हमारा सहयोग नहीं दिया गया है, जैसे धार्मिक स्थल के नाम से बाहर ऐ चर्च बन रहा था। उसके लिए हम लोग ने बहुत बार आवेदन दिया। यदि मंदिर वहां बने, अंदर में तो उसमें क्यों दिक्कत नहीं है, बाहर क्यों दिक्कत हो रहा है। क्योंकि सहमति एवं असहमति में कोई दिक्कत नहीं है सर। अभी बात हुई थी पलायन नहीं होने की, मैं भी ग्रामीण क्षेत्र में रहता हूॅ, गांव में लोग पलायन किये है, कि नहीं सर एसडीएम, मस्तूरी निश्चित रूप से आप स्कूलो से सूची मंगवाईये। कितने बच्चे पलायन किये है अपने बच्चो को लेकर ईटा–भट्ठा के लिए तो आपको इसकी सूचना मिलेगी, आप एनटीपीसी महोदय आप अपना यूनिट बढाये, लेकिन हमारी जो जरूवतें है उनको पूरा करे। उसके बढाते रहे, जैसे राखड के कारण अत्यधिक धूल हो रहा है, एक्सीडेंट हो रहा है, उसके लिए निश्चित रूप से आपके द्वारा प्रयास करें, हमारा कोई विरोध नही होगा, जो रोड एनटीपीसी के गाडी चलने के कारण क्षतिग्रस्त हो गया है, जैसे मैं निवासी जांजी हूॅ, पहले हम नहरपारा से आवागमन करते थे, अभी नहीं कर पाते भाई अभी दूर से अवागम करथन भाई। हमको दूर सफर करना पडता है। अपने बच्चो को अगर सीपत भेजना चाह रहे है तो नहीं भेज पा रहे। निश्चित रूप से फ्लाई ऐश ब्रिक्स एवं अन्य गाड़िया चलती है, तो उनको भी व्यवस्थित कराया जाये। जैसे भाई ने कहां कि दमा की संख्या, मरीजो की संख्या बढ रही है, गाडी के बाद धूल इतने हो रहे है, आप आये तो संभवतः पानी डाला गया रोड में, आज पानी डाला गया है, बाकि दिन ऐसी करते तो हमको शिकायत नहीं होती, ये डेम से जो जल एकत्रीकरण होता है, उसमें भी टीडीएस का लेवल इतना बढ गया है, लोगों में प्रॉबलम बढ गई है। तो कहीं न कहीं उसकी व्यवस्था अच्छी करें, खोले, हमें कोई समस्या नहीं है, निसंतान और जिनके लडकी है जिनका विवाह हो चुका है, ऐसे लोगों को 1 एकड से जमीन नहीं है, उनका सूची में नाम नहीं है उनको नौकरी नहीं दी गई है 596 लोगों मे से निश्चित रूप से उनको पहले आप आगे आपका समर्थन करें, मैं जांजगीर से कौडिया जाता हूॅ सर रेल लाईन वहां पर बना है वहां पर एक से देढ घंटा पटरी पर खडा कर दिया जाता है। जिससे दोनों लाईन बाधित हो जाता है। य तो वहां अंडर ओव्हर ब्रिज

बनाये, उसके बाद विकास करो, हमको कोई समस्या नहीं है। बाहरी लोग के आने से हमारे यहां आने से क्राईम में बहुत वृद्धि हुई है। सारे लोग है यहां पर उनसे आप पूछ ले। एक्सीडेंट के संख्या में क्राईम के संख्या में वृद्धि हुई है। किसानो को जो समस्या हो रही है तो बारिश की आवश्यकता नहीं होती है तो हो जाता है। जब आवश्यकता है तो नहीं होता, एनटीपीसी का भाप बनता है, जो स्पेसली यहीं कभी बारिश हो जाता है तो कभी बारिश नहीं होता। जिससे किसानों लोग प्रभावित होते है। तो निश्चित ही किसानों को मुआवजा देने की आवश्यकता एनटीपीसी करे। उसके बाद विकास करें हमको कोई समस्या नहीं। एनटीपीसी में मैनटनेंस और ठेका कर्मचारी है यदि एनटीपीसी 1 एकड के कम के कर्मचारियों को एनटीपीसी में जॉब नहीं दे पा रही है, तो कम से कम ऐसी व्यवस्था तो करे कि ठेकेदार में उनको ठेका दिया जाये, जिसमें ठेका कर्मचारी है उनको ठेका के रूप में लिया जाये, उसके बाद आप विकास करते है तो हमको बिल्कुल कोई समस्या नहीं है। आप स्थानीय लोगों के रक्षक भी है, तो निश्चित रूप से आप हमें गारंटी दे, तो उसके बाद इस यूनिट का आप विस्तार करते हैं तो हमको कोई समस्या नहीं होगी। बिजली पानी अनिवार्य रूप से मूलभूत सुविधाएं है। इसको उनको दिया जाये।

46. **श्री दिलहरण सिंह डोंगरिया, ग्राम–जांजी** :– बहुत बढिया बात है, कि छत्तीसगढ आईस, हमू कहे कि हमला रोजी–रोजगार मिलही। खेत का ले गये। हमर बेटा नौकरी मा जाही। कहां जाही गा, यहां तो बाहरी आदमी आकर राज करत हे। ओखर कुकुर झेकाये के हमर प्रापर्टी हे छत्तीसगढ के, धरती मा खडे हे, चल अंदर जाना नहीं हे। हमर दुर्भाग्य हो गये वही पर ददा। मोरो निकले हे 30 डिसमिल, लेकिन मोर लईका बढिया पढ–लिख गये हे। निकले हे। मैं 2022 मा दिये हव 2025 लगने वाला है। तोला नहीं कहव सरकारी नौकरी मा रख। ओखर योग्यता देख के कुकर झुकाये मा रख। हकाले बर रखे कम से कम, आन गांव के आदमी हमर गांव में राज करत हा। बिहारी, बंगाली मन वहीं हमन जीयत रहिन हे। 8 गांव पूरा प्रभावित हे। ये सब का नहीं दिये है जमीन ओहू ला दे कुछू काम बुता। निकले है पूरा प्राथमिकता चाहिए। 1 एकड निकले या 5 एकड निकले।

47. **श्री अनिल कुमार गंधर्व, ग्राम–रॉक दर्रीपारा** :– सबसे पहले शुरूवात करहूँ, राखड से, जिसका कन कहत रहीस की समर्थन है, समर्थन है, ओला मैं ये कहना चाहत हव कि राखड खाये के दर्द क्या होथे, एक बार मोर मोहल्ला में आकर महसूस कर के देखव, फिर समर्थन देवा, मोर गांव के 4 हैंडपंप हैं मात्र मैं पानी लाये हव। ये पानी के निरीक्षण करवा और देखा कि ये पानी कितना सही है, कितना गलत हे।

ये पानी ला लेवा और निरीक्षण करके देख लेवा, कि ये पानी कितना साफ हे, कितना गंदा। मोर घर के दूरी, मोर मोहल्ला के दूरी, डाईक 1 ये 30 मीटर की दूरी मा है। एनटीपीसी से, मैं सवाल करना चाहत हव कि 30 मीटर की दूरी मा डाईक खडा करना क्या सही है या गलत है, ऐखर जवाब लेहे बर आये हव, लेकर ही जाहू। चौथा बात है सर रोजगार के, रोजगार मा सबसे ज्यादा प्रभावित है दर्रीपारा, सबसे ज्यादा रोजगार मोर गांव के मोर भाई मन है, हम नहीं कहत हन कि हमला प्लांट के अंदर मा नौकरी दे, 3 ठोक डाईक हमर गांव के अंदर मा हे। ओई मा कुली कबाडी दे दे। कुली कबाडी भी मिलना मुनासिब नहीं है, पांचवा मुद्दा है मोर आज से हमन 6 माह स्ट्राइक करें, जिसमें त्रियपक्षीय वार्तालाप होईस, गांव के प्रमुख आदमी रहीस, ओमा लीपा–पोती हो गये, ओमा 6 महीना हो गये, अभी तक पूरा नहीं होये हे। मैं ऐखरो जवाब सुनना चाहत हव, कि हमर हडताल के 6 महीना हो गये, 6 महीना हो गये, अभी तक जवाब काहे नहीं दिस। राखड उडते एनटीपीसी प्रबंधन बोल थे कि हमन घास लगवाये हन, स्प्रींकलर्स लगवाये हन। ऐखर बावजूद भी क्या राखड उडना बंद हो गये हे क्या, 10 की स्पीड अगर हवा चलही तो मोर घर मा आके देखीहा क्या स्थिति मा हमन जीवन–यापन करथन। 10 के हवा ही हमर जीना दुर्भर हो जाथे। 04 महिना या साल भर के बाद ही जैसे राखड के सीपेज मा खेत हा दलदल हो जात हे, ओखर मुआवजा किसान मन ला एकड के हिसाब से मिलथे, हमर यहां 4 महिना बाद बारिश होही। दीवाल हे 3 फीट तक ला दीवाल मा सीपेज आ जाथे। मैं एनटीपीसी प्रबंधन से और सरकार से अनुरोध करहू कि हमर घर के सुधार करें, या हमला पक्का मकान मुहैया कराये। ऐखर बाद जो ये नया यूनिट खुलने वाला है, ओखर मैं समर्थन करे बर मैं तैयार हव। मोर मांग पूरा नहीं होही, तो हमर 8 गांव पूरा पूरजोर विरोध करही। ऐखर जिम्मेदार सिर्फ एनटीपीसी और प्रबंधक रही।

48. **श्रीमती फोटोबाई, ग्राम–रॉक दर्रीपारा** :– कतना दिन हो गये बोलत, बोलत, थक गये, कोई हमर भात, बांसी मा पूरा सब मा राखड रहते। जतका लईका होथन सब बीमार पडत हन। एनटीपीसी हमला निहारत नहीं हे, लडाई लडत–लडत पूरा थक गये हमन, हैंड पानी के पानी पूरा पीला, बरसात आवत हे, बदबू आथे पूरा सडाइन–सडाइन ला पीयत है, ऐखर कुछ निर्णय होये कि नहीं। बाल बच्चा मन मरत जावत हे, इलाज पानी नहीं होवत है, कुछ नहीं होवत हे। रोड के 10 मीटर नहीं है दूरी, एकदम हाईवा चलत हे, राखड उडत जावत है। कोई नहीं सुनत हे अभी 4–5 दिन पहले मांग करे रहन कोई नही सुने हे। देथे–देथे। हैंडपंप के मांग करे रहे दर्रीतालाब मा, ओ भी नहीं होये। अभी जो कहे रहे वो भी नहीं हुईस।

नौकरी निकाले हे ओ भी नहीं होईस, देंगे बस देंगे बस ऐसे कहत हे। कब देहे, क्या करही। बोल–बोल पूरा थक गये है भाई।

49. **श्री जागेश्वर कश्यप, ग्राम–बनियाडीह** :– मैं ये उम्मीद के साथ स्टेज 3 के समर्थन करत हव की सब के मांग ला पूरा करीहो यथा संभव।

50. **श्री उत्तम डोंगरे, ग्राम–नवागांव** :– तीसरा यूनिट का समर्थन करता हूॅ। पहले हम काम करने बिलासपुर जाते थे। लेकिन आज हम लोग को यही पर काम मिल रहा है। ये सबसे बडी बात है सीपत क्षेत्र लोगों को गर्व होना चाहिए कि यहां एनटीपीसी है।

51. **श्री राहुल सिंह, ग्राम–मस्तूरी** :– अभी सबसे बडी समस्या है बेरोजगार युवा मन के मैं चाहत हव कि स्टेज 3 खुले। ओखर समर्थन करत हव। लेकिन हमर बेरोजगारी हे ओखर समर्थन पहले होना चाहिए। स्थानीय युवा मन ला नौकरी मिले।

52. **श्री राम गोपाल साहू, ग्राम–बिटकुला** :– सबसे पहले यहां पर जो हमारे माता–बहने उपस्थित हुई है, हमारे कृषक भाई उपस्थित हुये है उनकी समस्याओं ध्यान से सुनकर गंभीरता से सुनकर उनकी समस्यओं का समाधान किया जाये। रहा सवाल विकास की तो एनटीपीसी आने से बहुत सारी फायदा मिली है इसमें कोई सक नहीं, एनटीपीसी का जो लक्ष्य है उनको बताना चाहता हूॅ, 9 प्रवक्ता सुरक्षा द्वारा संचालित रहते हुये पर्यावरण हितेषी तरीके से ग्रामों को विद्युत प्रदान करना, यहां पर ये निश्चित रूप से सत्य है कि पर्यावरण को गंभीरता से लेती है एनटीपीसी, जो तीसरा स्टेज आ रहा है, उसे हमे कोई प्रॉबलम नहीं है ब्लकि आना चाहिए, बशर्ते समस्याओं को जल्दी से जल्दी समाधान हो, से लेती है स्टेल 3 आना चाहिए।

53. **श्री उत्तम कुमार धीवर** :– 2002 से मैं एनटीपीसी में काम कर रहा हूॅ, लेकिन जो गरीब है, जिनका जमीन है, उन लोग को काम नहीं मिल रहा है, उन लोग को काम देना जरूरी है।

54. **श्री नवल किशोर** :– मैं एतना कहना चाहत हव। कि हमर एनटीपीसी खुले हे, हमला घाटा है, मुनाफा है, वो हमला मालूम है। मगर सत्य एक ही बात है, आदमी नीचे से उपर जाते है, कि उपर से नीचे आते है, मोला येई ला बता दे, पहली ले आठवी पढते कि आठवी से पहली पढते। ये नियम बर गलत नियम हो गये हे।

हमर 1 डिसमिल जमीन गये हे, हमला भी आसरा हे, हमरू मन के लईका पढे–लिखे हे, पलम्बर हे, आईटीआई किये हुये हे। समझो ओहू ला नौकरी चाहिए। आवेदन नहीं लगाये हा, लगाये हव आवेदन ला ओही आवेदन निरस्त हो गये हे। वोही पूछना चाहत हव कि पहली ला आठवी पढे है कि आठवी से पहली पढे हे, सरकार बने हे। येही ला पूछना चाहत हव।

55. **श्री गंगा प्रसाद, ग्राम–रॉक** :– मैं प्रभावित गांव मा रहथव, मोर लडका नौकर करत रहीस हे, 10 दिन हो गये, मोर लईका के देहांत हो गये हे, मोर आवेदन ला ये नई बताईस, मोर जानकारी मा बहुत आदमी के कर्मचारी खत्म हो गये हे, सबला नौकरी मिले हे। बहू ला, ओखर बेटी ला, ओखर घरवाली, ला मोर बर कोई सुनवाई नहीं रहीस हे। मैं बार–बार निवेदन करे रहव। मोर लडका के देहांत हो गये हे, मैं दर–दर के ठोकर खात हव। मोर बाल–बच्चा ला नौकरी देदवा।

56. **श्री अखिलेश यादव, ग्राम–कर्रा** :– प्रभावित गांव से जो किसान आये है, गांव से आये है, किसान लोग प्रभावित उनको कम मौका दिया जा रहे है।, एनटीपीसी के अधिकारी लोग बाहर में है। अपने मजदूर जो काम कर रहे है, उनको सिखा–सिखा के भेजा जा रहा है, मेरे को भी एक अधिकारी महोदय बोल रहा था, भाई आप लोगों को समर्थन में रहना है समर्थन में बोलना है, सीखा–सीखा के ये क्या धंधा है सर। मैं ग्राम कर्रा का हूॅ, और वहां का जनप्रतिनिधि हूॅ, चाहूंगा कि 5 मिनट में अपने गांव का स्थिति दिखाऊ। क्या स्थिति है, एनटीपीसी पिछले बार मेरे गांव में, पिछले बार एनटीपीसी से 40 लोग को लिया गया था। मेरे गांव का फसल नुकसान हो रहा था, तो शिकायत किये तहसीलदार, एसडीएम से उनका निरीक्षण तो करा, लेकिन आज तक उसका किसानो को मुआवजा नहीं दिया गया। कभी भी डेम का पानी किसानों के खेत में छोड देते है, नुकसान हो रहा है, किसानों का धान सड रहा है, एनटीपीसी कभी भी गांव वाले का हित में काम नहीं कर रहे है, इसका हम बिल्कुल विरोध करते है, एनटीपीसी अपने बच्चे के लिए इतना सुंदर बाल भारतीय स्कूल बनाया है, मॉर्डन स्कूल बनाया है, ऐसी हमारे गांव के बच्चो के लिए गरीब बच्चो के लिए बाहर में स्कूल बनाये। शिक्षा दी जाये। एनटीपीसी में जाकर देखो एक लाईट खराब होता है, तो तुरंत दूसरा दिन बदल जाता है, मेरे गांव में सौर ऊर्जा वाला लगा है लेकिन 2 से 3 महीने से बंद है, किसी गांव का लाईट नहीं जलता, हम अंधेरे में रहते है, सौर ऊर्जा का शिकायत करते है, तो मैकेनिक जाता है तो क्या करते है बंद हो जाता है, हम लोग कोई समस्या लेकर जाते है, इनका गेट में हमसे दुर व्यवहार करते है, हमको घूसने जाने नहीं दिया जाता है। हमारे

गांव के मजदूर आज भी खाली बैठे है, बाहर–बाहर से मजदूर लाकर काम कराते है। ऐसा हम लोग बिल्कुल नहीं सहेंगें, हमारे साथ अत्याचार हो रहा है। न हमारे गांव में न नाली का व्यवस्था है न पानी का व्यवस्था है न स्कुल का व्यवस्था है। खाली एनटीपीसी अपने लिए करते है, प्रभावित गांव के लिए नहीं करते है। कुछ अपने क्षेत्र में दलाल रखे हुए है, एनटीपीसी वाले जो दलाल उनका समर्थन करते है। ऐसे दलाल लोग से बच के रहो। बिल्कुल ऐसा हम इसका विरोध करते है। प्रभावित गांव में अच्छी शिक्षा दी जाये, स्वास्थ्य का बडा हास्पिटल बनाया जाये जैसे अपने लिए सारी चीज जैसे सुविधा है। गांव में क्यो नहीं सुविधा देंगे। 8 गांव प्रभावित नहीं पूरे क्षेत्र में ध्यान दिया जाये, यही हमारा मांग है। जब तक नहीं होता है तब तक इसका हम पुरजोर विरोध करेंगे, बिल्कुल नहीं खुलना चाहिए, नया यूनिट बिल्कुल नहीं आना चाहिए, हम सब इसका पुरजोर विरोध कर रहे है।

57. **श्री राम स्नेही कमल, सरपंच ग्राम–खाडा** :– आज जन सुनवाई कार्यक्रम हो रहा है, एनटीपीसी में दूसरा यूनिट प्रारंभ करने के लिए आज जन सुनवाई कराया गया है, लगता है मुझे इस तरह की जन सुनवाई एनटीपीसी द्वारा सिर्फ एक औपचारिकता के लिए किया जाता रहा है, हमारे गांव के प्रभावित जो साथी है, उन लोग जो एनटीपीसी से प्रभावित है, जो मिलना चाहिए वो नहीं मिलता है। बाहर से लोग जिस–जिस पोस्ट में खाली रहता है वो–वो भर्ती किया जाता रहा है, ये हमारे क्षेत्र के लिए घोर अन्याय. है। हम इसका घोर विरोध करेगें। आज भी जो हम सब इकट्ठा हुए है, लगता है ये भी ऐसी प्रयास है औपचारिकता ही लगता है, आपको निवेदन के साथ कहना चाहूंगा कि जैसा कि एनटीपीसी के साथ हमारे सभी गांव है जो सुविधा होना चाहिए, जो हमारे पूर्व वक्ताओं ने कहां, मैं भी उनकी बातों को समर्थन करते हुए हूॅ, मैं धन्यवाद करता हूॅ कि मैं भी प्रभावित परिवार से हूॅ, मेरा भी 45 डिसमिल गया है, एनटीपीसी मे विकेंसी आती है तो हमारे पास लेटर जाता है। लेकिन होता कुछ नहीं है कि ये व्यक्तिगत 5 साल से होते आ रहा है।

58. **श्री तुषार चंद्राकर, ग्राम–दर्राभाठा**ः–मोर गांव म एनटीपीसी ले एक नाला निकाले गये है, जेन नाला म एनटीपीसी के जितना भी गंदा पानी हे, चाहे नाली के हो, चाहे सेप्टिक के पानी हो, ओ नाला म डाले जाथे। अउ ओला डाले के बाद ओ सीधा नदी म जाथे। नदी के किनारे के बहुत से परिवार नदी के सहारे म रहत हे। मैं चाहत हव के ओ नाला के जेन पानी हे ओला फिल्टर करके भेजे। फिल्टर के जगह भी बनाये गए हे, लेकिन ओ फिल्टर ओ पानी नई हो पाए, अउ सीधा नदी म पहुचथे, जेखर लिए बहुत ही दूषित होवत चलत जात हे, दूसरा बात ये है हमर

गांव मा नाला बनीस त बड़े–बड़े बम से पत्थर मन ल फोड़ेगीस। पत्थर फोड़े रहीस ता ओमा बहुत बड़े बड़े दरार आए हे। दरार आए म गांव के जम्मो स्त्रोत हे तेन मन म नाला के पानी सीधा जाके प्रवाहित होत रईथे। अउ ओखर लिए हमर गांव म बड़े–बड़े बीमारी भी आए हे। कलेक्टर ऑफिस म आवेदन दिए हन। तहसील म भी आवेदन दिए हन। जतका कार्यालय हे, हर कार्यालय मा आवेदन देके रखे हन। महोदय प्रभारी मंत्री के द्वारा एक करोड़ रूपय नल के योजना लाएगे रहीसे। नल आधा बने हे। आधा गांव म चलत हे। पूरा कम्पलीट नई हो पाए हे। जब ओ नल पूरा गांव बर बने हे। त पूरा कम्पलीट होना चाहिए। अउ एनटीपीसी के आए ले हमर तरफ के जनता मन ल काम मिलत हे। सबके घर म रोजगार मिलत हे। चल ठीक है दो चार झन के गांव म रोजगार मिल जाथे, लेकिन काम एनटीपीसी के नाम से नई मिले, पैसा के नाम से मिलथे। एकर बर पचास हजार घुस देथे तब कहीं जाके एनटीपीसी म काम मिलथे। हमन घुस देथन जब जाके एनटीपीसी म काम मिलथे। अउ आधा पैसा ठेकेदार के द्वारा ओमन के पैसा ल वापस लिए जाथे। तक कहीं जाके ओ साल भर काम कर पाथे। साल भर काम करे के बाद एक लाख रूपए दिए के बाद वो निकल जाथे। अउ हमर बीच म आज एनटीपीसी के बहुत–झी कर्मचारी मन आए आए हे, ओ भाई मन से मैं निवेदन करत हव कि तुमन ईहा ले चल देवा, काबर तुमन अपन समर्थन करत हा। तुमन क्षेत्र के समर्थन नई करत हा। तुमन आए हव, का चीज बर आए हव, अपन रोजी मजदूरी ल बचाय बर आए हव। मोला पता हे तुमन ल ओ हन धमकी देय हे, के तुमन ल राखबो आज काम म। तुमन एनटीपीसी के समर्थन करो कईके। तुमन चुपचाप चल देवा। एनटीपीसी के समर्थन मत करा। काबर ये एनटीपीसी के खातिर हमर पूरा क्षेत्र परेशान हे, जेन ये राखड उड़थे। हमर घर मा जाथे। लइका मन खाथे, ओ राखड़ ल। अउ हमन जब बीमार पड़थन, हमन ल पता हे हॉस्पिटल म बिल चुकाथन तेन ल। राखड़ इतना जादा उड़त हे इतना ज्यादा उड़त हे के हर घर में एक एक दो दो अस्थमा के पेसेंट बड़ चुके हे। मैं महोदय जी से निवेदन करत हव के जेन मैं बात रखे हव बहुत जल्द से सुनवाई करे जाए। अउ मोर हिसाब से ऐला तत्काल निराकरण करे जाये। अउ निराकरण नई होही त हम एखर लिए विरोध करबो। अउ मैं एनटीपीसी के पूरा विरोध करत हव। अउ आगे भी विरोध करबो। ये अंग्रेज शासन एनटीपीसी म नई चलए। पूरा एनटीपीसी अंग्रेज शासन के तरह जेन अंग्रेज कई सौ साल ले हमर भारत म राज करे, हे ओही राज आज सीपत म करत हे, ये राज ल हम खतम करबो। मैं वादा करत हव अगर भगत सिंह बने ल पड़ही त भगत सिंह भी बनबो। लेकिन ये शासन हे जेन एकर कानून हे तेन ल खतम करे। एनटीपीसी कॉलोनी के अंदर एक एसबीआई के बैंक है, स्कूल है। ओ दोनों ल बाहर किये

जाये। आम जनता जब खाता खोले हन जब जाथन पैसा निकाले बर त हमला कुकुर असन भगवा देथे। क हमला अधिकार नई है एनटीपीसी के अंदर म जाके पैसे के लेनदेन कर सकन, का हमन ला अधिकार नई हे का एनटीपीसी के उच्च शिक्षा ल प्राप्त कर सकन, का हमर क्षेत्र के लइका मन वहां के कार्स ल कम्प्लीट नई कर सके। ए चीज के मैं जवाब चाहत हव। अउ मैं पूर्ण विरोध करत हव।

59. **श्री तीजराम सूर्यवंशी, ग्राम–सीपत** :– आज तीसरा यूनिट के लिए, जो जन सुनवाई रखे गये हे। ऐमा सब लोग बात रखे हे, बहुत सारा समस्या क्षेत्र के बताए गए हे, मैं एक दो बार हडताल भी करे रहेव कंपनी के विरूद्ध म। अउ हड़ताल करे रहन त बहुत सारा बात ल रखे हवन जेन मांग रहिस गांव के बेसिक समस्या हवे। अउ कुछ पूरा होईस, अउ कुछ जो पेन्डिंग है। जब क्षेत्र म बड़े कंपनी आथे त क्षेत्र के विकास होथे। छत्तीसगढ़, सीपत के नहीं पूरे भारत म बड़े बड़े कार्पोरेट आथे त विकसित देश के नाम से जाने जाथे और क्षेत्र के जो समस्या हे, रोड म हाइवे चलथे त धूल उड़थे तो मैं एनटीपीसी के प्रबंधन ल फोन करथव के भईया रोड म पानी डाले जाये। एनटीपीसी द्वरा रोड म पानी के छिड़काव किये जाथे। एनटीपीसी आना चाहिए ऐकर मैं स्वागत करत हव। लेकिन जो समस्या है, ओ समस्या के समाधान एनटीपीसी के प्रबंधन ल बोलना चाहत हव के ओकर विशेष ध्यान आकर्षित कराना चाहत हव। ओकर समाधान पर विशेष ध्यान दे। बहुत सारे समस्या के समाधान कराये के कोशिश करे हव। मैं समर्थन करत हव। पानी की समस्या, राखड के बहुत ज्यादा समस्या है। ओकर बर निरंतर आवेदन पंचायत के माध्यम से करे हन। मैं इसलिए विरोध नई करव के बिजली के बिना नई रह सकव। एनटीपीसी विद्युत आथे। समस्या के समाधान करे। लोगों को रोजगार दे। योग्यतानुसार जितना भी प्रभावित लोग है उसे रोजगार दे। मैं समर्थन करता हूॅ।

60. **श्री शुभम यादव, ग्राम–कर्रा** :– आज का जो कार्यक्रम है, उसका नाम जनसुनवाई नहीं, एनटीपीसी कर्मचारी सुनवाई रखना चाहिए, क्योंकि जितना भी आके जतका बोले हे ओ जनता नहीं एनटीपीसी का कर्मचारी है, अस्सी परसेंट लोग। मेरा गांव कर्रा है, कर्रा में पहला वाला डेम है उधर का पूरा मेरे गांव तक गया हुआ है कर्रा में, मेरा गांव कर्रा में सीपत से आना जाना करते थे डेम से ओ रास्ता भी डेम को बंद कर दिया गया है। मेरे गांव के लोग लात मार के भगाये थे, सीआईसीएफ वाले लाठीचार्ज किये है कई बार और रास्ता बंद कर दिये है, तो एनटीपीसी क्या है अपना काम बनता भाड़ में जाए जनता। काम बनने के बाद खुल जाता है। बिहारी लोग आये है मैं खुल के बोलना चाहता हूं मेरा भाई है ये जित्तू उसका ट्रेक्टर हम

लोग लगाए और ओ जो बिहारी भाई लोग आया था हमारा एक लाख अस्सी हजार बचा है और ओ भाग गया है और फोन लगाता हूं तो आज कल करके घूमाता है, तो इसका भरपाई कर पाऐंगे क्या। अट्ठारह करोड़ अईसी ही आरहा है तो एक लाख अस्सी हजार क्या चीज है। उसका भरपाई करों। मेरे गांव कें 50 महिला काम करने लगरा जाते है पैदल। अगर एनटीपीसी में काम मिलता तो क्या वहां काम करने जाना पड़ता। आज एनटीपीसी के रहत ले गांव के महिला मन जेकर छोटे–छोटे लईका ल लेके पैदल लगरा तक जाते है। जब एनटीपीसी हा जनता के अतका सेवा करत हे ता ओमन काय बाहर जावत हे ऐला बतावा। तुहर एनटीपीसी म जतका बाहरी आदमी भरे हे, अउ बाहरी आदमी आके हमला आंख दिखात हे। समय आही त तुहर दुनो आंखी ल निकाल के फेक देबो। आईटीआई कर दुनियादारी कर कहिस। लाइका ओकर रिजल्ट अउ का कथे जानथस एक लाख रूपया देबे का तोर काम लगही। आज मोला एक लाख देहे के औकत रईथिस का काम बर काबर गिड़गिड़ातव। तुम्ही मन ल काम करईया नई रखे रईथव एक बात के बात। मोर भाई हे ओला आज कल आज कल करके घुमात हे आज तक नौकरी नई लगे हे। त तुमन बंगाली, बिहारी मन ल रखे हव का।

61. **श्री विवेक सतनामी, ग्राम–धनिया** :– एनटीपीसी आए हुए लगभग 20 साल हो चुके है, लेकिन 20 साल बाद लगभग, 20 साल बाद हमन ल काम में रखीस, भूविस्थापित तारपोलिन के नाम से, अउ तारपोलिन म का काम करत हन हम तारपोलिन खीचे के, त एजुकेटेड होके, अकता पढ़े–लिखे होयके का मतलब है? त ईहा एनटीपीसी म आज 20 साल बाद काम म रखीस। ओहू म का काम म तोरपोलिन खीचे बर। एक महीना में के ड्यूटी देथे 17, 18 डयूटी। 17, 18 ड्यूटी ओहू म ठेकेदारी म रखे हे, अनस्कील्ड म। 1 एकड़ हे तेखर सब जगह करत हे एनटीपीसी ह। 1 एकड़ म 1 डिसमिल भी कम हे ओ बिचारा मन कहां जाही। स्थानीय नागरिक मखर का करण से भर्ती नई होवत हे एनटीपीसी म। कम से कम 10 हजार मजदूर उत्तरप्रदेश, बिहार के भरे है। सुपरवाईजर ठेकेदार बन बन के, हमर स्थानीय भाई मन ल मौके भी देके देवा तो भाई। स्थानीय मन भी कर सकत हे। स्कील के कमी है, टेक्नोलॉजी के कमी है, तुमन प्रशिक्षण देवा, प्रशिक्षण म हमन पास होबो ओकर बाद हमन ल नौकरी म रखा। अनपढ़ की तरह मत रखा। जेकर जैसे–जैसे शिक्षा हे, ओकर हिसाब से नौकरी म रखा भाई। मैं भू–विस्थापित हव काम करथव, 17, 18 हाजरी मिलथे। तीन साल काम करत हो चुके हे, तो मैं एनटीपीसी के महाप्रबंधक से विनम्र निवेदन करत हव कि ऐमा ध्यान देवे। जमीनधारी है जैसना–जैसना पढ़ाई लिखाई है, जैसना–जैसना स्कील है ओकर

माध्यम से प्रशिक्षण देके काम म रखे। एनटीपीसी अतना बड़े संस्थान है, कि विश्व में दूसरा तीसरा म हे, का ऐकर पास रोजगार के कमी है, कोई पैसा के कमी है क्या। छत्तीसगढ़ में आपदा है भण्डार है सब चीज है लेकिन छत्तीसगढ़ के जनता मन ल कोई लाभ होवत है का। केवल बाहरी मनके लाभ होवत हे। स्थानीय लोकल के सबके भर्ती होना चाहिए, कलेक्टर महोदय मैं आपसे विनम्र निवेदन करना चाहत हव कि जेन भी भू–विस्थापित है सबले पहली मान्यता ओही मन ल मिलना चाहिए। ओकर बाद दूसरा तीसरा के हे तोन मन ल। आशा करत हव के बहुत ध्यान दे हव।

62. **श्री संदीप कुमार, ग्राम–सीपत** :– हमन के दू–तीन ठो जमीन निकले हे। एक ठी म एक एकड़ ब्यालीस डिसमिल निकले हे, अउ एक ठी म एक एकड़ छब्बीस डिसमिल मिनकले हे। मैं इहा कॉलेज मा पढाई करे हव बी.कॉम करे हव। अउ जितना भी मांग म मुआवजा भी हमन ल नहीं मिले है। हमन का करीन एक ठीक खेत ल ले लिए है, अउ एक ठीक खेत ला का करीहा तुम्ही मन ल बेच के दे देही। ओहू म अपन नौकरी करे बर। यहां अनस्कील्ड म काम नई मिलत हे। हमन ल बोलीस एनटीपीसी हा अरे इतना–इतना मिल रहा है जाओ शिकायत करो। शिकायत करे ला जाथन तो बाहर ले भगावत हे। तहा ले ओही साहब मन कथ अरे नई होगा, नई होगा। जेन जेन वादा करे, रहीसे जेन सीपत अउ आठ गांव प्राभावित बर ये दूंगा, बिजली, पानी सब फ्री म मिलही। बिजली हमी मन चलाईन। आदमी जाने काट के लेग जाथे तार ल। भईसा बेच के पईसा देथे आदमी। सरकारी पईसा, ये येला खा नई सका। एती बिजली लगाए लगाए हे एनटीपीसी के अंदर म जाबे त सौर उर्जा के सोझे पड़े हे। शिक्षित मन ल रोजगार नई मिलत हे। मोपका के आवत हे, हमका बढ़िया मिलेहे दादा। हम जाईन बिलासपुर मा का। हम गांव के वासी हमर जमीन निकले निकले हे। तेन मन ल काम नई मिलत हे। जेन स्कुल म देत हे, तेन म कथे ये सरकारी स्कुल म कुछ नई होवे। अउ प्राईवेट स्कुल म ऐ होहय, ओ होहय, एनटीपीसी से ए आवत हे रे। अतका अतका पईसा आए हे रे। हमर कहां आवत हे हमर का होवत हे।

63. **श्री विकास, ग्राम–जांजी** :–जब एनटीपीसी स्थापित होईस त बोले रहीस के जतका जमीन लगे हे सबका रोजगार मिलही। ओहू नई मिलिस। अभी तक कोई रोजगार नई मिलिस। नौकरी देवय या हमर जमीन वापिस करे या एनटीपीसी बंद करवाय। मैं ऐखर विरोध करत हव, हमारा जमीन वापिस करो, या हम लोगों को नौकरी दो, हमर खेत ल वापित करों या हमन ल रोजगार दो नौकरी दो।

64. **श्री भगत सिंह राठौर, ग्राम–रॉक** :– एनटीपीसी के एवज म बोलथे, एनटीपीसी सुनवाई रखना रही से जनसुनवाई रखना नई रहीसे। मैं नवा प्लांट के विरोध करत हव काबर ये प्लांट शुरू होगें है। काम शुरू होगें हे ता सुनवाई रखे हे। सुनवाई रखना रहीसे त पहली से रखना रहीसे जमीन लिये रहीस तो बड़ा–बड़ा सपना दिखाये रहीस हे, जनता मन से मैं पूछना चाहत हव, एनटीपीसी से जवाब चाहत हव, जब दू ठन चिमनी बन गे हे त सुनवाई काबर रखे हे। पहली से रखना रहीसे, हमन बेरोजगार हन, सबला रोजगार मिलना चाही। दूसरा बात ये है कि 2008 के बैठक म सबला रोजगार देबो कहे रहीसे का अब तीन घाव नई होय हे का ता रोजगार नई मिलिस।

65. **श्री नूर मोहम्मद, ग्राम–मस्तूरी** :– मैं यहां से 15 कि.मी. दूर गांव निवासी मैं कुकदा। 2000 के पहले हमारे बिलासपुर जिला तापमान अधिकतम 42, 43 था। छत्तीसगढ़ में ज्यादा तापमान, जिला जांजगीर–चांपा है। जब से एनटीपीसी शुरूआत हुआ है तब से तापमान 48 से कम जाता ही नहीं है दो यूनिट में। तीसरा यूनिट के शुरूआत करोगे तो 48 से 50, 52 तक जाने से देर नहीं लगेगा। अगर यूनिट की शुरूआत कर ही रहो हो तो इसका हम पुरजोर विरोध करेगें। सार्वजनिक टीम बनाकर विरोध करेगें। हम विरोध करेंगे। किसी भी हालत में खुलने नहीं देगें। तापमान रहता है दूसरे यूनिट में हम लोग बिलकुल विरोध करेगें। ये समस्या सिर्फ हमारा ही नहीं है, मैं इसका पुरजोर विरोध करता हूॅ।

66. **श्री नीलकंठ यादव, ग्राम–दर्राभाठा** :–क्या एनटीपीसी भारत रत्न हैं, एक ऐसा कंपनी है, जिसने सबको विचार में रखते हुए काम किया है, सबको विचार में रखते हुए काम किया है, गांव के सियान है, आठ गांव के प्रभावित क्षेत्र के व्यक्ति है, उन सभी को भी रोजगार मिल रहा है, दे रहे है और काम कर रहे है। जिसके लिए हमें कोई आपत्ति नहीं है, यहां ऐसा नहीं है कि यहां नाली नहीं बना है, सामुदायिक भवन नहीं बना है, स्कूल नहीं बना है, सडक नहीं बना है ऐसा कोई सुविधा नहीं छोड़ा एनटीपीसी ने। विकास का कमी नहीं किया है, इसलिए यहां एनटीपीसी आना चाहिए, ये हमारा समर्थन है। सबको प्रकाश करने वाला एनटीपीसी सीपत है।

67. **श्री महेन्द्र कश्यप, सरपंच ग्राम–बनियाडीह** :– आज हमर छत्तीसगढ़िया ल सबले बढ़िया कहे जाथे, लेकिन एनटीपीसी हमन ल का कहे जाथे छत्तीसगढ़ सबले बोधवा। हमन ल बोधवा बना के चलत हवे, सीपत क्षेत्र ल निमगा बोधवा। 8 गांव

दलदल में फंसा हुआ है, उनका तत्काल निराकरण कीजिए, लेकिन कहीं न कहीं हम लोग भी एनटीपीसी से प्रभावित है, हमारे गांव से थोड़ा थोड़ा जमीन गया है, मैं देखा हूं, ट्रेन दोनों साईड आता है, 2 आदमी को रेल काट के निकल गया। लेकिन जब मैं वहा पहुंचा पता किया तो कहां फेक के आ गये, जनता को सिम्स में। ऐसा भावना है एनटीपीसी का। हमारी सुरक्षा का भी ध्यान देना चाहिए, आपसे विशेष निवेदन करता हूं कि अगर ड्यूटी करके आ रहा है, अगर ड्यूटी करके जा रहा है, अगर दुर्घटना हो जाता है, तो उसका क्षतिपूर्ति उनके परिवार वाले को दे संकल्प ले एनटीपीसी। दूसरा बात जो बस है, स्वास्थ्य वाला दिखाने वाला फार्मेल्टी वाला गांव गांव में भेजना बंद करिय आप। प्रभावित क्षेत्र में हॉस्पिटल बनाओं। ध्यान दिलाना चाहता हूं महोदय को कि दबाव बनाए एनटीपीसी को। एनटीपीसी अधिकारियों का नहीं है, हम जनता का है एनटीपीसी। मैं 10 बार मांग किया हूं खैल मैदान बना दो, खेल मैदान बना दो। हमारे बच्चों का भी ध्यान रखे, हमारे बुजुर्गो का भी ध्यान रखे, जितने भी काम करने वाले जाते है, उनका भी ध्यान रखो, कोई प्रकार का परेशानी नहीं होना चाहिए, वरना जब हम भिडेंगे तो एनटीपीसी को उखाड फेकेंगे।

68. **श्रीमती सत्यवती पटेल, ग्राम–कौडिया** :– हमर गांव मा एनटीपीसी आये हे, गांव के विकास करत हे, लईका मन ल पढ़ावत लिखात है, लेकिन हम भू–विस्थापित हन, कोई हमन ला रोजगार नहीं मिले हे। जब हम रोजगार मांगे जाथन ता बोलथे कि तोर गांव के सरपंच ला जाके बोल। हमन भूमि ला लेने हे तो हमन ल नौकरी चाही। कम से कम रोजगार दे सकत हे। जब एनटीपीसी खुलही तभे न देही रोजगार, लेकिन हमन ल काम चाही, हमन यहां धूल धक्कड खात हन, हमन ल रोजगार चाही काम चाही।

69. **श्री पप्पू साहू, ग्राम–दर्राभाठा** :–एनटीपीसी अतका विकास करत हे, अतका विकास करत हे, के धनिया के ओवर ब्रिज मा पानी भरत हे, आने–जाने वाले मन देखत हे, इतना विकास होये हे सीपत से अगर दर्राभाटा जाबो त, डेढ़ कि.मी. म छः ठन अंधा मोड, इतना विकास है, मैं मस्तूरी अनुविभागीय अधिकारी, सीपत तहसीलदार मैडम से अनुरोध करिहव कि ओकर संज्ञान म लाना चाहत हव के ग्राम दर्राभाटा, कौडिया, नवापारा, मुड़पार अउ महुआपारा लगभग हजारो एकड़ मा खेती होथे। एनटीपीसी के आए म हमन ल दर्द ल उठाए ल होथे। ओला ए क्षेत्र के जनता मन जानथे। अउ फायदा काला होथे ये अनपढ़ गवार यूपी बिहार से आए हे, ओ हा डेढ़ सौ का कई सौ लईका उपर राज करत हे, जब से एनटीपीसी हमर मुख्य नहर ल अधिग्रहण करे हे, तब से पानी बर तरसत हे, जेन मन बी.कॉम करे हे, एम.कॉम करे हे ओकर

उपर राज करत हे। जेन मन तारपोलिन ढके बर जात हे ओकर हाजिरी 18 हाजरी, 22 हाजरी ये उखर अत्याचार होत हे। यूपी, बिहार ले आके हमर जमीन, हमर सब चीज अउ हमर उपर राज करत हे। अउ ओखर बाद हम तीसरा स्टेज के स्वागत करीन ये कहां के बात हे। बिल्कुल ऐकर विरोध होना चाहिए और सोठी के ओव्हर ब्रिज ल आप देख लेहा। निरतू के ओव्हर ब्रिज ल बनाए हे एनटीपीसी के द्वारा ओहू ल देख लेहा। नवाडीह चौक म ये स्थिति बने हे, एक्सीडेंट के। आदरणीय अधिकारी जी ये बात ल संज्ञान मे लेवा के एनटीपीसी के आए से जान माल के कतका खतरा होथे तेन ल। लेकिन एनटीपीसी के अधिकारी कमर्चारी अपने कर्तव्य भूल चुके हे, के जेकर गांव म आके नौकरी करत हन, जेकर जगह म आके नौकरी करत हन वहां के लोग के कोई पूछ—पूछाई नहीं हे। राखड़ के दुख दर्द ल रॉक वाले मन जान सकत हे। एनटीपीसी द्वारा कर्मचारी मन ल सिखा पढ़ा के भेजे जाथे के समर्थन करो। दर्राभाठा के किसान आके बोलिस हे कि भाई दर्राभाटा के किसान ला कितना तकलीफ है, तुषार चंद्राकर नाला के विरोध करत कहीसे के फिल्टर होके जाना चाहिए, नदी म। ओ नदी दर्राभाटा के जीवन दायनी नदी है। एक ठन रोड जेन सीपत से सीधा जांजगीर—चांपा जिला म जोड़थे। मात्र 1.5 किलोमीटर हे रोड है ओ रोड ल नई बना सकत हे एनटीपीसी। एनटीपीसी दर्राभाटा के मेन रोड ल अधिग्रहण करके बाद एनटीपीसी द्वारा दर्राभाटा तक रोड़ निर्माण करे गए हे, आज तक न तो पीडब्ल्यूडी बनाए, आरईएस बनाए, न तो एनटीपीसी बनाए। दर्राभाटा से सीपत के दूरी मात्र 2.5 किलोमीटर है। हमन विरोध करत हन। विरोध होना चाहिए कोई मतलब के नई हे काबर बहुत बड़े छत्र हे एनटीपीसी हन। स्वीकृति पहली ले, ले अए हे। ओकर बाद भी हमन विरोध करबो। जो दर्राभाटा के रोड के सुविधा हे आदरणीय अनुविभागीय अधिकारी जी, आदरणीय कलेक्टर महोदय जी मैं आपके संज्ञान में लाना चाहत हव। जब तक एकर निराकरण नई होही, अभी चार महीना समय हे बरसात के दिन म फिर शुरू हो जाही। युवा भाई मन हे नौकरी के लिए तरसत हे। सबके निराकरण होना चाहिए। जब सब के निराकरण हो जाए त स्टेज ल एक ठन नहीं दस ठन लगा सकत है। अउ ईहा के एनटीपीसी म रोजगार करत हे, ईहा के साथी मन तारपोलिन ढके खोले बर जात हे ओखर विशेष ध्यान रखव। एनटीपीसी अंग्रेज के नीति अपना के फूट डोलो राज करो नीति अपनात हे, बंद होना चाहिए। अउ यहां जब तक समस्या के निराकरण नई होही तब तक स्टेज आगे नई बढ़ना चाहिए।

70. श्री दीपक राठौर, ग्राम–गतौरा :–रेल पथ निर्माण से प्रभावित हूं 80 डिसमिल से। मैं तीसरा यूनिट का घोर,घोर, घोर, घनघोर तरीके से विरोध करता हूॅ। पहले बेरोजगार को जब तक रोजगार न दिया जाए तब तक विरोध करता रहूंगा।

71. श्री विरेन्द्र कुमार कुर्रे, ग्राम–गतौरा :–मैं भू–विस्थापित हूॅ, और मैं ये तीसरा यूनिट का विरोध करता हूॅ। तब तक विरोध करता रहूंगा 1 डिसमिल वाले को जब तक एनटीपीसी में नौकरी नहीं मिलेगा। हम लोग का जमीन दलदल प्रभावित है, विरोध करते है, इस यूनिट का विरोध करता हूॅ।

72. श्री प्रदीप यादव, ग्राम–जांजी :–मैं भू–विस्थापित हूं। मैं खेल के संबंध में आपको अवगत कराना चाहता हूं। महोदय मैं तायक्वांडो का खिलाड़ी हूं। ट्रेनर भी हूं। विगत 20 वर्ष से ट्रेनिंग दे रहा हूं, सीपत क्षेत्र में। छोटे–बच्चों को डेव्हलप कर रहा हूॅ। आज सबसे बेस्ट बात ये है कि हमारे सीपत क्षेत्र से ही तीन बच्चों ने गोल्ड, सिल्वर, ब्रान्ज मेडल लगाकर आए है, नेशनल लेवल में। मैंने 20 वर्ष से एनटीपीसी से सहयोग के लिए मदद मांगी है। लेकिन मुझे हर बार नकारा गया है। महोदय चाहे तो 20 साल तक का सीएसआर के तहत् मांग किया, पावती आपको दिखा सकता हूं। जब भी मैंने नेशनल चेम्पियनशिप हो या स्टेट हो उसमें बच्चों को ले जाने से पहले, स्पोर्ट के लिए भी नहीं बोला है। महोदय ये ग्रामीण क्षेत्र के व्यक्ति बिना सुविधा के नेशलन में गोल्ड मेडल ल रहे है, अगर हमारे पास अगर सुविधाए रहेगी तो जरूर ही ओलंपिक तक के क्वाफाई कर सकते है, ये मेरा मानना है और मैं खुद ग्रामीण क्षेत्र का आदमी हूं बिना सुविधा के मैं नेशलन में गोल्ड मेडल लगा सकता हूं तो मैं अपने बच्चों को आगे बढ़ा सकता हूं ये मेरा आत्मविश्वास है। जैसे एनटीपीसी ने फुटबाल खेल को गोल्ड लेके डेव्हलप कर रहे है, खिलाड़ियों को सुविधाएं दे रहे है तो वैसे ही मेरे सीपत क्षेत्र के जितने भी प्रभावित गांव के बच्चें है जो भी जिस खेल से लगे हुए है चाहे तायक्वांडों, कबड्डी हो या खो–खो उसके एनटीपीसी को एसपॉसरशिप होना चाहिए। उनको गोद लेके खेल के क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए प्रयास करना चाहिए। इस प्रयास में एनटीपीसी पूरी तरह से नाकाम साबित हुई है। ओ केवल और केवल सिर्फ फुटबाल का ही आयोजन कर रहे है। मैं चाहता हूं कि ओ भी ताइक्वांडो खेल को सीपत क्षेत्र के जरूर अगर वो गोद ले और जितने भी प्रभावित गांव के बच्चें है उनको गोद ले और उस पर ताइक्वांडो खेल को हमार विकास के लिए काम करे। ये मेरा निवेदन है। अगर आप मेरे सुविधाओं को मानते है तो मैं जरूर आपके पक्ष में हूं और साथ ही साथ मैं और कुछ बात रखना चाहता हूं। जैसे एनटीपीसी बनी और आपको लगा कि आपके

बच्चों को सुविधायें चाहिए। पढ़ने के लिए, अस्पाताल के लिए हर चीज के लिए सुविधाएं डेव्हलप किये है। वैसे ही हमारे सीपत क्षेत्र में एक केन्द्रीय विद्याालय आप पहले बनाईये। जिससे हमारे गरीब बच्चो भी इंग्लिश मीडियम में अच्छे से पढ़ाई कर सके। आपने डीपीएस स्कूल बना लिए है। डीपीएस स्कूल में फीस इतनी है कि आम नागरिक वहां जाके नहीं पढ़ पा रहे है। तो सबसे पहले आपसे निवेदन है कि आप हमारे गरीब बच्चों के लिए केन्द्रीय विद्यालय बनाईये। जिससे केन्द्रीय विद्यालय में हमारे बच्चें आ के पढ़ सके और सभी खेल, शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ सके। साथ ही साथ जिस तरह एनटीपीसी में अस्पताल है सर्वसुविधायुक्त, उसी तरह हमारे ग्रामीणों के लिए सर्वसुविधायुक्त हॉस्पिटल का निर्माण करे, अस्पाताल का निर्माण किया जाए, साथ ही एनटीपीसी प्रभावित क्षेत्र है पॉलिटेनिक कॉलेज भी होनी चाहिए, शिक्षा के क्षेत्र में पॉलिटेनिक कॉलेज भी होना चाहिए, जिससे हमारे क्षेत्र के जितने भी गरीब बच्चें है ओ पॉलिटेनिक पढ़ाई कर सके और कुशल नेतृत्व कर सके एनटीपीसी में। महोदय जी अगर आप हमारी मांगों को नहीं मानते है तो हमारे तरफ से न है।

73. **श्री चिंतामणी पटेल, ग्राम–एरमशाही** :– जिस समय एनटीपीसी का नींव भरा गया। उस समय आस–पास के सभी गांव से मिट्टी, मुरूम, रेत हमारा लीलागर नदी पूरी तरह से खाली हो गया है, आज रेत के लिए हम आसपास के तरस रहे है, जब एनटीपीसी का निर्माण हो रहा था, तो वहां से भरपूर मात्रा में दर्रा, मिट्टी सभी लाये गये और आश्वासन दिया गया, कि यहां के तालाबो को पिचिंग करेगें, पचरी का निर्माण करेगें, जो आज तक नहीं किया गया। इसके साथ ही न तो मेरे निर्वाचन क्षेत्र ग्राम पंचायत मुड़पार, नवागांव, कछार, बेलटुकरी और एरमसाही इसको नही ही प्रभावित में शामिल किया गया, मैं लगातार कई वर्षों से स्कूल की आहाता और जर्जर स्कूल का मांग करता रहा। स्कूल के आहाता जर्जर स्कूल का मांग करता रहा एनटीपीसी से। आज के डेट में आठ गांव, आठ गांव प्रभावित है बोलते है। क्या एरमसाही का भागीदारी नहीं था एनटीपीसी में। क्या कछार का भागीदारी नहीं था। मैं एनटीपीसी से पूछना चाहता रहा हूं, कि इसके निर्माण में क्या ओ भागीदारी नहीं था, यदि है तो उसको प्रभावित में क्यों नहीं लिया गया, आज वहां न स्वास्थ्य की व्यवस्था है न, स्कुल की एनटीपीसी की तरफ से कोई व्यवस्था नहीं है। इसके बावजूद वहां से लगातर बड़े बड़े वाहनों में रेत, गिट्टी हमारे ही गांव से गुजरके यहां लाया गया है, और न ही लिया गया है और सीएसआर मद से जब मैंने मांग किया गया तो मुझे वहां कोई कार्य स्वीकृति नहीं दिया। उसने बताया था कि ये आठ गांव जो प्रभावित है इसको गोद लिए है, उसका स्वर्णिम विकास तो

करेगें ही। साथ.ही ब्लॉक डेव्हलपमेंट के लिए प्रतिवर्ष 8 करोड़ रूपए का प्रावधान था। एनटीपीसी ब्लॉक डेव्हपमेंट के लिए देते, तो मेरे हिसाब से पूरा मस्तूरी ब्लॉक अगर वो पैसा सही ढंग से ब्लॉक में जाता तो पूरा सभी ग्राम पंचायतों में सीएसआर मद का काम चलता, जिसके लिए हम आज भी वंचित है। महोदय से आग्रह है कि इस बात को संज्ञान में लेते सभी पूरे ब्लॉक को डेव्हलप में करने की स्थिति में लाए तब कही जाकर तीसरे स्टेज के लिए हम समर्थन कर सकते है, अन्यथा आपत्ति है और साथ ही साथ एनटीपीसी जो है, जमीन खरीदी है, उसमें डेम बनाए हुए है। इसके अतिरिक्त एनटीपीसी न आए थे, उससे पहले एरमसाही माईनर का निर्माण हुआ था। जिसकी आज पूरी जमीन को एनटीपीसी अतिक्रमण कर रही है, जो सुकलीपाली और रॉक के बीच में एरमसाही माईनर है आज वहां किसानों को उसके साथ वहां चार गांवो को आपसी के लिए बहुत मक्कसत करना पड़ता है। वहां पर एनटीपीसी द्वारा अपनी गाड़ी वाहनों खड़ी करने के लिए सीसी रोड का निर्माण कर दिया गया है, एक साईड में, एक साईड में वृक्षारोपण कर दिया गया है और प्लाट भी लगाए हुए है जो कि हमारे नहर माईनर की जमीन है। भाई जो जिस जमीन का मुआवजा दिया है वहां तक सीमित रहिए। इसका मैंने जांच रिपोर्ट संलग्न कर प्रतिवेदन प्रस्तुत कर दिया है।

74. **श्री रितेश सिंह चौहान, ग्राम–सीपत** :– एनटीपीसी में जो जमीन गई है, एनटीपीसी में जिनका–जिनका जमीन गया है, और जिनका नाम पर अगर कोई तीन भाई है तो जमीन तीनों भाई का रहता है। लेकिन एक व्यक्ति के नाम पर जमीन का नाम आया और उसको नौकरी मिला। तीनों भाई को नौकरी नहीं मिला सिर्फ एक को मिला और एनटीपीसी अपना परिवार में जो व्यक्ति है। वो सब जो अपनी सहमति से हां भाई मैं आपको नौकरी दूंगा। आप नौकरी करो। एक भाई उसका नौकरी करेगा। बाकी भाई बोल दिया मैं आपको पैसा दूंगा, मैं आपको नौकरी दूंगा, मैं आपको घर में छोटा भतीजा का शादी करूंगा। भतीजी का शादी करूंगा। सरकारी नौकरी एनटीपीसी में उसको प्राप्त हो जाता है। उसके बाद न ही उसको एक पैसा देता है अपने भाई को न ही उसका भाई बहन का शादी कराता है। एनटीपीसी ये नियम जो है अगर सर्वप्रथम एनटीपीसी में नौकरी मिल रहा था। उसी समय केल्कुलेट करके ऐसा नियम बनाते कि किसी का मनमर्जी का जरूरत नहीं है। जो नौकरी करना चाहेगा उसको नौकरी मिलेगा ही। साथ ही जो दो भाई तीन भाई है सभी उसमें का दस दस परसेंट पेमेंट उसके खाते में हमेशा पेमेंट आना चाहिए। लेकिन ऐसा जो है बहुत कुछ निकलने के बाद हुआ। ए जो है कम से कम पांच साल, सात साल नौकरी के बाद ये नियम लागू हुआ। आज जो है सभी भाई बहन

है सभी से साईन कराओगे तभी आपको नौकरी मिलेगा। लेकिन पहले ऐसा नहीं हुआ था। आज अपने मर्जी से भर दिया कि भाई बड़े हो नौकरी करो। बाकी जो है सहमति दे दिए। बड़ा भाई नौकरी पाके उसके बाद कार में घूम रहा है और बाकी लोगों को पैसा नहीं दिया और सब के सब जिंदगी में उसको गाली दे रहे है। आने वाले वक्त में आप जो है नया स्टेज चालू करना चाह रहे है। आप ऐसा नियम करें कि सहमति वाले बात नहीं है। सहमति तो एक कानूनी कार्यवाही है वो तो सहमति होगा ही। उसके साथ ऐसा प्रावधान आप रखिए कि जितना भी उसका भाई बहन है और जितना जमीन है सब का अधिकार है। सभी का पैसा मिलना चाहिए एनटीपीसी के नौकरी का। सभी को दस परसेंट, बीस परसेंट जो भी आंकड़ा करेंगे उसका अधिकार मिलना चाहिए।

75. **श्री कौशल प्रसाद, ग्राम–रलिया** :– मोर 35 डिसमिल दलदल मा फंसे हे सर, 2021–22 म पैसा मिलत रहीस। ए दारी सर्वे गे रहीस तेना काट देहे। ऐ हे हमर पानी नोहे करके। अउ जेन भी सर्वे करे गे, रहीसे ओला सस्पेंट करा साहब। अउ पुनः अभी भी सर्वे करवा के देख लेवा। यथास्थिति होहय त पैसा मिलय। ओला सर्वे करे, गहीस ओला ससपेंड करे।

76. **श्री पवन साहू, ग्राम–झलमला** :–जो स्टेज 3 आने वाला है, उसका मैं समर्थन करता हूँ। सर्वप्रथम ये चाहता हूं कि भूमिहीन लोगों को रोजगार दिया जाए न, कि बाहर के लोगों को, आठ प्रभावित गांव को जो राखड़ से त्रस्त है, उसका समाधान किया जाए।

77. **श्री महेन्द्र कुमार** :– मैं समर्थन करता हूँ, स्टेज 3 को। सीपत क्षेत्र को जो भाई है, उन लोगों को काम दिया जाए।

78. **श्री प्रमोद पटेल** :– हमारे सीपत क्षेत्र में एनटीपीसी खुला है, एनटीपीसी से काम कर रहे है।

79. **श्री हेमंत कुमार साहू, ग्राम–सीपत** :– जब से एनटीपीसी आया है, तब से, हमारा जो बेरोजगारी है, कम हो गया है। स्टेज–3 आने वाला है उसका मैं का स्वागत करता हूँ।

80. **श्री मूलचंद कौशिक** :– स्टेज 3 आना चाहिए।

81. श्री राकेश लहरे, ग्राम–जांजी :– मैं वर्मी कम्पोस्ट खाद म काम करथव। लोड सील के ठेकेदार जो भी हे काम मा लगावत हे, लेकिन सबसे पैसा लेवत हे, वापस करे ल बोलथे। हमन 12 हजार कमातहन 8 हजार हमन ल मिलत हे। बाकी के पैसा ल कईसे देथन ओमन ल। हमर जीवन रोजगार का करही एईसनहा म। पैसा कौड़ी लेवत हे 80, 90 हजार। हमन कहां ले लाबो 80, 90 हजार का खेत ल बेच के लान। ईहा बईठे हे इम्प्लाई मन, कइसे करत हे के अपन जीजा, सारा, भाटा, कका सब ल लगात हे। चार गांव के आदमी मन कांदा ल धरत हे। स्टेज 3 आवत हे घोर विरोध करत हन। आठ गांव के ल लगाए इतना जानत हन बस। जतना इम्प्लाई हावे ओकर घोर विरोध करत ह। अपन सारा, जीजा, कका जो भी है दुनियादारी तेन ल काम म मत लगाए। पहली आठ गांव के आदमी ल काम म लगाए।

82. श्री अशोक सूर्यवंशी, ग्राम–जांजी :– एनटीपीसी ला खुले 23 साल हो गये। जेन समय खुलिस प्रभावित किसान 8 गांव के रहीस हे। आज रेल लाईन के द्वारा बहुत सारा किसान प्रभावित है, बहुत सारा गांव के किसान प्रभावित है, पुराना हिसाब किताब पहली होना चाहिए आपके माध्यम से, जतका किसान प्रभावित है ओला पहली आपमन नौकरी देवा, ओकर बाद म विस्तार के बात करिहव, ओकर जानकारी देहव। हमर आदणीय दिलेन्द्र कौशिक जी बईठे हे। जब 2007–2008 ओमन हड़ताल करे रहीस त, एक एकड़ ले उपर वाले ल प्रभावित बनाए रहा। जेमा 692 किसान ल प्रभावित बनाए रहा। अउ आप मन बोले रहा 2010 तक के सब ला नौकरी दे देबो कइके। आज तक तक 300 ल लेव हव के 400 ल लेव हव के पूरा 692 ल लेव हा कोई पता नई है। एकर पहली पूरा हिसाब किताब जनता के सामने बताए ल पड़ही तेकर बाद म फेर आप मन। अउ मोर किसान भाई मन ल आप मन रोजगार देवा, परमानेंट नौकरी म रखा। न आपसे नल के जरूरत हे, न सीसी रोड के जरूरत हे, न नाली के जरूरत हे, न बिजली के जरूरत हे। एकर सेती नई हे जेन मन सौर उर्जा या किसी माध्यम से गांव म बिजली लगाए हा तेन हा जेन जिन के लगाए हा तेन दिन के बंद पड़े हे। जेन दिन के नाली बनाए उही दिन के भसग गे हे। जेन दिन के सीसी रोड बने हे ओही दिन के निहारत हे गिट्टी हा। सबसे पहली रोजगार चाही, नौकरी चाही, ओकर बाद म आप मन हमर प्रभावित भाई मन ल, प्रभावित गांव के संगी मन ल के झन ल रोजगार दे हा ओकर लिखित म आज मोला जानकारी चाही, के झन जांजी के कोदू ल दिए हा, के झन जांजी के झन दर्राभाटा समारू ल देहे हा लिखित मा जानकारी चाही। कतका झन व्यक्ति

बाहर के हे, कौन बलौदा के हे, कौन कोसमडीह के हे, कौन मस्तूरी के हे, कोन पचपेड़ी के हे एकरो मोला जानकारी चाही आपके माध्यम से।

83. **श्री दिलेन्द्र कौशिक, ग्राम–सीपत** :– आज एनटीपीसी के जन सुनवाई मा महत्वपूर्ण से 5–6 मुद्दा आईस। एक तो सबसे बड़े मुद्दा रहीस रोजगार के। दूसरा स्वास्थ्य के मुद्दा। तीसरा शिक्षा के मुद्दा, सड़के के मुद्दा, पानी के मुद्दा अउ बिजली के। ऐसे 6 मुद्दा म लगातार, मैं दो ढाई घंटा से बइठे हव। ये पांच छः मुद्दा म हर कोई अपन–अपन विचार रखिस हे, अउ बहुत झन जो जनता हे, कार्यकर्ता हे, ओमन काफी आक्रोशित हे, और ये जो आक्रोश हे, और वास्तव म आक्रोश, म मन के पीड़ा हे। जेन चीज से लगातार प्रभावित होथे, जेन चीज से ये क्षेत्र के जनता लगातार प्रभावित होत हे। वो पीड़ा ल जनता आज यहां, जनता ल ये लगत हे कि हमर कलेक्टर साहब आए हे, एडीशनल कलेक्टर साहब आए हे त हमर बात ल हमर पीड़ा ल सुनही। एनटीसीपी से बात करके हमर पीड़ा ल दूर करे के प्रयास करही। ये सोच के जनता मन अपन आक्रोश ल लगातार बतात हे। पांच छः विषय म बात अइसे हे एक तो 692 पद के बात हे। अभी पूर्व म मोर ले कई झन वक्ता मन कहीन के ये जो 692 पद है वो 1 एकड़ से उपर वाले मन बर हे। मैं स्पष्ट कर देना चाहू कि ये जो 692 पद हे वो सिर्फ 1 एकड़ से उपर वाले मन बर नोहे। ये जो 692 पद हे, मैं ये ए चीज बर बोलत हव जब 2008 म 12 जनवरी के आंदोलन शुरू करेव एनटीपीसी के विरोध म 112 दिन के आंदोलन। मोर करा पांच छः झन लाईका मन बोलिस के भईया अइसे अइसे समस्या हे। ओ समस्या ल सुन के 12 जनवरी विवेकानंद जी के जन्मदिन से आंदोलन शुरू करेन 112 दिन के 24 मई तक के, तो वो म हमन कलेक्टर साहब के साथ बईठके ओ समय श्री विवेक ढांढ साहब उर्जा मंत्री रहीस ओखर साथ बईठ के, छत्तीसगढ़ मुख्यमंत्री रहीस रमन सिंह के साथ बईठ के, ओखर बाद समझौता ए होईस के केन्द्र सरकार के जेन ऊर्जामंत्री रहिस जयराम रमेश ओखर साथ म बईठ के हमन नीति बनाइन। ये जो 692 पद हे ओ म कईसे भर्ती होही। वास्तव म हमन जो हड़ताल करत रहेन, जो मांग करत रहेन वो मांग ये करत रहेन जो 3106 परिवार जेन मन के जमीन गए रहीसे आठ गांव के जो परिवार रहीसे वो 3106 परिवार के नौकरी लगाए बर। एक सूत्रीय मांग ल लेके 112 दिन के आंदोलन करे रहेन एनटीपीसी के विरोध म। लेकिन जब बाद म हड़ताल टूटत गेईस धीरे–धीरे जनसंख्या कम होवस, गेईस हमर ताकत कम होवस होईस, हमन सोचे नई रहेन के यार, कम कईस होत रहीसे, जेन मन आज नौकरी के मांग करते हे। ओही मन हड़ताल म आना बंद कर देईन। तब हमन ल एहसास होईस के यार हमन ल पागलपन होत जात हे। तक हमन के

सोचेन के हड़ताल कईसे खत्म होही टेंशन होगे रहीस। 112 दिन के होगे रहीस कईसे खत्म नई होवत हे हड़ताल। तब जो वो परिस्थिति आईस, केन्द्र सरकार से हमला मैसेज मिलिस, सीपी जैन वो समय के सीएमडी रहीस उस समय एनटीपीसी के। अउ जब सीपी जैन सीएमडी के रायपुर म घेराव करेन, जयराम नेरश जी से बातचीत होईस। हम कहने चलो एक रास्ता निकलगे। जयराम नरेश जी कार्यक्रम तक होईस हउ आईस सीपत म आईस ओहा। सीपत म आये के बाद म हमर साथ म द्विपक्षीय वार्ता म मुख्यमंत्री के यहां रायपुर जाके वहां मिनट्स बनीस। ओ मिनट्स म तय होईस के 692 लईका मन ल नौकरी देना है। अब उसके लिए तुम लोग रणनीति बना लो नौकरी कैसे देना है। ये जो आरक्षण के 261 पद रूक गे हे, कुछ मन 267 बोलत रहीसे। लेकिन 431 आदमी मन के नौकरी लग चुके है। 261 मनक बचे हुए है। अब एनटीपीसी के कहना है, ये है ओ समय हमर साथ म कार्यकर्ता रहीसे हमर दोस्त रहीसे जो हमर आंदोलन म जुड़े रहीसे प्रतीक भूषण टैगार जी। ओ बोलिस के आरक्षण रोस्टर के पालन करना पड़ही। तब कलेक्टर साहब सुबोध सिंह साहब कलेक्टर रहीस ओकर साथ म बईठ के बातचीत होईस, के ठीक है भाई आप लोगों का मांग है तो आरक्षण रोस्टर का पालन किया जाएगा। अब आरक्षण रोस्टर के पालन के वजह से ये जो 661 पद बच गे हे। ओमा हमन ल केंडीडेट नई मिलत हे। लेकिन केंटीडेट नई मिलस ऐसे नहीं। मैं आप मन ल बताएव कि ये जो 692 पद है। ओ हन सिर्फ एक एकड़ से उपर वाले बर नोहे। ओमा हमन नियम ये बनवाए रहेन के एक डिसमिल से लेके जतका भी जेकर जमीन गए है ओला ओमा प्राथमिकता दिये जाए। एनटीपीसी के जो भू–विस्थापित है ओला पहला प्राथमिकता दिए जाए, ये हम नियम बनवाए रहेन, अभी भी एनटीपीसी के मिनट्स खोल के देख लेवे, ओमा लिखाए हुए हे जिनकी भी जमीने गई है। उनको एनटीपीसी में ये जो 692 पद है इन पदों में पहली प्राथमिकता दी जाएगी, लेकिन ओमा तीन प्रकार के क्राईटेरिया बनाए गे रहीसे, नौ प्रकार के क्राईटेरिया रहीसे पर ओला जमीन के हिसाब से अउ सीपत क्षेत्र में निवास के हिसाम से नौ प्रकार के क्राईटेरिया म बांटे गीस। पहला क्राईटेरिया जेन मन के पांच एकड़ से अधिक जमीन गए हे। अउ जेन मन बीस साल पहली के निवासी है सीपत क्षेत्र म। बीस साल पहली निवासी बोले के कारण ये रहीसे कि कोई भी बाहरी आदमी एनटीपीसी खुले के बाद या एनटीपीसी के अधिसूचना जारी होय के बाद या एनटीपीसी के धारा चार के प्रकाशन होये के बाद यहां आके जमीन खरीद लिए हे वहीं आदमी के नौकरी नहीं लगना चाहिए। हमर स्थानीय आदमी मन के हमर लोकल कार्यकर्ता है हमर लोकल जेकर जमीन गे हे ऐसे मनके नौकरी लगन चाहिए। ऐसे सोच के हमन जो ये नियम बनवाइन। जेन आदमी मन बीस

साल पहली से सीपत क्षेत्र म रह चुके हे। बीस साल पहली 1998, 1978 म एनटीपीसी कोई नामों निशान नई रहीसे सीपत मे। ओ समय के जेन यहां के स्थायी निवासी हे ऐसे आदमी मन के लईका मन के नौकरी लगे। ये हमन नियम बनवाइन पहला क्राईटेरिया है। दूसरा क्राईटेरिया जेकर एक एकड़ से चार एकड़ निन्यान्वे डिसमिल तक जमीन गए हे अउ जो बीस साल पहली से सीपत क्षेत्र म रहत हे ऐसे आदमी मन के नौकरी लगना चाहिए। तीसरा क्राईटेरिया जेकर एक डिसमिल से निन्यान्वे डिसमिल तक के जमीन रहे अउ जो बीस साल पहली से हमर सीपत क्षेत्र म रहत है ऐसे तीन प्रकार के और फिर ऐसे ही नौ प्रकार के क्राईटेरिया बनाए गेईस। एक डिसमिल से लेकर जेकर जितना भी जमीन गए है ओ मन ला ओ मन ल ये जो एनटीपीसी के 692 पद के नौकरी हे ओमा पहला प्राथमिकता दिये जाही। एकदम क्लीयर बात है। मिनट्स खोल के देख लेहू। दूसरा बात ये जो हम प्रभावित मन के बात करत हन। अभी कई झन मोर दोस्त मन बोलिन के एनटीपीसी म जेन मन के जमीन गए ओही मन प्रभावित हे ऐसे नहीं। बात एकमत सही है एनटीपीसी म जेकर जमीन गए हे सिर्फ ओही मन प्रभावित नई हे। जेन मन धूल खात हे, जेन मन राखड़ खात हे, जेन मन यहां के पाल्युशन झेलत हे। जेन मन यहां के वातावरण क्लाईमेट चेंज ल झेलत हे। जेन मन बाहर के आदमी मन आके रहन बसन करत हे ओखर से जो क्राईम बढ़े हे ओला झेलत हे। वास्तव में ये आसपास के क्षेत्र मे रहने वाला हर नागरिक प्रभावित है। एनटीसीपी से हर नागरिक प्रभावित है। ओकर कारण फिर हमन अगला क्राईटेरिया आगे बढ़ के हम कहेन के अगर 3106 आदमी म के बीच म 692 आदमी नई ऐसे नई मिलही जेन मन जो योग्यता के आदमी चाही ओला फूलफिल नई करत हे तो फिर ये जो आठ गांव हे जो एनटीपीसी से प्रभावित आठ गांव हे। ओ आठ के नागरिक मन ल ओमा के बाचे वाला नौकरी ल अगर योग्यता के आदमी हे ता ओला दिये जाए। तेकर मतलब का होईस एनटीपीसी के जो 692 पद हे वो ह सिर्फ एक एकड़ वाले मन बर नोहे। पूरा आठो के गांव के जो नागरिक हे ओ नागरिक मन म भी ओ 692 पद मिल सकत हे, मिल कईसे सकत हे, जब 3106 आदमी जेकर टाईमलाईम ये था कि 31 मार्च 2010 तक ये जो 692 पदों की नियुक्ति है, पूरी कर लिए जाए। दो साल के टाईम दिया गया था, दो साल के टाईम ऐकर लिए दिये गये रहीसे के जेन लईका मन आईटीआई नई करे हे जेन घर के लइका मन बाढ़े हुए हे अउ आईटीआई नई करे हे अउ जेन योग्यता चाहिए ओ योग्यता नई हे तो वो योग्यता ल पूरा कर लेवे। ओमा कई प्रकार के पद रही से 107 पद अनस्कील्ड ट्रेनर जेमा आठवी पास रहीसे। स्कील्ड मन के रहीसे बी.कॉम, बी.एस.सी मन के जरूरत रहीसे। 33 शायद नर्स मनके रहीसे जेन मन नर्सिंग करे हुए लईका

मन के रहीसे। 66 पद लोको पायलट मन के जरूरत रहीसे। एनटीपीसी के पॉलिस ऐ रहीसे के जो लोकोपॉयलट हे, लोकोपॉयलट पद जो है रेलवे रिटार्ड कर्मचारी हावे, हम ओला बोलेन कलेक्टर साहब के साथ म बईठ के लोकोपॉयलट के लिए योग्यता क्या चाहिए। तो वहां बताईन के लोकोपॉयलट के लिए जो आईटीआई का कोर्स किया रहता है वो लोकोपॉयलट बन सकता है। हमने कहां कि भाई हमारे बच्चे दसवीं, बारहवी पढ़े हुए है, कॉलेज किए हुए है। बी.एस.सी. करें हुए है, बी. कॉम करे हुए है। आईटी कर लेंगे दो साल का और लोकोपॉयलट के लिए डीजलइंजन मैकेनिक का ट्रेनिंग कर लेंगे। ये जो 66 पद रिटायर्ड कर्मचारियों को दे रहे हो, जो आपको मुश्किल से दो साल, तीन साल का। रिटायर्ड क्यों किया जाता है, जो काम करने लायक नहीं रहता है, इसलिए रिटायर्ड किया जाता है, जो रिटायर्ड कर्मचारी है दो साल, चार साल आपके पास काम करेगा। उससे अच्छा ये है कि हमारे यंग बच्चों जो एनर्जी से भरपूर है उसे डीजलइंजन मैकेनिक का ट्रेनिंग का दो और जो 66 पद रेलवे लोकोपॉयलट का है वो दो। ये बात तय हुआ था। फिर उस समय रिलायंस और एनटीपीसी के वेंचर्स से एक यूपीए नाम की कंपनी थी और उसमें भी लगभग मेंटेनेंस से लगभग 2000 लोग लगने वाले थे। तो हमने ये कहां था कि साढे सात सौ लोग उसमें से हमको दे दिए तो 692 पद ये और 750 पद ओ यूपीएन के ऐसे करके लगभग 1500 हमारे जो लड़के है जो लगातार हमारे साथ हड़ताल में थे लगातार आंदोलन में थे और उस आंदोलन से निकले हुए उस आंदोलन से निकले हुए कार्यकर्ताओं का कहीं न कहीं रोजगार मिल जाएगा, कहीं न कहीं उनका परिवार अच्छे से चलने लगेगा। ये सोच के हम लोगों ने 750 पद यूपीएन से मांगे थे लेकिन यूपीएन का एक भी पद हमको नहीं मिला। एनटीपीसी के 431 पद मिल चुके है। 261 पद बचे हुए है। 261 पदों पर जिनकी भर्ती होनी है उसको शीघ्र पूरा किया जाना चाहिए। शीघ्र पूरा इसलिए किया जाना चाहिए कि एक एकड़ का क्राईटेरिया है उससे नीचे आई और एक नया टाईम लाईन बनाइए कि इस टाईम लाईन तक हमको 261 पद पूर्ण करेगें, और उसके बाद नहीं मिलता है भूविस्थापितों को तो हम इसको बिलासपुर, जांजगीर और कोरबा तीनों जिले का प्रावधान था। उसके बाद पूरे छत्तीसगढ़ का प्रावधान था। उसमें छत्तीसगढ़ से बाहर के किसी भी व्यक्ति की नियुक्ति उस 692 पदो पे नहीं हो सकती। ये जो 692 पद निकले थे ओ कैसे निकले थे, हम लोगों ने अध्ययन किया कि सुपर क्रिटिकल टेक्नोलॉजी से यहां पे बिजली का उत्पादन होता है। 660 मेगावॉट का पहला सुपर क्रिटिकल टेक्लोलॉजी का प्लांट हमारे छत्तीसगढ़ में, हमारे पूरे विश्व में पहला प्लांट लग रहा था सुपर क्रिटिकल टेक्लोनॉजी से तो हम लोगों ने अध्ययन किया, कि इतने बड़े प्लांट को चलाने के लिए कितने मेन पॉवर की

आवश्यकता पड़ेगी, तो हमारे अध्ययन में इस चीज की जानकारी लगी हमको कि इस सुपर क्रिटिकल टेक्लोलॉजी के बनने वाले प्लांट में एक मेटावॉट बिजली के उत्पादन में 0.6 मेन पॉवर की जरूरत पड़ेगी। मतलब एक मेगावॉट बिजली बनाना है तो आधा आदमी की जरूरत पड़ही, तो 2960 मेगावॉट के लिए कतका जरूरत पड़ही, तो ओमा लगभग 13, 14 सौ के संख्या आईस। अब ओ 13, 14 सौ के संख्या म 60 परसेंट जो पोस्ट रईथे एक्सक्यूटिव पोस्ट रईथे। जो एनटीपीसी म डॉयरेक्टर चयन होथे, ओकर माध्यम से या कोई भी माध्यम से चयनित होके आथे, और 60 परसेंट म जो है एक्सक्यूटिव पोस्ट मन रही अउ बाकी जो 40 परसेंट पोस्ट हे ओमा जो संख्या आईस 692 के सख्या आईस। जेन मन कईथे के एक एकड़ से उपर मनके सख्या 692 रहीसे ओकर कारण कहत होही त गलतफहमी म हे। एक एकड़ से उपर जमीन जाने वाला मनके संख्या रहीस 551 आदमी। 551 आदमी रहीसे तेन मन एक एकड़ या एक एकड़ जादा जमीन रहीसे। जेन समझौता करके लिए रहेन ओ 692 पद रहीस। कोई कइथे के 692 आदमी मन के एक एकड़ वाले मन बर आए हे करके तो ओ गलतफहमी म हे, ये जो पोस्ट हे पूरा भूविस्थापित मन बर हे 3106 भूविस्थापित मन बर ये। 3106 भू–विस्थापित म भी आदमी नई मिलही तो ओकर से बाहर जाकर आठों गांवों बर अउ बिलासपुर, कोरबा, जांजगीर क्योकि तीनों जिला प्रभावित हे। अउ तीनों जिला म योग्यता के आदमी नई मिलही त पूरा छत्तीसगढ़ बर। ऐसा करके भर्ती प्रक्रिया के नियम बने रहीसे। जेन नियम से एक मेगावॉट के उत्पादन म 0.6 मेन पॉवर के जरूरत पड़थे। एक तो आप सब मन ल ये कहत हव के 800 मेगावॉट प्लांट आवत हे ओकर समर्थन करना चाहिए। लेकिन शर्त के साथ समर्थन करना चाहिए। शर्त का होना चाहिए। जैसे 692 लईका मनके ओमा नौकरी नगीस, और 800 मेगावॉट के निकालबो 0.6 के हिसाब से त कतका हो चाही। 480 आदमी मन के नौकरी और लग जाही। लेकिन 480 आदमी म 60 परसेंट एक्सक्यटिव पोस्ट होही, जो इंडिया लेवल म एक्जाम होथे और ओमा सेलेक्ट होके आथे, और जो बाकी 40 परसेंट यानी लगभग 200 लोग के और नौकरी लग सकत हे। लेकिन ओकर बर भी एनटीपीसी से मांग करे ल पड़ही आउ बुद्धि के साथ म लड़ाई करे बर पड़ही। ये शर्त म हमला समर्थन करना चाहिए क नही करना चाहिए। ओकर अलावा रोजगार के दूसरा साधन है सीपत म ठेका पद्धति म काम चलथे। हमर एनटीपीसी म ठेका पद्धति म काम चलथे। दूसरा रोजगार के साधन हे, हमर बहुत सारे लईका मन, हमर बहुत सारे कार्यकर्ता मन, हमर बहुत सारे प्रभावित किसान मनके लईका मन ओ मन का साचथे के अगर सरकारी नौकरी नई मिलिस, एनटीपीसी म नौकरी नई मिलित त कोई भी ठेका कर्मचारी के अंडर म मोला नौकरी मिल जाही, तभो ले

अपन परिवार ल ठीक तरीका से चला सकत हव। तभो अपन परिवार ल अच्छे से गुजर बसर कर सकत हव। ये सोचथे के नई सोचे, के जो ठेका कंपनी आही या जो वर्तमान म ठेका कपनी चलत हे। मोर ये मांग हे एनटीपीसी से कहना चाहत है के जो ठेका कंपनी नया प्लांट म आही ता 70 परसेंट जो मेन पावर के जरूरत पड़ही ओ हमर लोकल आदमी मन ल लेना चाहिए। क्या राय है आप मन के बताओ। हमर 70 परसेंट आदमी ल ठेका कंपनी म लेना चाही के नही। भाई बताईसे हम कमाए खाए जाबो कईके। अब एक चीज के कल्पना करेन के यूपी म, महाराष्ट्र म, कश्मीर म कोई भी जगह काम जाए ल रही अउ ओकर उपर वहां के आदमी अत्याचार करही त, वैसे ही ओमन ल अपन जगह म रोजगार नई मिले हे, जैसे हम दूसर देश म जाके नौकरी कर सकत हन। वैसे हमर जगह म बड़े प्लांट आए विश्वविख्यात होए हे। प्लांट के हम समर्थन करेन। प्लांट के गला कब दबाएन जब प्लांट पूरा पूरा होय लागीस त। तो वैसे ही ये आगे जो प्लांट आने वाला है ओला एनटीपीसी से बात करके हमन ल सशर्त समर्थन देना चाहिए, और बोलना चाहिए कि जो भी रोजगार के साधन उपलब्ध होही ओमा जो ठेका कंपनी हे 70 परसेंट रोजगार म हमर प्रभावित लईका मन, हमर जो प्रभावित लईका मन जो बेरोजगार लईका मन लगही, और जो नया पद 800 मेगावॉट बिजली के उत्पादन म लगही, ओमा भी स्थानीय लईका मन लगही ए चीज के मांग करना चाही, दूसरा स्वास्थ्य के स्वास्थ्य के बातचीत आईस हे, त बहुत अच्छा मांग हे। अभी पिछले सरकार म भारतीय जनता पार्टी के सरकार रहीसे त हमन 8 करोड़ के हॉस्पिटल बना के दिए रहेन, 100 बिस्तर के हॉस्पिटल बना के दिए रहन। आज हॉस्पिटल के हालत ल देखथन त रोना आथे। प्रशासन ल जानकारी नई हे के सीपत म 100 बेड के हॉस्पिटल नई बने हे, और उस हॉस्पिटल का एनटीपीसी माध्यम पुर्नउद्धार करके, क्योंकि 8 करोड़ का हॉस्पिटल 8 हजार के लायक नहीं बच गया, एनटीपीसी के सहयोग से 100 बेड का हॉस्पिटल बना हुआ है, उस 100 बेड हॉस्पिटल का जीर्णोधार करके हॉस्पिटल की व्यवस्था अच्छे से किया जा सकती है। सीपत में 100 बेड की हॉस्पिटल होगा तो लोगों को बिलासपुर जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी, लोगों को सिम्स जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। इस हॉस्पिटल को हमको उन्नत करना चाहिए क्योंक बना हुआ है बिल्डिंग। फिर भी दरवाजा तक को तोड़कर के चोरी करके ले गये है, वहां पर कई प्रकार के अनैतिक कार्य को अंजाम दिया जाता है। शराब पीने का अड्डा बन चुका है, सर आपसे निवेदन कर रहा हूं कलेक्टर साहब से बात करके जीर्णोधार करवाइए इस हॉस्पिटल का, शिक्षा की जो बात है, मैं समर्थन करता हूं, लेकिन एक चीज आपको बताना चाहता हूं कि किसी ने कहा था, कि केन्द्रीय विद्यालय सीपत में खुलना चाहिए। सीपत में केन्द्रीय विद्यालय स्वीकृत

हुआ था, लेकिन वो बरतोरी में जाके खुल गया, क्यों खुल गया, क्योंकि हम जमीन उपलब्ध नहीं कराया, हमने जमीन उपलब्ध कराने में अपनी असमर्थता जाहिर कर दी। हमारे यहां के जनप्रतिनिधि है, उन्होने जमीन उपलब्ध कराने में असमर्थता जाहिर व्यक्त कर दी। इसलिए हॉस्पिटल की भी व्यवस्था नहीं हो पाई। बिजली, पानी, सड़क ये सारी व्यवस्थाएं छोटी व्यवस्थाएं है उसके लिए स्टेट की गवर्नमेंट भी कर सकती है। एनटीपीसी से बात कर सकती है, सीएसआर में बहुत पैसा होता है। जितना भी एनटीपीसी का आमदनी होता है, उसका दो परसेंट का वेल्यू सीएसआर में खर्च होता है। उसको हम खर्च नहीं कर पाते है। सीएसआर का जो अध्यक्ष होते है कलेक्टर साहब होते है, कलेक्टर साहब के पास कई प्रकार के प्रस्ताव लेके सीएसआर के माध्यम से बिजली, पानी, सड़क की व्यवस्था को दुरूस्त कर सकते है। आप सब लोगों से मेरा एक बार हाथ जोड़ के निवेदन है कि हम किसी भी देश के विकास के लिए औद्योगिकरण जरूरी है। एनटीपीसी हमारे एक महारत्न कंपनी है, हमारे देश नवरत्न में से शामिल है। हमारा 800 मेगावॉट का बिजली का नया स्टेज 3 आ रहा है, उसका हमको समर्थन करना चाहिए, लेकिन साथ ही साथ अपने हक, अपने रोजगार को अपने हितों को ध्यान में रखना चाहिए, इसके लिए एनटीपीसी से प्रशासन से जहां से भी बातचीत करना पड़ता है, वहां बात करें। अगर बातचीत से हल नहीं निकलेगा तो आंदोलन का रस्ता हमारे लिए हमेशा से खुला है। हमने 112 दिन एनटीपीसी को बंद किया है, आगे भी जब भी जरूरत पड़ेगी हम एनटीपीसी को बताएगे कि हमारे ताकत क्या है, हमारे स्थानीय लोगों के रोजगार के लिए, स्थानीय लोगों के साथ अन्याय करने का हिम्मत अगर कोई करेगा तो हम उसके विरोध में हम हमेशा खड़े है।

84. **श्री दिलीप जांगडे, ग्राम–जांजी** :–भूविस्थापित हूं, तहे दिल से एनटीपीसी का समर्थन करता हूॅ।

85. **श्री द्वारिकाप्रसाद खरे, ग्राम–सीपत** :– एनटीपीसी स्टेज 3 का पर्यावरण स्वीकृति हेतु जन सुनवाई है उनके माध्यम से एनटीपीसी के प्रबंधक से जानना चाहूंगा, कि आज दिनों–दिन सरकार बदलती रहती है, जो अभी वर्तमान सरकार है, जितने भी पब्लिक सेक्टर है, बेचने का कार्य कर ही है, तो क्या एनटीपीसी गारंटी देती है कि जो स्टेज 3 लगेगा तो उसको 50 साल तक बिकने नहीं दिया जायेगा या गवरमेंट रहेगा। ये लिखित होना चाहिए कि आज हम अपना जमीन दे दिए और सरकार बेच दे इसका क्या गारंटी है, और इनके लोगों को क्या फायदा होगा, इसका भी जिक्र होना चाहिए। दूसरी बात रही पर्यावरण स्वीकृति हेतु जो एनटीपीसी से प्रदूषण

फैलता है ओ कर्मचारी के स्वास्थ्य को प्रभावित नहीं करता है, जितने प्रभावित जनता है, आठ गांव के साथ–साथ पूरा जिला के इनकी स्वास्थ्य की गारंटी लीजिए। जितना अपने कर्मचारियों को सुविधा देते है, उतने ही सभी जनताओं को भी सुविधा देना चाहिए और स्वास्थ्य का नियमित जांच होना चाहिए, और उनके स्वास्थ्य का ख्याल रखना चाहिए। तीसरी बात जो किसानों के जमीन लिया जाता, उसके बदले में नौकरी तो दिया जाता है। जिनका जमीन जाता है, उनके परिवार का भला हो जाता है। लेकिन उनसे उनके खेतिहर जमीन में बहुत सारे मजदूर कार्य करने वाले होते है। उनका रोजगार रोजी–रोटी बंद हो जाता है। उनके लिए भी स्थायी ठेका मजदूर है उनके माध्यम से स्थानीय लोगो को प्राथमिकता दिया जाए, और साथ जो प्रभावित गांव है जहां का जमीन लिया जाता है उन गांव का भी विकास होना चाहिए। उदाहरण के लिए आप अपने एनटीपीसी कॉलोनी में खेल परिसर बनाए है, और अभी केम्प बनाए है, कॉलेज का सीपत का सबसे बड़ा गांव है, और यहां का विकास देखिए। यहां कोई खेल का साधन नहीं है, इनका भी विकास कीजिए। गांव में सर्वसुविधायुक्त खेल मैदान का विकास कीजिए, जानवरों के लिए चारागाह का प्रबंध कीजिए। पर्यावरण के लिए वृक्षारोपण लगाईए, गांव में बसने वाले है उनका स्वास्थ्य का सुधार हो, ये बहुत सारी बात है, इन सब पर ध्यान रखते हुए जो भी प्रोजेक्ट विकास करने ला रहे है, उनका स्वागत करते है। विरोध तो नहीं करेगें। जनताओं के भलाई के लिए है, जब जनहित में कार्य नहीं ले रहे है तो उनका विरोध कर रहे है, इन बातों को आप लोग जो भी स्वीकृति दे रहे है या नहीं देगें ये तो आप ही लोगों के उपर है, लेकिन हम मूल बात रखे है, स्वास्थ्य का गारंटी दीजिए। निजीकरण नहीं करेंगे ये भी गारंटी दीजिए। इस हिसाब से मेरा स्वीकृत है, मै समर्थन करता हू।

86. श्री गोपी पटेल, जनपद सदस्य ग्राम–कौडिया :–अभी समस्या है राखड़। जो एनटीपीसी का राखड़ है वो ओव्हर लोड हर रोड पे चल रही है। जिसे ओव्हर के कारण जितना भी रोड है, वो चटनी हो रहा है। अभी तत्काल में रोड बना है, कौड़िया में जाके देखेंगे उसकी गुणवत्ता। पता नहीं कैसा रोड बना है, अभी से उखड़ रहा है। आगे चल के क्या होगी। इसका मुख्य कारण है ओव्हर लोड। जिस गाड़ी की केपेसिटी 30 टन की है, उसमें 35 टन लोड होके जा रहा है, तो रोज नुकसान हो रहा है। तो मैं एनटीपीसी प्रबंधन से कहना चाहना चाहूंगा, कि ओव्हर लोड पे ध्यान दे और तारपोलिन से ढके। ढकने प्रबंध अच्छे से करे। एनटीपीसी बना रहा है, एप्रोज रोड गांव में टच करने वाले, गांव को टच करने वाले रोड है, उसको छोड़ दे रहे है। गांव में सीएसआर के मद से जितना काम होना चाहिए,

एनटीपीसी के माध्यम से उतना हो नहीं रहा है, गांव में इसका कारण मुख्य है, एनटीपीसी का काम है, ठेकेदार के माध्यम से कराया जाता है, जिस कारण से एनटीपीसी का काम गांव में नहीं हो पाता है, जितना भी काम है सरपंचों के माध्यम से गांव में काम कराया जाए, ताकि गांव में ज्यादा विकास सके, एनटीपीसी काम देती है लेकिन सरपंच उस काम को नहीं लेती है, क्योंकि सरपंच लोगों को बेनिफिट नजर नहीं आता। सरपंच लोगों को बेनिफिट हो ऐसा विचार करे, 10 लाख, 5 लाख का काम सरपंचों को दो, ताकि उससे कुछ काम तो हो। क्योंकि ठेकेदार के माध्यम से करवाने से स्वीकृति नहीं देता, इसको विशेष ध्यान दे। शिक्षा, शिक्षा के लिए देखा हूं कि सभी ग्राम पंचायत में एनटीपीसी डेक्स बेंच भेजी है, शिक्षा के लिए भेजी है, ओ जनसुनवाई से थोड़ा पहले भेजती तो अच्छा लगता। ताकि गांव में रोष न हो। ये प्रलोभन देना थोड़ा अच्छा नहीं लगा एनटीपीसी का। दो दिन पहले देने का काम न करें एनटीपीसी। ऐसा मेरा मानना है, गांव के तेज विकास के लिए औद्योगिकरण बहुत जरूरी है, विकास के लिए हम लोग सहमति है। उनको विशेष रूप को ध्यान में रखते हुए पूरा करें, पूरा करने के बाद में नया प्लांट लाए, कोई दिक्कत नहीं है।

87. **श्री मोहन लाल साहू ग्राम–गतौरा** :– सभी जो हम प्रभावित किसान है, उनको नौकरी दिया जाये, और मैं प्लांट में ठेका मजदूर के रूप में काम करता हूं, मैं चाह रहा हूं कि मेरे आठ गांव के भाई है 3100 उनको हर घर में एक आदमी को प्लांट के अंदर काम दिया जाए, हर सभी प्लांट के तीसरा यूनिट के लिए सपोर्ट करना चाहिए।

88. **श्री मुकेश डोंगरे, ग्राम–सीपत** :– एनटीपीसी सीपत में 2015 अउ 2016 में अप्रेटिंस ट्रेनिंग किया था, ये केन्द्र गव्हमेंट योजना है। मगर जितने भी केन्द्र गोवरमेंट जो कंपनी है अप्रेटिस ट्रेनिंग वाले को रोजगार उपलब्ध कराते है, मगर एनटीपीसी इस मुद्दे में ध्यान नहीं देते है। इस विषय में थोड़ा ध्यान दीजिए।

89. **श्री देव कुमार, ग्राम–सीपत** :– इससे हमारी समस्या का त्वरित कार्यवाही होगा, साथ ही हमारी समस्या क्या है इस बात से अधिकारीगण अवगत होगें, इस कड़ी में मैं बताना चाहूंगा कि जैसा कि 23 साल होने जा रहा है एनटीपीसी सीपत स्थापना को उसके बावजूद भी सीपत में जैसे गली, स्कूल और अन्य बहुत सारे संसाधन है, जो कि दिया तले अंधेरा वाली बात है, बहुत सारी रोड है जो कि खराब स्थिति में है, चलेंगे तो लगता है कि पुराने सीपत में चले रहे है। जबकि एनटीपीसी सीपत के

नाम से पूरा वर्ल्ड में फेमस इस गांव का गली, सड़क अभी भी दुर्गति है, इस कड़ी में मैंने आवेदन दिया है, वार्ड क्रमांक 12 बिजली ऑफिस के सामने से अमृत सरोवर का मेड़ होते हुए उस मोहल्ले मे जो जाने वाली सड़क है, उसका आवेदन मैं दिया है, इस पर अधिकारीगण से विनम्र निवेदन है, कि त्वरित कार्यवाही करते हुए उसके सीसी रोड या रोड डीएम रोड जैसा भी हो बनवाने की कृपा करेगें। साथ ही साथ गांव के अन्य मोहल्ले और सड़को की स्थिति जो दयनीय है, उसे भी सुधरवाने में एनटीपीसी महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी, इसी आशा के साथ अपनी बात समाप्त करता हूं। गली स्कूल अन्य दिया तले अंधेरा खराब स्थिति में है, आज भी पुराने में चल रहे है, इस गांव का गली सडक दुर्गती है, वार्ड क्रं. 12 में उस मोहल्ले में आवेदन दिया हैं सीसी रोड, डीम, रोड बनवाने की कृपा करेंगे। एनटीपीसी महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे।

90. **श्री मोहित राम सूर्यवंशी, ग्राम–बिलासपुर** :– मैं ठेका श्रमिक में फेस–2 में काम करता हूॅ, पहले जो एनटीपीसी बना जिसमें आसपास के लोगों की आर्थिक स्थिति में बहुत सुधार हुआ है, इसमें भी रोजगार मिलेगा। इसका स्वागत करता हूॅ।

91. **श्री रत्नेश कुमार कश्यप, ग्राम–सीपत** :– मेरा शैक्षणिक मेरी योग्यता एम.ए. हिन्दी, योग साइंस और पीजीडीसीए। मैं 3 साल से एनटीपीसी से काम कर रहा हूॅ, एनटीपीसी निवेदन है, जिसकी जैसी योग्यता है, वैसी काम दिया जाना चाहिए।

92. **श्री कृष्ण कुमार राठौर ग्राम–रॉक** :– एनटीपीसी जब जन्म होईस वो टाईम म मैं सरपंच रहेव। सौभाग्य कहेव या दुर्भाग्यवश ग्राम पंचायत रॉक के। 2010 तक रहेव। मैं पहले ये बात है कि जनसुनवाई नियमानुसार करत हव। जनसुनवाई के अर्थ ये होहय कि जो 8 गांव प्रभावित है, वहां के ग्राम पंचायत से पारित कराए अभिमत ले। आठ गांव नहीं पूरा गांव के गांव में बैठक हो, और वहां से अभिमत आए। यहां सुनवाई करके मेरे ख्याल से नियम विरूद्ध है। आज पूरे प्रदेश में ये नियम है कहीं भी प्रोजेक्ट या कुछ भी हो रहा है, तो ग्राम पंचायत से पारित कराए जाएं ये राज्य शासन का निर्देश है, इस बात का ध्यान रखा जाए आठ गांव जनमत जो भी अभिमत आए। चाहे विरोध म आए या पक्ष में आए। दूसरा है रोजगार कि हर आदमी के बात यही आईसे की रोजगार के। यदि आप 692 सीट भरपाई कर देतहव ओखर बाद भी खाली व्यक्ति के समस्या के समाधान हो जाही। बिल्कुल नई होवे। अभी 400 कुछ लिए हा। बढ़िया खुशी के बात हे स्वागत है। लेकिन ओ जो 400 लिए हा 23 साल के अंतरात म 2000 से लेके 2023 तक। 400 व्यक्ति के भर्ती

नई हो पाए हे बहुत ही गलत है। आम नागरिक अउ प्रभावित किसान के साथ घोर अन्याय है। इस बात को रिकार्ड म रखे, के बहुत बड़ा घोर अन्याय है। ऐ बतावव का सेन्ट्रल गवर्नमेंट से कोई ऐसा नियम हे भारत सरकार के एक एकड़ के उपर वाले ल नौकरी म लिए जाये, एक एकड़ के नीचे वाले काई पात्रता नहीं है। अगर हो तो आप बता दे हम अपनी बात को वापिस ले लेंगे। अगर राज्य सरकार ने पारित किया हो राज्य सरकार बताएं। जिला प्रशासन यदि यह नियम बनाया है तो जिला प्रशासन यह बतादे कि एक एकड़ से नीचे का कोई पात्रता नहीं है। उनकी जमीन वापिस कर जाये पात्रता नही है तो। खबर करे उस पर ओ। अब रही बात रोजगार का साहब रोजगार का इतना संभावना एनटीपीसी सीपत में। थोड़ी व्यवस्थित करके उसको पटरी में लाया जा सकता है, भाई साहब बताए है लगभग 4000 प्रभावित किसान है। आप बताइए वर्मा साहब। एक संविदा की पोस्ट आप निकालते है 10 पोस्ट तो लाख आवेदन जाता है, छटनी करते है, उनकी एक्जाम लेते है, उनको पात्रतानुसार नौकरी देते है। एनटीपीसी ने कौन सा नियम का पालन किया सिर्फ एक के उपर, एक एकड़ के उपर, आज 23 साल गुजर गे। 23 में एक एकड़ के उपर म सूची खतम नई होई, न नौकरी मिलिस। एक एकड़ के नीचे के कोई बात ही नहीं। मैं आपसे आग्रह करना चाहत हव। आप स्थायी नौकरी तो नई दे पाहू सबला ये बात कटू सत्य है। लेकिन संविदा में 4000 परिवार का 8000 परिवार का 8000 परिवार को रोजगार देने में सक्षम है। यदि आप में थोड़ी बहुत सहानुभूमि होगी, स्थानीय लोग आज देखा साहब एक गांव के नागरिक जाथे बिलासपुर आपके जिला मुख्यालय काम करे बर। कहा के रोजी ज्यादा से ज्यादा 200 सा 250 रूपए। 20 रूपए ऑटो के देथे 20 रूपए वापसी ऑटो के देथे 40 रूपया ओमा काट देव। अगर 250 रूपए हे त 200 रूपए लेके घर वापिस आथे। जेन रेजा जाथे यहां से 40 रूपया ऑटो किरायो देहे के बाद 160 रूपया लेके घर आथे। 8 घंट डयूटी करथे। 1 घंटा जाना, 1 घंटा आना। 10 घंटे की ड्यूटी में ओ मिलथे। जबकि ओही काम प्लांट के अंदर स्थानीय व्यक्ति ल उपलब्ध कराया जाए, तो 400 रूपए जो रेट हे, ओ मिलही, सीएस मिलही, सेप्टी के जेन सुरक्षा हे ओ मिली। अगर ओकर परिवार के आराम से भरण पोषण हो सकत हे। ऐकर लिए ए व्यवस्था बनाव एनटीपीसी के साथ बैठ के। जो काम स्थानीय व्यक्ति के मतलब ये प्रभावित है उसको पहले प्राथमिकता दीजिए, उसके साथ ही उस गांव के व्यक्ति को प्राथमिकता मिलना चाहिए, क्योंकि आज जो पर्यावरण संबंधी सुनवाई करत हा, आप जाके देखा राखड़ डेम के बीच म का स्थिति हे, गांव के। सुखलीपाली रलिया की स्थिति देखा, रॉक के देखा, हरदाडीह के देखा, गतौरा के देखा, देवरी के देखा। तीन–तीन डेम के बीच म गांव बसे है। पर्यावरण के अधिकारी अगर आए होगें

सम्मानित तो बताए मुझे बताए क्या आबादी से ऐसा लगा हुआ कही डेम बनाया जाता है, अगर आपने बना भी लिया है, आपको ये नहीं बोल रहे है कि आप उखाड़ के ले जाए। समस्या का समाधान करें। आज जगह–जगह राखड़ की ट्रांसपोर्ट की बात हो रही है। उसी रोड़ में ट्रांसपोर्ट हो रही है, उसी में हमारे यात्री जा रहे, उसी में किसान जा रहे है, उसी में मजदूर जा रहे है, ए ट्रक के पीछे आप प्रेटिकल करा के देख लीजिए। कोई अगर पारिवारिक कार्यक्रम में परिवार लेके बाईक में जा रहा है। राखड़ ट्रक की गाड़ी निकलेगी तो बिना नहाए धोए, जिस घर में जाता है, वहां खड़ा नहीं हो सकता। पूरा उसका धूल और राखड़ ये असल चीज नहीं है। एनटीपीसी में संसाधन में कमी नहीं है, जिला प्रशासन में संसाधन में कमी नहीं है। ये रही बात व्यवस्था बनाने की, आप ये व्यवस्था को बनाए, एप्रोच रोड अलग हो, आपके ट्रांसपोर्ट के लिए हैवी रोड अलग से बनाए जिसमें ट्रांसपोट हो, जब तक एनटीपीसी रहेगा आपका ट्रासपोर्ट का काम बंद होना न राखड़ का काम बंद होगा। रही बात राखड़ के निपटान का। तो इसको एनटीपीसी आदरणीय एनटीपीसी के अधिकारी और कलेक्टर साहब आप ध्यान रखे इसका निपटान और इसका व्यवस्था बहुत ही जटिल है। आज पूरा देश में इस चीज को पर्यावरण में हो रहा है, जहां –जहां उद्योग है, राखड़ का हर जगह विरोध है और यहां भी है, हम ये नहीं कहते की एनटीपीसी बंद करके चले जाओं, व्यवस्था बनाए आप। कैसे व्यवस्था आपको बनाना है, ताकि हमें भी, हमारे परिवार में उसका विपरीत प्रभाव न पड़े और आपका भी काम चले। इसके अलावा सर ये स्थानीय लोग गलत जो बात है, इसको प्राथमिकता में रखिए। अगर नहीं होगा तो इस समस्या का समाधान होना नहीं है और एक न एक दिन विरोध का सामना करना पड़ेगा। हम आज विरोध भी करेंगे जो भी आपका प्लांट चलता रहेगा। हमारी शुभकामना है कि ये प्लांट 800 मेगावॉट क्या 3200 मेगावॉट और हो जाए। लेकिन हमारे स्थानीय लोगों का रोजगार का व्यवस्था हो, रोड का व्यवस्था हो, स्थानीय विकास ग्राम पंचायत में जो काम होता है, उसका कार्य योजना आप बनवाएं। मेरे को बता दीजिए 8 गांव में ऐसा कौन सा काम एनटीपीसी ने किया है, जो देखने लायक हो या फिर बड़ाई मारता हो उसका। बता दे, करोड़–करोड़ रूपया हर गांव खर्चा हुआ मैं भी सरपंच था एक समय में। उस समय से लेकर के आज भी दे रहे है। लेकिन आप एक कार्य योजना बनाइए, उस गांव के लिए क्या होना चाहिए, क्या नहीं होना चाहिए, और उसके अनुसार बड़े एक काम कराए, लेकिन लोगों को लगे कि एनटीपीसी कराया है। एनटीपीसी भी लोकप्रिय होना चाहिए, स्थानीय लोगों को सुविधाएं भी मिलेगी, आप काम कर देते है, एक आवेदन आपके पास आया सीसी रोड बनवाना है, दो साल बाद उखड़ गया, हमारा समस्या बताया है गिट्टी नगर आता है, ये नहीं होना चाहिए, आप काम ग्राम

पंचायत को दे। क्योंकि सरपंच भी बना रहा राज्य सरकार की एजेंसी ग्राम पंचायत होती है, हमको उससे मतलब नहीं है। हमको काम चाहिए, लेकिन काम के क्वालिटी का ध्यान रखा जाए, दूसरा सर एक मृत कर्मचारी के बात लेके आ रहा हू, आगे भगवान करें ऐसा न हो। वर्मा साहब एक अपने घटना हुआ था साल भर पहले हत्या हो गई थी आपसी रिश्तेदारी के चलते, ओ कर्मचारी शादीशुदा था, जिस दिन एनटीपीसी जमीन क्या उसकी विधवा थी, तीन बहन, तीन या चार बहन है उनकी। उस आदमी पात्रता अनुसार उनके परिवार के लोगों ने सहमति करके नौकरी तो दे दिए। नौकरी भी बढ़िया किया। शादी किया, बाल बच्चे भी उनके हो गये। अब समस्या यहां आ गया है वर्मा साहब। जब उनके डेथ हुई उनके परिवार में तीन, चार उनकी बहनें, उनकी मां भीख मांगने को मजबूर है, हो सकता है, किसी दिन एनटीपीसी के सामने आत्महत्या न करें। आज ओखर विधवा मा जेकर जमीन म ओला नौकदी देया, ओकर चार बहिनी ओखर आश्रित रहीस, सारा जवाबदारी ओ लड़का निभात रहीसे। दो जगह जमीन भी खरीद चुके रहीसे। ओखर पत्नी मकान भी बेच दीस। आज ओकर मां के ईसन कोन सा नियम हे भारत सरकार भी ये नियम बनाए हे राज्य सरकार भी कि वृद्ध माता–पिता के संरक्षण के जवाबदारी ओकर हे। ओकर पत्नी अपने छोटे–छोटे लईका ले लेके लाखों रूपए जो भी बेनिफिट मिलिस ओ लेके जाके अपन मईके म चले गे हे। ओकर मां अउ तीन बहन के भरण पोषण कोन करे। ये सब चीजों के लिए एक कमेटी आप रखिए जिला प्रशासन का एनटीपीसी का। छोटी–छोटी समस्याओं का समाधान करें। दूसरा सबसे बड़ी दुर्भाग्य ये है सर एनटीपीसी में रोजगार के बात आथे। टेक्निकल शिक्षा के बात आथे आईटीआई। आपने जमीन लिए आठ गांव का और साथ में कोरबा ले जाते तक जमीन ली। आप आईटीआई सेंटर कहां बनाया है एनटीपीसी ने महुदा गांव मे। ये दुर्भाग्य है। सारा चीज हम सहे। सीपत में जगह नहीं है सर आईटीआई सेंटर खोलने के लिए। नहीं है तो चलिए हमारे गांव रॉक में, गतौरा में जाईऐ, देवरी में जाईये, हर जगह है। कुछ राजनीतिक कारण होते है। इस चीज को मैं दोहराना नहीं चाहता। अबकी बार सीपत में आईटीआई स्थापित होना चाहिए। स्थानीय लोगों को प्रशिक्षण मिले। उसको नौकरी नहीं मिलेगा तो अपना व्यवसाय की व्यवस्था कर सकेगा ओ आदमी। दूसरा है स्वास्थ्य व्यवस्था। एक व्यवस्था ये होना चाहिए कि प्राथमिक उपचार के लिए प्राभावित परिवार को सीपत एनटीपीसी या गांव में उपलब्ध कराए। प्रभावित परिवार के साथ आठ गांव के स्थानीय लोगों को सुविधा मिलना चाहिए। प्राथमिक उपचार मिले। ये मेरा कहना है। जेन बात ल मैं कहना चाहत रहेव। जमीन काखर गेईस किसान के, रोजगार काखर छिनाईस किसान के। एनटीपीसी बता दे यार। किसानों के लिए एक भी कदम उठाय हो एनटीपीसी ने।

क्या समूह में ट्यूबवेल नहीं करा सकते सर। दस लोगों का बीस लोगों का समूह बनाईए एक ट्यूबवेल करवाईये काटे तार से घेरवाईये किसान को रोजगार खुद मिल जायेगा वहां। आपने एक भी नहीं, उनकी जमीन छीनी, उनका हक छीना, उनका सारा अधिकार आपने छीना। लेकिन उनको देने के लिए आपके पास कुछ नहीं है। ये कार्य योजना बनाने लिए न, जिला प्रशासन के पास टाईम है, न पर्यावरण, न एनटीपीसी। ये चीजों को ध्यान रखे। जिसका जमीन आप लिये हो यार, जिसके जमीन पूरा खेती खार ले लिए। शासकीय जमीन आप ले लिए, निजी जमीन आप ले लिए। आप किसानों के लिए एक रूपए का काम किया। खेती के काम आगे को बढ़ाने के लिए स्टेट गवर्नमेंट काम कर रही है। एनटीपीसी बोली क्यों बोली नहीं लगाता। एक गांव में बीस ट्यबवेल कराए। एक साल का टारगेट दे। पिछले साल दूसरे गांव बीस में ट्यूबेल कराएं। काम करने वाले बोलने वाले न नेता है न जनप्रतिनिधि है। आप बताओ सर, जेन किसान का लूटा है तो किसान को आगे बढ़ाओ। और शिक्षा और स्वास्थ्य का भी व्यवस्था कराईये। बढ़िया शिक्षा मिले। लेकिन एनटीपीसी के तरफ से अच्छी स्वास्थ्य शिक्षा हो जो आठ गांव के लोगों को मिले। दूसरा आपने रेलवे में प्रभावित लोगों के लिए एनटीपीसी ने काम दिया। अभी जो ताल पतरी के बात कहत रहीस। वहां तो आप दे दिए। बाकी लोगों का क्या है भाई। रेलवे में जिनता एक डिसमिल जमीन गया है उनको आप समूह बनाके कुछ मिला है, राखड़ के जो समस्या है सर राखड़ के समस्या के उपर एनटीपीसी से मैं आग्रह करूंगा। विशेष फोकस रखे, आवागमन के रास्ता को क्लीयर कराए, ट्रांसपोर्टिंग के लिए अलग से रोड बनवाए और उसको कैसे रोका जा सकता है, ये पूरा देश के समस्या है, जहां–जहां उद्योग लगे हे, बिजली कारखाना लगे हे, हर जगह ये बात आत हे, टी.वी. न्यूज के माध्यम से हमन ल जानकारी मिलथे, हम चाहत हन हमर स्थानीय व्यवस्था आदरणीय वर्मा साहब आप इनको एक एजेंडा शामिल करवाईये, आप स्वयं एक बार जाके निरीक्षण करे, लोगों को कूड़ा–कचरा नहीं समझना चाहिए। हम भी एक इंसान है। जाके सुखलीपाली में सर्वे करके देखे दो डेम के बीच में एक गांव है। पर्यावरण डिपार्टमेंट वाले बता दे मुझे। क्या भरी आबादी से कितनी दूरी में डेम बनना चाहिए। कितने दूरी में रहना चाहिए। आपके पास मेरे ख्याल शायद जवाब नहीं होगा सर। मैं आप लोगों से आग्रह करूंगा, आप लोगों से भी यह कार्यक्रम सम्पन्न होने की स्थिति में है, आप कल आईये। स्वागत है आपका दिखाते है हम कैसी जिंदगी जी रहे है, समर्थन का मतलब क्या होता है, बिना बिजली के कैसे जीवन जीयेंगे, स्थानीय विकास पहली प्राथमिकता में होना चाहिए, राष्ट्रीय विकास तो ऑटोमेटिक होगा जी, जब हम खुश रहेंगे, हम खुद साथ देगें तो आगे क्यों नहीं होगा, हमारा विरोध समर्थन आपसी

विस्फोट डालने की नीति है, ये नहीं होना चाहिए। नियमानुसार आप आए है वेलकम है स्वागत है कोई नहीं, ये कार्य–योजना को आप शामिल कराए, एक कमेटी का गठन कराएं, जिस परिवार से यदि स्थानीय नौकरी एनटीपीसी में मिल गया है, तो बाकी लोगों का भी ध्यान दिया जाए, हर जगह की बात है, 4000 लोगों को दरकिनार करके और 400 लोगों को नौकरी दिया है, बाकी लोगों का क्या होगा, बाकी लोगों का क्या होगा ये बता दे एनटीपीसी, और रही बात समर्थन का। समर्थन करेंगे, तो प्लांट बनेगा, नई करेंगे तो प्लांट बनेगा, हम ये चाहते है की छोटी–मोटी जो हम लोगों की समस्या है, बात है, इनको गंभीरता से विचार करें। आप जो भी करते चाहे एक रूपये का काम करते है, उसकी कीमत हो, उसकी उपयोगिता को आप देखिये, गांव में काम हो रहा है, तो उपयोग है कि नहीं। एक बंधवातालाब है वर्मा साहब आपको याद दिला दू मैं, शुरू से जी.एम. थे एनटीपीसी के जितने भी जी.एम. जितने भी मुखिया बनके आए, हर लोगों ने अपना सहमति दी। हमारे प्लांट को खड़ा होने दीजिए, रॉक का बंधवातालाब 100 एकड़ का है, उसे मिनी पिकनकि स्पॉट के रूप में डेव्हलप कराऐगे। आज एनटीपीसी का तीसरा चालू होने वाला है, उसको एक चरण क्या उसको बंधवातालाब याद नहीं है। वर्मा साहब आपके जिला मुख्यालय से महज 15 कि.मी. एनटीपीसी टाउनशिप प्लांट से महज 5 से 6 कि.मी. दूरी पर 100 एकड़ का प्राकृतिक तालाब है, कुछ बना बनाया नहीं है पहले का प्राकतिक रूप का तालाब होता है। आज उसे नौका विहार के रूप में डेव्हलपमेंट कर सकते है। चारों ओर डामरीकरण कराके एक मिनी पिकनिक स्पॉट के रूप में बना सकते हैं। बिलासपुर के लोग आऐंग, एनटीपीसी के लोग जाएगें। अरे खर्चा करके एनटीपीसी के लोग पिकनिक मनाने जाते है दूसरे जगह। हमारे लोग वो भी जाते है, हमारे घर के पास सारा संसाधन है, हम थोड़ा सा उपयोग कर ले उसका, कुछ समय जब बात आई तो दो तीन ऑप्शन रखे थे, या तो नौकरी कर लो, दुकान ले लो एनटीपीसी में, और नही ंतो ठेकेदारी का रजिट्रशन करा लो, हमारे यहां पात्रता कोई था ही नहीं, एक एकड़ जमीन गया नहीं। एक एकड़ से कम था, पात्रता तो है, मेरा भी लड़का आईटीआई कर लिया था, लेकिन इनके नियम के सामने कहां चले वो, उसी चीज को पूछा हूं वर्मा साहब को। किसानों की, जो है सर, उसको फोकस कराएं। कोई बड़ी चीज नहीं हमारा जो डिमांड है, जितने भी लग बैठे अगर किसान की बात आता जिनका आप जमीन लिया है, खेती को आधुनिक तरीके से आठ गांव में पेश कराके देखे, दस हजार लोगों को रोजगार मिलेगा। एनटीपीसी के अधिकारी सुनले आज 3200 मेगावॉट लाईये। वेलकम है छत्तीसगढ़ में। छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया। आप लाईये लेकिन राष्ट्रीय विकास के साथ स्थानीय विकास को दरकिनार करके नहीं राष्ट्र को बढ़ाया

जा सकता है, ये मेरा अंतिम शब्द है सर। निश्चित ही ध्यान देंगे, और हमारा खुला समर्थन है। लेकिन हमारा स्थानीय साथी को शामिल करके कमेटी बनाईये, और ग्रामसभा का अभिमत लीजिए आठ गांव का। उसके पहले कराऐगें तो हमें विरोध करना पड़ेगा। अभिमत आप लिजिए न भाई। कितने आए होगें रॉक का 50 लोग। सीपत से कितने लोग आए होगें 100 लोग। गतौरा से कितने आए होगें। 15000 का पापुलेशन है। 15000 पब्लिक के बीच में बात रखिए। उनके दुख–दर्द को आप सुनिए, विरोध होगा, लेकिन उसका समाधान भी तो है, उसका आगे भी रास्ता निकलता है अगर निकलना चाहे तो, मैं भी ठेकेदार हूं जिनके सुपरवाईजर है जो दलाली कर रहे है, लड़के बताए है अपनी समस्या। लाख रूपया, पचास हजार लेके रोजगार देते हे, ये अच्छा चीज नहीं है। मेहनत करने वाले का रिश्वत अगर लेता है ठेकादार रहे या उसा सुपरवाईजर रहे। उसे प्लाट से बाहर करो। हमारी शुभकामना है एनटीपीसी को। 800 मेगावॉट जल्दी से आए और हमारी सारी मुद्दो को सुने। स्थानीय मुद्दा स्थानीय लोगों के बीच में होगा। आप कमेटी का गठन करें। जिला प्रशासन रहे, पर्यावरण विभाग रहे, हम ये चाहते है सही व्यक्ति हो, निष्पक्ष व्यक्ति हो।

उपरोक्त वक्तव्यों के बाद अतिरिक्त कलेक्टर, कार्यालय कलेक्टर, जिला–बिलासपुर तथा क्षेत्रीय अधिकारी द्वारा उपस्थित जन समुदाय से अपने विचार व्यक्त करने का अनुरोध किया गया। किंतु जब कोई भी व्यक्ति अपने विचार व्यक्त करने हेतु उपस्थित नहीं हुआ तब लगभग 4:40 बजे अतिरिक्त कलेक्टर, कार्यालय कलेक्टर, जिला–बिलासपुर द्वारा लोकसुनवाई सम्पन्न होने की घोषणा की गई।

लोकसुनवाई स्थल पर लिखित में 93 आवेदन पत्र सुझाव/विचार/टीका–टिप्पणी प्राप्त हुई। स्थल पर उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति को आवेदक से परियोजना पर सूचना/स्पष्टीकरण प्राप्त करने का अवसर दिया गया। लोक सुनवाई के दौरान 92 व्यक्तियों के द्वारा मौखिक सुझाव/विचार/टीका–टिप्पणी एवं आपत्तियां अभिव्यक्त की गई, जिसे अभिलिखित किया गया। लोक सुनवाई में लगभग 300 व्यक्ति उपस्थित थे। उपस्थिति पत्रक पर कुल 209 व्यक्तियों द्वारा हस्ताक्षर किया गया। आयोजित लोक सुनवाई की वीडियोग्राफी एवं फोटोग्राफी कराई गई।

क्षेत्रीय अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय,
छ.ग. पर्यावरण संरक्षण मंडल,
बिलासपुर (छ.ग.)

अतिरिक्त कलेक्टर,
कार्यालय कलेक्टर,
जिला–बिलासपुर (छ.ग.)